सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 138, नई दिल्ली, रविवार 27 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आदत किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती, अति होने पर हमेशा कष्टदायक होती है।

03 भाजपा "सीएम कूड़ा योजना" के तहत बना रही, नया कूड़े का पहाड़ : नारंग

06 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत शुरू की गई नई...

08 झारखंड लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष समेत दो को दो वर्ष की सजा

सुप्रीम कोर्ट 28 जुलाई 2025 को याचिका पर सुनवाई कर सुनाएगा अपना फैसला, क्या बीएस-6 अनुपालक ट्रकों पर दिल्ली में ईसीसी शुल्क लगना चाहिए या नहीं ?

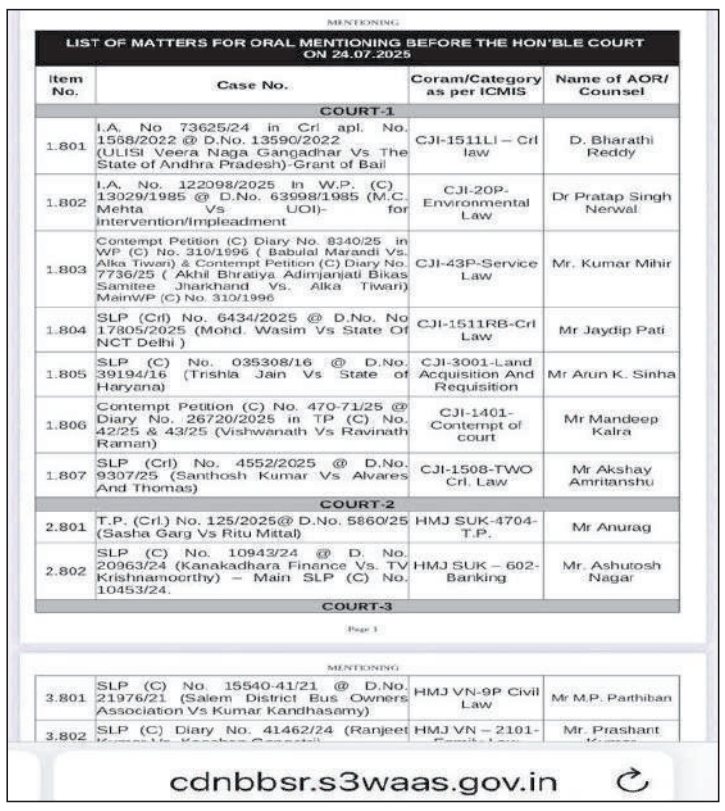
MENTIONING

LIST OF MATTERS FOR ORAL MENTIONING BEFORE THE HON'BLE COURT ON 24.07.2025

Item No.	Case No.	Coram/Category as per ICMIS	Name of AOR/ Counsel
	COURT-1		
1.801	I.A. No 73625/24 in Crl apl. No. 1568/2022 @ D.No. 13590/2022 (ULISI Veera Naga Gangadhar Vs The State of Andhra Pradesh)-Grant of Bail	CJI-1511LI – Crl law	D. Bharathi Reddy
1.802	I.A. No. 122098/2025 in W.P. (C) 13029/1985 @ D.No. 63998/1985 (M.C. Mehta Vs UOI)- for intervention/impleadment	CJI-20P-Environmental Law	Dr Pratap Singh Nerwal
1.803	Contempt Petition (C) Diary No. 8340/25 in WP (C) No. 310/1996 (Babulal Marandi Vs. Alka Tiwari) & Contempt Petition (C) Diary No. 7736/25 (Akhil Bhratiya Adimjanjati Bikas Samitee Jharkhand Vs. Alka Tiwari) MainWP (C) No. 310/1996	CJI-43P-Service Law	Mr. Kumar Mihir
1.804	SLP (Crl) No. 6434/2025 @ D.No. No 17805/2025 (Mohd. Wasim Vs State Of NCT Delhi)	CJI-1511RB-Crl Law	Mr Jaydip Pati
1.805	SLP (C) No. 035308/16 @ D.No. 39194/16 (Trishla Jain Vs State of Haryana)	CJI-3001-Land Acquisition And Requisition	Mr Arun K. Sinha
1.806	Contempt Petition (C) No. 470-71/25 @ Diary No. 26720/2025 in TP (C) No. 42/25 & 43/25 (Vishwanath Vs Ravinath Raman)	CJI-1401-Contempt of court	Mr Mandeep Kalra
1.807	SLP (Crl) No. 4552/2025 @ D.No. 9307/25 (Santhosh Kumar Vs Alvares And Thomas)	CJI-1508-TWO Crl. Law	Mr Akshay Amritanshu
	COURT-2		
2.801	T.P. (Crl.) No. 125/2025@ D.No. 5860/25 (Sasha Garg Vs Ritu Mittal)	HMJ SUK-4704-T.P.	Mr Anurag
2.802	SLP (C) No. 10943/24 @ D. No. 20963/24 (Kanakadhara Finance Vs. TV Krishnamoorthy) – Main SLP (C) No. 10453/24.	HMJ SUK – 602-Banking	Mr. Ashutosh Nagar
	COURT-3		

Page 1

MENTIONING

3.801	SLP (C) No. 15540-41/21 @ D.No. 21976/21 (Salem District Bus Owners Association Vs Kumar Kandhasamy)	HMJ VN-9P Civil Law	Mr M.P. Parthiban
3.802	SLP (C) Diary No. 41462/24 (Ranjeet	HMJ VN – 2101-	Mr. Prashant

cdnbbsr.s3waas.gov.in

पिंकी कुंडू, सह- संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। दिल्ली में आने वाले सभी BS-6 डीजल के मालवाहक वाहनों से ग्रीन टैक्स (ECC) खत्म कराने की दिल्ली एनसीआर ट्रांसपोर्ट एकता मंच की अपील को माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा 24 जुलाई 2025 को मंजूर कर लिया गया और इस पर सुनवाई सोमवार 28 जुलाई 2025 को सुनिश्चित कर दी।

बीएस-6 अनुपालक ट्रकों पर ईसीसी शुल्क लगाया जाना चाहिए या नहीं इस पर सुप्रीम कोर्ट याचिका पर सुनवाई कर देगा अपना निर्देश/ फैसला

न्यायालय ने ट्रांसपोर्टरों के संगठन दिल्ली एनसीआर ट्रांसपोर्ट एकता मंच की उस याचिका पर सोमवार को सुनवाई करने पर सहमति व्यक्त की, जिसमें बीएस-6 प्रदूषण मानक वाले भारी वाहनों पर पर्यावरण क्षतिपूर्ति शुल्क (ईसीसी) लगाने को चुनौती दी गई है। यह शुल्क पहले बीएस-3 और बीएस-4 मानक वाले ट्रकों के दिल्ली में प्रवेश पर लागू था।

अधिवक्ता प्रताप एस नर्वाल ने प्रदूषण पर अंकुश लगाने से संबंधित एमसी मेहता मामले में एसोसिएशन द्वारा दायर आवेदन पर तत्काल सुनवाई की मांग की, जिसमें सुप्रीम कोर्ट 1985 से लगातार आदेश का प्रयोग कर रहा है। सीजेआई बीआर गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने सोमवार को आवेदन पर

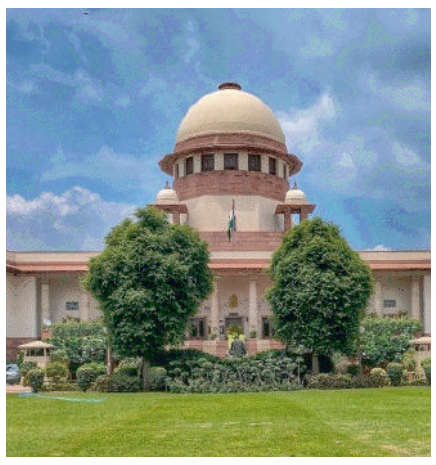

सुनवाई करने पर सहमति व्यक्त की।

ट्रक एसोसिएशन ने कहा कि 9 अक्टूबर, 2015 के सुप्रीम कोर्ट के आदेश के आधार पर 1 नवंबर, 2015 से बीएस-III और बीएस-IV अनुपालक भारी वाहनों पर ईसीसी लगाया गया था पर बीएस-VI अनुपालक ट्रकों से भी ईसीसी वसूला जा रहा है जो असवैधानिक और गलत है और उन्होंने इसके औचित्य पर सवाल उठाया।

2015 के आदेश पारित करते समय, प्रदूषण पर अंकुश लगाने का इरादा था क्योंकि केवल बीएस-III और IV मानकों वाले ट्रक ही बनाए जाते थे। "परिवहन क्षेत्र में तकनीकी प्रगति के साथ, भारी वाहन अब बीएस-VI मानकों के अनुरूप हैं। इस आदेश के लागू होने के समय भी, डीजल से चलने वाली बसों पर ECC नहीं लगाया गया था।"

बीएस-VI मानकों वाले ट्रकों को छूट देते हुए, यानी बाद वाली श्रेणी के भारी वाहन प्रदूषणकारी नहीं थे, फिर भी ईसीसी अभी भी तर्कहीन रूप से वसूला जा रहा है। इसमें कहा गया है, "खाद्य और पेट्रोलियम पदार्थ ले जाने वाले वाहनों, एम्बुलेंस या सरकारी वाहनों को छोड़कर, सभी व्यावसायिक वाहनों से ईसीसी वसूला जाता है।"

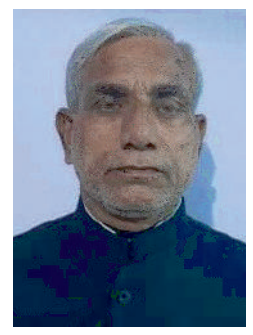

श्याम सुन्दर,महासचिव दिल्ली एनसीआर ट्रांसपोर्ट एकता

ट्रांसपोर्ट आपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन

की महासचिव पिंकी कुंडू ने भी एन. सी आर ट्रांसपोर्ट एकता मंच द्वारा सुप्रीम कोर्ट में लगाई गई याचिका की सुनवाई पर पुरजोर बधाई दी है और इसे मालवाहक वाहनों के मालिकों की एकता की जीत बताया है। महासचिव का कहना है की देश के सभी ड्राइवर साथियों के हक की लड़ाई में ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन सदा सबके साथ है।

परिवहन उद्योग की आवाज - राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (उफ्तत्सा)

सभी छोटी-मोटी अधिकांशतः को एकजुट करने के लक्षय के समीप "राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा उफ्तत्सा " के सँग समस्त संस्थाओं को इसी तरह मिलजुल कर कार्य करना चाहिए यह एक उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है1 " राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा उफ्तत्सा रने सदैव इस बात की पुरजोर आपत्ति दर्ज की है कि केंद्र सरकार व राज्य सरकार की कई ऐसी दमनकारी नीतियां हैं, जो अंग्रेज शासन से भी अधिक क्रूरता का आभास कराती है1 तथाकथित बड़ी संस्थाओं के दिन अब गुजर गए देश की सभी छोटी-बड़ी / पंजीकृत गैर पंजीकृत संस्थाएं जाग चुकी हैं1 इन सभी संस्थाओं को एकजुट करने में "राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा - उफ्तत्सा " अपने आप में सफलता के हर नए आयाम को अंजाम तक पहुंचाने में बहुत हद तक सफल हुआ है "संग्राम जारी है जीत हमारी है" "दम्भ तोड़ेंगे तुम्हारी जिद ये हमारी है"1 देश में परिवहन व्यवसाय के प्रत्येक धड़े को दुरावस्था से हटाकर सुलभ, सक्षम, प्रगतिशील एंव खुशहाल बनाना ही "राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा" का एकमात्र लक्ष्य है -"डॉ राजकुमार यादव "

राष्ट्रीय ट्रक ऑपरेटर वेलफेयर एसोसिएशन(रजिस्टर्ड)

ने अपने एडवोकेट श्री सुनील सिंह के द्वारा PIL दाखिल किया था BS VI गाड़ियों से ग्रीन टैक्स ना लिया जाय एवम 10 साल से कम पुरानी गाड़ियों को दिल्ली के अंदर आने से ना रोका जाय एडवोकेट सुनील सिंह ने बताया और भी PIL पहले से डाला हुआ था सभी एक साथ मर्ज कर दिया गया जिसकी सुनवाई सोमवार को किया जाएगा मोहन सिंह राष्ट्रीय अध्यक्ष मन्नू अरोड़ा राष्ट्रीय महासचिव समस्त पदाधिकारी राष्ट्रीय ट्रक ऑपरेटर वेलफेयर एसोसिएशन RTOWA

मेट्रो का सपना टूटा: राज्य सरकार ने भुवनेश्वर मेट्रो रेल परियोजना का ठेका रद्द किया!

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: राज्य सरकार ने राजधानी भुवनेश्वर मेट्रो रेल परियोजना का पुराना ठेका रद्द कर दिया है। पिछली सरकार ने यह ठेका सीईआईजीआईएल इंडिया लिमिटेड और दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड को दिया था। लेकिन राज्य सरकार के अनुरोध के बावजूद, इन दोनों कंपनियों ने नियमों के अनुसार उचित मुआवज़ा नहीं दिया है ।बताया जा रहा है कि दो कंपनियों पर मेट्रो रेल परियोजना को बर्बाद करने का आरोप लगने के बाद ओडिशा सरकार ने यह कठोर कदम उठाया है।

गौरतलब है कि उपमुख्यमंत्री कंकर वर्धन सिंहदेव की अध्यक्षता में गठित उप-समिति की पहली बैठक लोक सेवा भवन में हुई। प्राप्त जानकारी के अनुसार, इस बैठक में मेट्रो रेल परियोजना को लेकर कोई ठोस निर्णय नहीं लिया जा सका। यहाँ तक कि मेट्रो रेल एलिवेटर कॉरिडोर में होगी या भूमिगत, या किन क्षेत्रों तक मेट्रो चलेगी, इस पर भी चर्चा नहीं हुई।

इस बैठक में मेट्रो रेल परियोजना पर चर्चा से ज़्यादा भुवनेश्वर की भीड़भाड़ कम करने, सुचारू यातायात प्रबंधन के लिए एकीकृत परिवहन योजना, रेल-सड़क इंटरचेंज, लोक निर्माण विभाग द्वारा भुवनेश्वर में बनने वाली और निर्माणाधीन विभिन्न सड़क और फ्लाईओवर परियोजनाओं पर चर्चा हुई। अगले 20 वर्षों को ध्यान में रखते हुए परिवहन अवसंरचना का निर्माण कैसे किया जाए, इस पर भी चर्चा हुई।

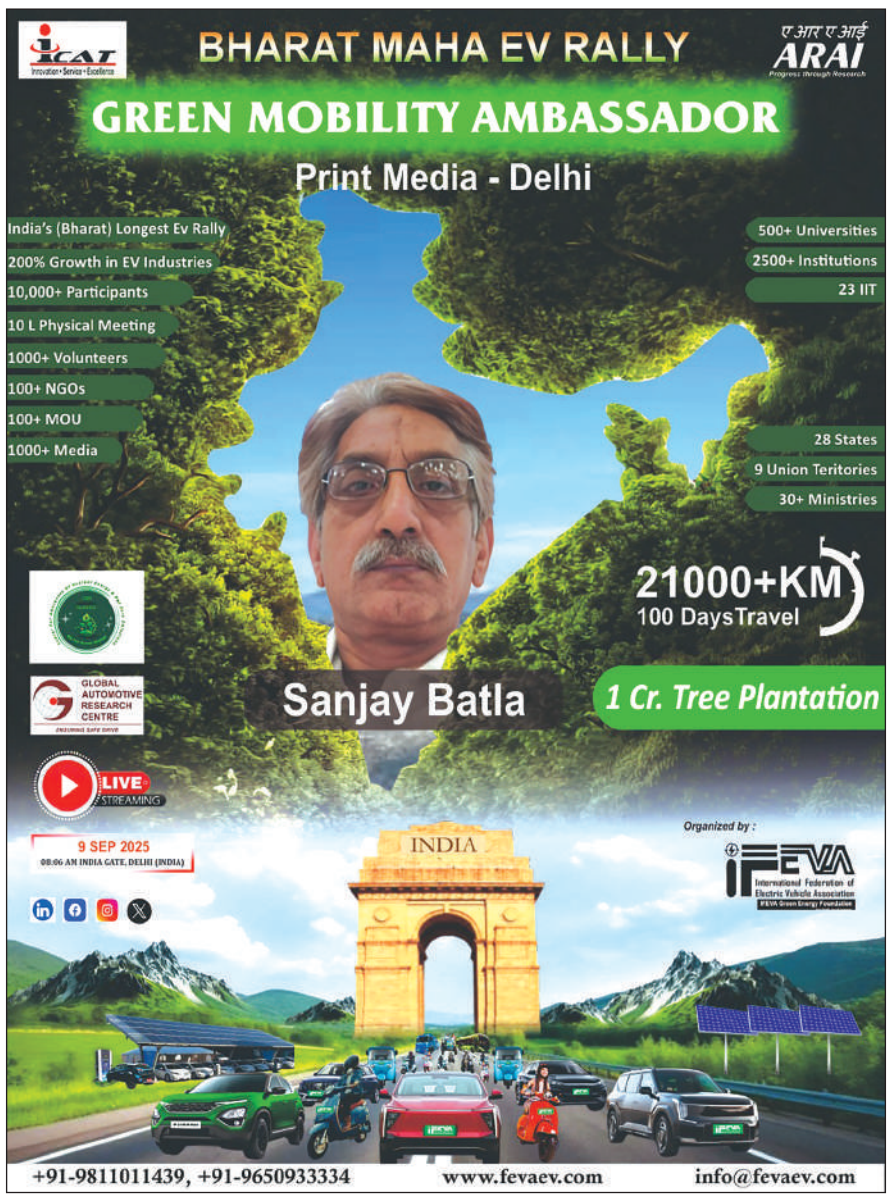

दिल्ली में हर रोज 12 गाड़ियां हो रहीं गायब, वाहन चोरी में 52 फीसदी उछाल; पुलिस ने लोगों से की अपील

दिल्ली में इस साल वाहन चोरी के मामलों में 52% से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है। 24 जुलाई तक 2529 कारें चोरी हुईं जबकि पिछले साल यह आंकड़ा 1662 था। हर दिन औसतन 12 गाड़ियां चोरी हो रही हैं। चोरी होने वाले वाहनों में कारें जीपें ट्रक एंबुलेंस और बसें शामिल हैं। पुलिस निगरानी बढ़ा रही है और लोगों से सतर्क रहने की अपील कर रही है।

नई दिल्ली। दिल्ली में इस वर्ष वाहन चोरी के मामलों में बढ़ोतरी दर्ज हुई है। इस वर्ष 24 जुलाई के बीच 2,529 कार चोरी के मामले दर्ज किए गए हैं, जबकि पिछले साल इसी अवधि में 1,662 मामले सामने आए थे।

यह बढ़ोतरी 52 प्रतिशत से भी अधिक है, जिससे पता चलता है कि राजधानी में हर दिर औसत 12 गाड़ियां चोरी हुई हैं। यह आंकड़े जोनल इंटीग्रेटेड पुलिस नेटवर्क (जिपनेट) के माध्यम से सामने आए हैं, जो नेशनल क्राइम रिकार्ड्स ब्यूरो (एनसीआरबी) द्वारा विकसित एक केंद्रीकृत डेटाबेस है।

जिपनेट के आंकड़ों के अनुसार, चोरी होने वाले वाहनों में केवल कारें ही नहीं थीं, बल्कि 105 जीप, 58 छोटे ट्रक, लारी और मल्टी-पर्पज वाहन भी शामिल थे। इतना ही नहीं, दो एंबुलेंस भी एक साउथ दिल्ली के कोटला मुबारकपुर से और दूसरी जनकपुरी मेट्रो स्टेशन से चोरी हुई थीं।

इसके अलावा, तिमारपुर और सीमापुरी इलाकों से दो बसें भी चोरी हुईं और शहर के अलग-अलग हिस्सों से सात साइकिलें गायब होने की रिपोर्ट दर्ज की गई।

वाहन चोरी की ये घटनाएं न सिर्फ रिहायशी इलाकों में हुईं, बल्कि पेट्रोल पंप, स्कूल, बाजार और पार्क जैसे सार्वजनिक स्थलों पर भी दर्ज की गईं।

रोहिणी के सेक्टर 3, 7 और 24, पश्चिम विहार और अशोक विहार (उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली), प्रीत विहार, मालवीय नगर और जनकपुरी जैसे इलाकों से भी कई मामले सामने आए हैं।

दिल्ली के विभिन्न पुलिस थानों और इंपाउंड याड्र्स में इस समय 40,270 से अधिक वाहन जब्त या बिना दावे के पड़े हुए हैं, जिनकी कानूनी प्रक्रिया अभी पूरी नहीं हुई है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि संवेदनशील इलाकों में निगरानी बढ़ाई जा रही है और रिकवरी रेट सुधारने के प्रयास चल रहे हैं।

दिल्ली के विभिन्न पुलिस थानों और इंपाउंड याड्र्स में इस समय 40,270 से अधिक वाहन जब्त या बिना दावे के पड़े हुए हैं, जिनकी कानूनी प्रक्रिया अभी पूरी नहीं हुई है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि संवेदनशील इलाकों में निगरानी बढ़ाई जा रही है और रिकवरी रेट सुधारने के प्रयास चल रहे हैं।

दिल्ली में हर रोज 12 गाड़ियां हो रहीं गायब, वाहन चोरी में 52 फीसदी उछाल; पुलिस ने लोगों से की अपील

दिल्ली में इस साल वाहन चोरी के मामलों में 52% से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है। 24 जुलाई तक 2529 कारें चोरी हुईं जबकि पिछले साल यह आंकड़ा 1662 था। हर दिन औसतन 12 गाड़ियां चोरी हो रही हैं। चोरी होने वाले वाहनों में कारें जीपें ट्रक एंबुलेंस और बसें शामिल हैं। पुलिस निगरानी बढ़ा रही है और लोगों से सतर्क रहने की अपील कर रही है।

नई दिल्ली। दिल्ली में इस वर्ष वाहन चोरी के मामलों में बढ़ोतरी दर्ज हुई है। इस वर्ष 24 जुलाई के बीच 2,529 कार चोरी के मामले दर्ज किए गए हैं, जबकि पिछले साल इसी अवधि में 1,662 मामले सामने आए थे।

यह बढ़ोतरी 52 प्रतिशत से भी अधिक है, जिससे पता चलता है कि राजधानी में हर दिर औसत 12 गाड़ियां चोरी हुई हैं। यह आंकड़े जोनल इंटीग्रेटेड पुलिस नेटवर्क (जिपनेट) के माध्यम से सामने आए हैं, जो नेशनल क्राइम रिकार्ड्स ब्यूरो (एनसीआरबी) द्वारा विकसित एक केंद्रीकृत डेटाबेस है।

जिपनेट के आंकड़ों के अनुसार, चोरी होने वाले वाहनों में केवल कारें ही नहीं थीं, बल्कि 105 जीप, 58 छोटे ट्रक, लारी और मल्टी-पर्पज वाहन भी शामिल थे। इतना ही नहीं, दो एंबुलेंस भी एक साउथ दिल्ली के कोटला मुबारकपुर से और दूसरी जनकपुरी मेट्रो स्टेशन से चोरी हुई थीं।

इसके अलावा, तिमारपुर और सीमापुरी इलाकों से दो बसें भी चोरी हुईं और शहर के अलग-अलग हिस्सों से सात साइकिलें गायब होने की रिपोर्ट दर्ज की गई।

वाहन चोरी की ये घटनाएं न सिर्फ रिहायशी इलाकों में हुईं, बल्कि पेट्रोल पंप, स्कूल, बाजार और पार्क जैसे सार्वजनिक स्थलों पर भी दर्ज की गईं।

रोहिणी के सेक्टर 3, 7 और 24, पश्चिम विहार और अशोक विहार (उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली), प्रीत विहार, मालवीय नगर और जनकपुरी जैसे इलाकों से भी कई मामले सामने आए हैं।

दिल्ली के विभिन्न पुलिस थानों और इंपाउंड याड्र्स में इस समय 40,270 से अधिक वाहन जब्त या बिना दावे के पड़े हुए हैं, जिनकी कानूनी प्रक्रिया अभी पूरी नहीं हुई है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि संवेदनशील इलाकों में निगरानी बढ़ाई जा रही है और रिकवरी रेट सुधारने के प्रयास चल रहे हैं।

उन्होंने कहा कि चोर अक्सर वाहन मालिकों की पार्किंग आदतों का अध्ययन करते हैं। कई बार लोग गाड़ियां मेट्रो पिलर या एटीएम के पास लंबे समय तक खड़ी छोड़ देते हैं। एक घटना में, एक बैंक कर्मचारी ने सुबह नौ बजे गाड़ी पार्क की और शाम छह बजे लौटा, लेकिन तब तक वाहन गायब हो चुका था।

उन्होंने बताया कि चोरों का ध्यान एसयूवी जैसे वाहनों पर ज्यादा रहता है क्योंकि उनकी रीसेल वैल्यू अधिक होती है। पुलिस अब ऐसे पैटर्न्स की निगरानी कर रही है और जिपनेट की मदद से चोरी गए वाहनों का पता लगाने में जुटी है।

!!महादेव की अष्टमूर्तियों के रहस्य!!

☞ शिवजी की अष्टमूर्तियों के नाम क्या हैं ?
☞ मनुष्य के शरीर में अष्टमूर्तियाँ कहाँ कहाँ हैं?
☞ अष्ट मूर्तियों के तीर्थ कहाँ - कहाँ हैं ?

(1) अष्टमूर्तियों के नाम :

भगवान शिव के विश्वात्मक रूप ने ही चराचर जगत को धारण किया है। यही अष्टमूर्तियाँ क्रमशः पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, जीवात्मा सूर्य और चन्द्रमा को अधिष्ठित किये हुए हैं। किसी एक मूर्ति की पूजा- अर्चना से सभी मूर्तियों की पूजा का फल मिल जाता है।

1. शर्व

〰क्षितिमूर्ति (शर्व) ☞ शिव की शर्वी मूर्ति का अर्थ है कि पूवरे जगत को धारण करने वाली पृथ्वीमयी प्रतिमा के स्वामी शर्व है। शर्व का अर्थ भक्तों के समस्त कष्टों को हरने वाला।

2. भव

〰जलमूर्ति (भव) ☞ शिव की जल से युक्त भावी मूर्ति पूरे जगत को प्राणशक्ति और जीवन देने वाली कही गई है। जल ही जीवन है। भव का अर्थ संपूर्ण संसार के रूप में ही प्रकट होने वाला देवता।

3. रूद्र

〰अग्निमूर्ति (रूद्र) ☞ संपूर्ण जगत के अंदर-बाहर फैली समस्त ऊर्जा व गतिविधियों में स्थित इस मूर्ति को अत्यंत ओजस्वी मूर्ति कहा गया है जिसके स्वामी रूद्र है। यह रौद्री नाम से भी जानी जाती है। रुद्र का अर्थ भयानक भी होता है जिसके जरिये शिव तामसी व दुष्ट प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखते हैं।

4. उग्र

〰वायुमूर्ति (उग्र) ☞ वायु संपूर्ण संसार की गति और आयु है। वायु के बगैर जीवन संभव नहीं। वायुरूप में शिव जगत को गति देते हैं और पालन-पोषण भी करते हैं। इस मूर्ति के स्वामी उग्र है, इसलिए इसे औग्री कहा जाता है। शिव के तांडव नृत्य में यह उग्र शक्ति स्वरूप उजागर होता है।

5. भीम

〰आकाशमूर्ति (भीम) ☞ तामसी गुणों का नाश कर जगत को राहत देने वाली शिव की आकाशरूपी प्रतिमा को भीम कहते हैं। आकाशमूर्ति के स्वामी भीम हैं इसलिए यह भैमी नाम से प्रसिद्ध है। भीम का अर्थ विशालकाय और भयंकर रूप वाला होता है। शिव की भस्म लिपटी देह, जटाजूटधारी, नागों के हार पहनने से लेकर बाघ की खाल धारण करने या आसन पर बैठने सहित कई तरह उनका भयंकर रूप उजागर होता है।

6. पशुपति

〰यजमानमूर्ति (पशुपति) ☞ यह पशुवत वृत्तियों का नाश और उनसे मुक्त करने वाली होती यजमानमूर्ति है। इसलिए इसे पशुपति भी कहा जाता है। पशुपति का अर्थ पशुओं के स्वामी, जो जगत के जीवों की रक्षा व पालन करते हैं। यह सभी आंखों में बसी होकर सभी आत्माओं की नियंत्रक भी मानी गई है।

7. महादेव

〰चन्द्रमूर्ति (महादेव) ☞ चंद्र रूप में शिव की यह मूर्ति महादेव के रूप में प्रसिद्ध है। महादेव का अर्थ देवों के देव होता है। यानी सारे देवताओं में सबसे विलक्षण स्वरूप व शक्तियों के स्वामी शिव ही हैं। चंद्र रूप में शिव की यह साक्षात मूर्ति मानी गई है।

8. ईशान

〰सूर्यमूर्ति (ईशान) ☞ शिव का एक नाम ईशान भी है। यह सूर्य जगत की आत्मा है जो जगत को प्रकाशित करता है। शिव की यह मूर्ति भी दिव्य और प्रकाशित करने वाली मानी गई है। शिव की यह मूर्ति ईशान कहलाती है। ईशान रूप में शिव को ज्ञान व विवेक देने वाला बताया गया है।

(2) मनुष्यों के शरीर में अष्ट मूर्तियों का निवास

〰〰〰〰〰〰〰〰〰〰〰〰

1 आँखों में ₹रूद्र₹ नामक मूर्ति प्रकाशरूप है जिससे प्राणी देखता है

2 'भव' नामक मूर्ति अन्न पान करके शरीर की वृद्धि करती है यह स्वधा कहलाती है।

3 'शर्व' नामक मूर्ति अस्थिरूप से आधारभूता है यह आधार शक्ति ही गणेश कहलाती है।

4 'ईशान' शक्ति प्राणापन - वृत्ति को प्राणियों में जीवन शक्ति है।

5 'पशुपति' मूर्ति उदर में रहकर अशित- पीत को पचाती है जिसे जठराग्नि कहा जाता है।

6 'भीमा' मूर्ति देह में छिद्रों का कारण है।

7 'उग्र' नामक मूर्ति जीवात्मा के ऐश्वर्य रूप में रहती है।

8 'महादेव' नामक मूर्ति संकल्प रूप से प्राणियों के मन में रहती है।

इस संकल्प रूप चन्द्रमा के लिए 'नवो नवो भवति जायमानः' कहा गया है, अर्थात संकल्पों के नये नये रूप बदलते हैं।।

(3) अष्टमूर्तियों के तीर्थ स्थल

〰〰〰〰〰〰〰〰

1 सूर्य ☞ सूर्य ही दृश्यमान प्रत्यक्ष देवता हैं। सूर्य और शिव में कोई अन्तर नही है, सभी सूर्य मन्दिर वस्तुतः शिव मन्दिर ही हैं फिर भी काशीस्थ ₹ गभस्तीश्वर ₹ लिंग सूर्य का शिव स्वारूप है।

2 चन्द्र ☞ सोमनाथ का मन्दिर है।

3 यजमान ☞ नेपाल का पशुपतिनाथ मन्दिर है।

4 क्षिति लिंग ☞ तमिलनाडु के शिव कांची में स्थित आम्रकेश्वर हैं।

5 जल लिंग ☞ तमिलनाडु के त्रिचिरापल्ली में जम्बुकेश्वर मन्दिर है।

6 तेजो लिंग ☞ अरूणांचल पर्वत पर है।

7 वायु लिंग ☞ आन्ध्रप्रदेश के अरकाट जिले में कालहस्तीश्वर वायु लिंग है।

8 आकाश लिंग ☞ तमिलनाडु के चिदम्बरम्मे स्थित है।

।। शनिदेव की आठ पत्नियां और उनके नाम जाप का महत्व ।।

ज्योतिष में शनिदेव को न्याय करने वाला देवता माना गया है। मनुष्य अपने जीवन में जो भी अच्छे या बुरे काम करता है, उसका फल उसे शनिदेव ही देते हैं। जब किसी व्यक्ति पर शनि की साढ़ेसाती व ढय्या का प्रभाव होता है तो उस समय वह शनि से सबसे ज्यादा प्रभावित होता है। ज्योतिष शास्त्र में शनि के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए शनि देव की पत्नियों के नाम के जप की सलाह दी जाती हैं।

शनिदेव के आठ पत्नियां है। जिनके नाम का जप शनिवार को इस प्रकार करना चाहिए-

ध्वजिनी धामिनी चैव कंकाली कलहप्रिया।
कंटकी कलही चाऽथ तुरंगी महिषी अजा।।
शनेर्नामानि पत्नीनामेतानि संजपन् पुमान्।
दुःखानि नाशयेन्नित्यं सौभाग्यमेधते सुखम।।

शनिदेव की पत्नियों के नाम-

१- ध्वजिनी,
२- धामिनी,
- कंकाली,
४- कलहप्रिया,
५- कंटकी,
६- तुरंगी,
७- महिषी,
८- अजा।

इस तरह शनिदेव की पत्नियों का नाम लेने से दुखों का नाश होता है और सौभाग्य बढ़ता है।

घरेलू जानकारी

- मैथी, पुदीना, धनिया जैसी हरी सब्जियों को वर्षभर तक सुरक्षित रखने के लिए 1 किलो मैथी को टर्न टेबल पर फैलाएँ। 5 मिनट तक माइक्रो करें। ओवन को खोलकर चलाएँ, पुनः इसी प्रकार 5-5 मिनट समय देकर चलाते हुए पानी के बिलकुल सूखने तक 12 से 15 मिनट माइक्रो करें।

- कोई भी दाल पकाने से पहले उसमें 1/2 टी स्पून हल्दी और एक टेबलस्पून घी डाल दें। दाल का स्वाद बढ़ जाएगा।

- यदि दही पुराना हो गया हो तो उससे बाल धोएँ। यह कंडीशनर का काम करेगा।

- लकड़ी के फर्नीचर में लगने वाले रंग को ज्यादा गहरा बनाने के लिए उस पर पहले बीयर का एक कोट लगाएँ, उसके सूखने के बाद रंग लगाने से रंग गहरा और अच्छा लगता है।

पुदीना बढ़ाएँ स्वाद

- पुदीने की पत्तियाँ सुखा लें, सूखने पर हाथों से मसलकर चलनी से छानकर रखें। इसे चिप्स के ऊपर बुरकें या आलू की सूखी सब्जी में मिलाएँ स्वाद बढ़ जाएगा।

- मैथी की भाजी को सुखाकर फ्रिजर्व कर साल भर इसका उपयोग आलू-मैथी की सब्जी बनाने में किया जा सकता है।

- अंकुरित दाल को फ्रिज में रखने से पहले उसमें एक छोटा चम्मच नींबू का रस मिलाएँ। दाल की खुशबू फ्रिज में नहीं फैलेगी।

- टमाटर के सूप में एक चम्मच नींबू का रस मिलाने से सूप का स्वाद बढ़ जाएगा।

शिवलिंग के 7 स्थान कौन से हैं जहां चंदन लगाने से भोलेनाथ होते हैं प्रसन्न! जानिए

शिवलिंग की पूजा :- कहा जाता है भगवान शिव भोले हैं, उन्हें मनाना बहुत आसान है. खासतौर से सावन के महीने में. क्योंकि मान्यता है श्रावण मास में भोलेनाथ धरती पर निवास करते हैं. इसलिए शिव भक्त उनकी मन भाव से पूजा अर्चना करते हैं. ताकि भगवान महादेव प्रसन्न होकर उनपर अपना कृपा बरसाएं. इस माह में शिवलिंग की पूजा का विशेष महत्व होता है. सावन के सोमवार के दिन विधि-विधान से पूजा करना और उनको धतुरा, बेलपत्र, दूध, शहद, दही आदि चीजें चढ़ाने और शिवलिंग पर 7 जगह चंदन लगाने से भगावन शिव प्रसन्न होकर भक्तों की सारी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं ऐसे में आइए जानते हैं ज्योतिषाचार्य अरविंद मिश्र से शिवलिंग के वो सात स्थान जहां लगाया जाता है शिव जी को चंदन।

शिवलिंग पर कहां-कहां चंदन लगाएं, ?

अरविंद मिश्र बताते हैं कि शिवलिंग पर सात स्थानों पर चंदन लगाने की प्रथा है, जो भगवान शिव के परिवार के विभिन्न सदस्यों को समर्पित है. ये स्थान हैं: शिवलिंग, जलाधारी, गणेश जी का स्थान, कार्तिकेय जी का स्थान, अशोक सुंदरी का स्थान, और नंदी के दोनों सींग।

ऐसे में आइए जानते हैं ज्योतिषाचार्य अरविंद मिश्र से शिवलिंग के वो सात स्थान जहां लगाया जाता है शिव जी को चंदन।

यहां उन सात स्थानों का विस्तृत विवरण दिया गया है:-

1. शिवलिंगः यह भगवान शिव का मुख्य स्थान है और चंदन का लेप शिवलिंग के ऊपर लगाया जाता है.

2. जलाधारीः यह वह स्थान है जहाँ से जल बहता है और यह स्थान माता पार्वती को समर्पित है.

3. गणेश जी का स्थानः शिवलिंग के दाईं ओर, जलाधारी के ऊपर का स्थान गणेश जी का माना जाता है.

4. कार्तिकेय जी का स्थानः शिवलिंग के बाईं ओर, जलाधारी के ऊपर का स्थान कार्तिकेय जी का माना जाता है.

5. अशोक सुंदरी का स्थानः जलाधारी से बहने वाले जल के रास्ते पर अशोक सुंदरी का स्थान माना जाता है.

6. नंदी के दोनों सींगः नंदी, जो भगवान शिव के वाहन हैं, उनके दोनों सींगों पर भी चंदन लगाया जाता है.

7. शिवलिंग के पीछेः शिवलिंग के पीछे का स्थान भी चंदन लगाने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है. ।

धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं पर है आधारितः

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ये सात स्थान धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं पर आधारित हैं, और विभिन्न परंपराओं में थोड़े भिन्न हो सकते हैं. भगवान शिव जी का पूजन करते समय उपरोक्त सात स्थानों पर चन्दन अवश्य लगाना चाहिए. इससे भगवान शिव के साथ उनका पूरा शिव परिवार प्रसन्न हो कर अपने भक्तों पर कृपा करते हैं.भगवान शिव का परिवार हमें अपने परिवार के साथ सम्मिलित और संगठित होकर रहने की सीख देता है. हर मुसीबत और दुख-सुख में हमारा परिवार ही काम आता है. और जो परिवार साथ रहता है उस पर मुसीबतें भी कम आती है और सुरक्षित रहता है।

देवाधिदेव भगवान शिव जहाँ हृदय में विराजमान हों तो वहाँ जीवन स्वयं तप बन जाता है,इसमे कोई संदेह नहीं।

भगवान शिव को समर्पित यह मास सभी के जीवन में सुख, समृद्धि, आरोग्य और आध्यात्मिक उन्नति का सृजन करे।

जयति जयति जय पुण्य सनातन संस्कृति,

जयति जयति जय पुण्य भारतभूमि, मङ्गल कामनाओं के साथ, हर हर महादेव,

हरियाली तीज आज

हरियाली तीज श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाई जाती है। विवाहित महिलाएं और अविवाहित लड़कियां दोनों ही इस व्रत को रखती हैं।

हरियाली तीज का धार्मिक महत्व बहुत खास होता है। हरियाली तीज पर माता पार्वती और भगवान शिव की पूजा अर्चना करने का विशेष महत्व है। हरियाली तीज को श्रावणी तीज भी कहा जाता है। इस दिन सुहागिन महिलाएं पति की दीर्घायु के लिए व्रत करती हैं तो वहीं कुंवारी कन्याएं शिवजी जैसा सुयोग्य वर पाने के लिए व्रत रखकर शिव-पार्वती की पूजा करती हैं।

हरियाली तीज का व्रत कब रखा जाएगा ?

==========

हरियाली तीज 2025 में 27 जुलाई, रविवार को मनाई जाएगी। हिंदू पंचांग के अनुसार, सावन शुक्ल तृतीया तिथि 26 जुलाई को रात 10 बजकर 41 मिनट पर शुरू होगी और यह तिथि 27 जुलाई को रात 10 बजकर 41 मिनट तक रहेगी। उदया तिथि के अनुसार, हरियाली तीज 27 जुलाई को मनाई जाएगी। इस दिन रवि योग का शुभ संयोग भी बन रहा है, जो शाम 4 बजकर 23 मिनट से शुरू होकर 28 जुलाई को सुबह 5 बजकर 40 मिनट तक रहेगा। रवि योग में पूजापाठ करना और व्रत रखना बहुत ही शुभ फल देने वाला माना जाता है।

हरियाली तीज का महत्व

==========

हरियाली तीज एक महत्वपूर्ण हिंदू त्योहार है। यह भगवान शिव और माता पार्वती के पुनर्मिलन का प्रतीक है। मान्यता के अनुसार माता पार्वती ने भगवान शिव को अपने पति के रूप में पाने के लिए बहुत कठिन तपस्या की थी। उन्होंने 108 जन्मों तक तपस्या की और उसके बाद भगवान शिव को पति के रूप में प्राप्त किया। इस दिन पूजा करने से विवाहित महिलाओं को अखंड सौभाग्य का आशीर्वाद मिलता है। जो महिलाएं इस दिन सच्चे मन से पूजा करती हैं, उनका वैवाहिक जीवन हमेशा खुशहाल रहता है।

मां पार्वती को अर्पित करें सुहाग की सामग्री

==========

हरियाली तीज एक महत्वपूर्ण त्योहार है। इस दिन महिलाएं माता पार्वती की पूजा करती हैं, वे उनसे अपने सुखी वैवाहिक जीवन के लिए प्रार्थना करती हैं। मान्यता है कि इस दिन माता पार्वती को सोलह श्रृंगार की वस्तुएं अर्पित करने से उनकी विशेष कृपा प्राप्त होती है। पूजा में सबसे पहले भगवान शिव का गंगाजल या पवित्र जल से अभिषेक करें। फिर माता पार्वती को चूड़ी, बिंदी, सिंदूर, मेहंदी और चुनरी जैसी चीजें अर्पित करें। इन चीजों से माता अत्यंत प्रसन्न होती हैं और उनकी कृपा से दांपत्य जीवन में प्रेम, समृद्धि और सुख-शांति बनी रहती है। पति-पत्नी के बीच प्रेम बढ़ता है, घर में सुख-शांति बनी रहती है और समृद्धि आती है।

प्रकृति मौन है, लेकिन उसकी यह मौन अभिव्यक्ति ही सबसे गहरी भाषा है।

फूल जब खिलता है, वह उपदेश नहीं देता लेकिन उसकी सुगंध हमारे अंतरतम को छू जाती है। प्रकृति के साथ एक हो जाना ही ध्यान है, साधना है। ध्यान कोई प्रयास नहीं है, न ही कोई तनाव है। यह तो बस जो है जैसा है उसके साथ, उसके समक्ष समर्पित भाव से खड़े हो जाना मात्र है। वास्तव में जो प्रकृति हमारे भीतर है और बाहर भी वही है। जब हम भीतर से शांत होते हैं, तब बाहर की हरियाली भीतर उतरने लगती है। होश रहे कि प्रकृति से दूर होकर हम स्वयं से भी दूर हो गये हैं।

पेड़/नदियाँ/पर्वत/पशु/पक्षी, यह सभी परमात्म की ही जीवित/जीवंत अभिव्यक्तियाँ हैं। लेकिन हम तो कंक्रीट की दीवारों/जाल में कैद हो गयें हैं। और यही ठोसता हमारे भीतर भी हमें कठोर/बंद/कैद किए दे रही है। जब हम किसी वृक्ष के नीचे शांत होकर बैठते हैं, भले वह वृक्ष हमें कुछ कहता नहीं है लेकिन बहुत कुछ भीतर पिघल जाता, कुछ जगा देता है। जाने-अनजाने भीतर कुछ नई कोमल कोंपलें फूटने लगतीं हैं। उसी क्षण हम परमात्म /अस्तित्व के सबसे नजदीक होतें हैं। ध्यान रहे कि प्रकृति और परमात्म एक ही हैं। या कहें कि यह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

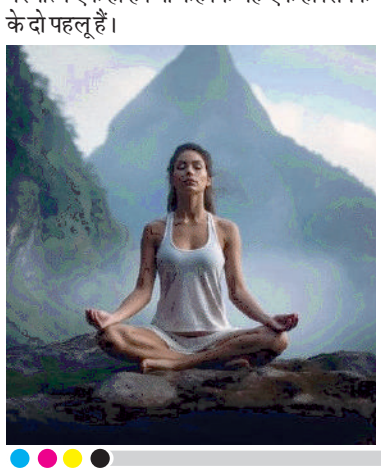

"संविधान की किताब जेब में लेकर घूमने वालों का सिर्फ हंगामा खड़ा करना ही एक मात्र मकसद है"

सफ़ेद झूठ बोलके, ग़रीब, मजदूर, एवं दलितों को भड़काके, बेबुनियाद आरोप लगाके, अब ईनको दुबारा सत्ता चाहिए लोगों के बोल -- सत्ता के लिए ये देश के न्यायालय, क़ानून, संबिधान, सैना और सब की बुराई करेंगे और ऊपर से धमकी भी देंगे क्युकी इन्हें तो -- कैसे भी सत्ता चाहिए

ये इस देश के जन्मजात ठेकेदार हैं, इन्होने 60 साल देश पर मनमर्जी से राज किया हैं -- इसलिए ये किसी दूसरे को कैसे करने देंगे, इनके लिए गद्दी खाली कर दीजिए क्युकी इन्हें दुबारा जबरई से सत्ता चाहिए तो चाहिए

अब तो देशबासी ही नहीं बल्कि विदेशों में रह रहें भारतीय भी सोशल मीडिया पर इनकी देशद्रोही पोस्टों की एक एक हरकतो-फ़तिरतो और बोली-भाषा को बहुत ही ध्यान से देख रहें हैं और तीखी आपत्ति दर्ज़ कर रहें हैं।-----

इनकी सोशल मीडिया में अबतक डाली गयी पोस्ट भी स्वयं चीख चीख कर पूरी दुनियां को यही बता रही हैं कि ये अब सिरफ़ वैचारिक राजनीति नहीं, बल्कि अपने भारत देश में रहकर अपने ही देश के खिलाफ़ लड़ाई के नगाडे बजाकर जंग का आगाज़ कर रहें हैं।----

सब को पता ये मानेगे नहीं -- इसलिए इस पुरे मामले को स्टेप बाई स्टेप बहुत ही ध्यान से देखते रहिए क्युकी इसे ही कहते हैं - ₹एक तो चोरी और उपर से सीना जोरी₹ - और ज़ब भी ये संसद से सड़क तक ख़ामखा का हंगामा या

झूठा झगड़ा खड़ा करे तो -- संबिधान और क़ानून के दायरे में रहकर सिर्फ प्रेम से बोलिए भारत देश में पल रहें लालची नेताओं, उनकी पार्टियों और विरोधी ईको सिस्टम 19 की जय

यूपी, संजय साग़र सिंह। भारत में रह रहें जिस जिस नेता ने यह बात कही कि - ₹भारत में वोटों की चोरी हो रही हैं।₹ उन सभी नेताओं की इस बात को रेखांकित करते हुए लोगो के अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त बताया कि बात तो सही हैं, भारत में दुनियां की अबतक की सबसे बड़ी वोटों की चोरी बहुत ही चालाकी से हो रही हैं। यह बात तो एकदम 100% सही हैं। देश में चोरी छुपके आएं अबैध घुसपैठिये एवं अबैध शरणार्थी, लालची नेता, उनकी पार्टीया और देश विरोधी ₹₹ईको सिस्टम 19₹₹ के सहयोग से देश में चोरी से फ़र्ज़ी वोटर कार्ड और आधार बनाकर वोटो की महाचोरी की जा रही हैं। इसीक्रम में बिहार में 64 लाख से अधिक वोट चोरी करने की तैयारी थी, और लाखों फर्जीयों के तो अभी तक अते-पते ठिकाने भी नहीं मिलें हैं, SIR में जिनके नाम कटे ना वो शिकायत कर रहे हैं, ना वो दिखाई दे रहे हैं। चोरी ना पकड़ी जाय इस डर से मिस्टर इंडिया हो गए हैं और जिन लालची नेताओं की फर्जी वोटबैंक की दुकान बंद हो रही है, और संविधान की किताब जेब में लेकर घूमने वालें अब हंगामा खड़ा कर रहें और ऊपर से धमकी भी दें रहें हैं। सिर्फ बिहार में ही इस वोट चोरी में 64 लाख से ज्यादा वोट चोरी होने की पूरी पूरी सम्भावना हैं। यह बात जल्द ही सार्वजनिक भी हो जाएगी। उसके बाद बंगाल में देश विरोधी ₹₹ईको सिस्टमन 19₹₹ की मदद से करोड़ों वोटों की खुले में महातैयारी हैं।

साथ ही लोगों यह भी बताया कि उन्होंने बिलकुल सही कहा हैं, ये दुनियां की अबतक की सबसे बड़ी वोट चोरी हैं, जिसमें पुरे भारत देश से खुलेआम धमकी और जबरई से 6 करोड़ से ज्यादा वोटों चुराएं जायेगें। इस सबसे बड़ी चोरी की लालची ₹₹वोट चोर₹₹ और देश में चोरी छुपे पल रहें देश विरोधी ₹ईको सिस्टम 19₹ से मिलकर जोरों से सबसे बड़ी तैयारी की जा रही हैं। अगर दुनियां की अबतक की सबसे बड़ी वोट चोरी में देश के न्यायालय, क़ानून, संबिधान, और सैना इनको रोकेगी तो, -- आने वाले समय में आप देख लेना। संविधान की किताब जेब में लेकर घूमने वालें ये सब के सब पूरी दुनियां में देश की खुलकर बुराई करेंगे, सांसद से सड़क तक हंगामा करेंगे और ऊपर से धमकी भी देंगे साथ ही जबरई भी करेंगे। क्युकी इन्हें तो कैसे भी जबरई से सिर्फ़ सत्ता चाहिए। ये इस देश के जन्मजात ठेकेदार हैं, इन्होने 60 साल देश पर मनमर्जी से राज किया हैं। इसलिए ये किसी दूसरे को कैसे बर्दास्त करेंगे, ये किसी दूसरे को कैसे करने देंगे, या यों इनके लिए गद्दी खाली कर दीजिए नहीं तो जबरई से हंगामा खड़ा करेंगे। क्युकी इन्हें दुबारा सत्ता चाहिए तो चाहिए।

आखिर में वोटरों ने बताया कि - अब तो देशबासी ही नहीं बल्कि विदेशों में रह रहें भारतीय भी सोशल मीडिया पर इनकी देशद्रोही पोस्टों की एक एक हरकतो-फ़तिरतो और बोली-भाषा को बहुत ही ध्यान से देख रहें हैं और तीखी आपत्ति दर्ज़ कर रहें हैं। इनकी सोशल मीडिया में अबतक डाली गयी पोस्ट भी स्वयं चीख चीख कर पूरी दुनियां को यही बता रही हैं कि - संविधान की किताब जेब में लेकर घूमने वालें लालची नेता और देश विरोधी ₹ईको सिस्टम 19₹ अब सिर्फ़ वैचारिक राजनीति नहीं, बल्कि अपने भारत देश में रहकर अपने ही देश के खिलाफ़ लड़ाई के नगाडे बजाकर जंग का आगाज़ कर रहें हैं। अब सब को पता ये मानेगे नहीं -- इसलिए इस पुरे मामले को स्टेप बाई स्टेप बहुत ही ध्यान से देखते रहिए क्युकी इसे ही कहते हैं - ₹एक तो चोरी और उपर से सीना जोरी₹ - और ज़ब भी ये संसद से सड़क तक ख़ामखा का हंगामा या झूठा झगड़ा खड़ा करे तो -- संबिधान और क़ानून के दायरे में रहकर सिर्फ प्रेम से बोलिए भारत देश में पल रहें लालची नेताओं और उनकी पार्टियों और विरोधी 'ईको सिस्टम 19' की जय।

भाजपा की चार इंजन सरकार दिल्ली में 'सीएम कूड़ा योजना' के तहत बना रही, नया कूड़े का पहाड़ : अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली को खूबसूरत शहर बनाने का दम भरने वाली भाजपा की चार इंजन की सरकार ने दिल्लीवालों को एक नए कूड़े के पहाड़ की सौगात दे दी है। शनिवार को आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने सिविल लाइंस जोन के मजलिस पार्क मेट्रो स्टेशन के पास भाजपा की सरकार द्वारा बनाए जा रहे चौथे कूड़े के पहाड़ का दौरा कर वहां रह रहे लोगों को हो रही परेशानी का जायजा लिया। अंकुश नारंग ने कहा कि भाजपा दिल्लीवालों को तीन कूड़े के पहाड़ों से मुक्ति दिलाने के बजाय दिल्ली में चौथा कूड़े का पहाड़ बना रही है। यहां एमसीडी का सारा कूड़ा फेंका जा रहा है और ये सब कुछ भाजपा के मेयर राजा इकबाल सिंह और सिविल लाइंस जोन के चेयरमैन के कहने पर हो रहा है। कूड़े के पहाड़ से निकलने वाली बदबू से यहां रह रहे लोगों का जीना दुश्वार हो गया है।

उन्होंने कहा कि यह मजलिस पार्क, जहांगीरपुरी का इलाका है। यहां मजलिस पार्क मेट्रो स्टेशन भी है। यह सिविल लाइंस जोन में आता है। मजलिस पार्क में चौथा कूड़े का पहाड़ बन चुका है। भाजपा तीन कूड़े के पहाड़ हटाने की बात करती थी, लेकिन अब चौथा पहाड़ खड़ा कर रही है। यहां कूड़ा, सिल्ट और मलबा यानी सीएनडी वेस्ट भी पड़ा है। एमसीडी सारा कूड़ा यहीं डाल रही है। अब एमसीडी का कूड़ा तीनों कूड़े के पहाड़ों पर नहीं जा रहा है बल्कि एक नया कूड़े का पहाड़ बनाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि भाजपा मेगा सफाई अभियान की बात करती है, जो पूरी तरह हवा हवाई है। सीएम रेखा गुप्ता, मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा और मेयर राजा इकबाल सिंह कूड़े के पहाड़ पर जाकर फोटो खिंचवाते हैं, लेकिन दूसरी तरफ मजलिस पार्क में नया कूड़ा पहाड़ बना रहे हैं। भाजपा को शर्म आनी चाहिए। मैं इस कूड़े के पहाड़ को हटाने के लिए मुख्यमंत्री, मंत्री, महापौर और कमिश्नर को चिट्ठी लिखूंगा और उनको बताऊंगा कि मैंने चौथे कूड़े के पहाड़ का दौरा किया है। मजलिस पार्क में एक महीने में आठ-नौ फुट ऊंचा कूड़ा जमा हो गया है। भाजपा दिल्ली को सुंदर शहर बनाने की बात करती थी, लेकिन क्या यही उनका सौंदर्यीकरण है? "आप" सदन में यह मुद्दा पुरजोर तरीके से उठाएगी।

अंकुश नारंग ने कहा कि बारिश के कारण वेक्टर जनित बीमारियां बढ़ेंगी। यहां मक्खियां और मच्छर हैं। बदबू और गंदगी से लोगों का निकलना मुश्किल है। भाजपा कूड़े का पहाड़ बनाकर अवैध कब्जा कर सकती है। यहां पार्क बनना था। "आप" की सरकार में अरविंद केजरीवाल ने इसे साफ करवाया था। अब एक महीने से कूड़ा जमा हो रहा है। यह पार्क आदर्श नगर, बुराड़ी और बादली विधानसभाओं के बीच है। तीनों इलाकों के लोग यहां आ सकते थे।

चौपाल संस्था कामकाजी महिलाओं के लिए ब्याज मुक्त ऋण प्रदान करती है - सीएम रेखा गुप्ता

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। बुराड़ी क्षेत्र में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में 201 कामकाजी महिलाओं के लिए यादगार दिन बना जब मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने उनके लिए ब्याज मुक्त ऋण प्रदान किया। इस पहल का उद्देश्य महिलाओं के व्यवसाय को सशक्त बनाना है। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि सामाजिक संस्थाएं समाज की रीढ़ होती हैं, जो न केवल लोगों के जीवन को सुदृढ़ बनाती हैं, बल्कि राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

कार्यक्रम का आयोजन बुराड़ी में हुआ, जहां मुख्यमंत्री के आगमन से पहले बुराड़ी बाईपास से स्वरूप नगर तक एक भव्य स्वागत समारोह आयोजित किया गया। स्थानीय निवासियों ने मुख्यमंत्री पर फूलों की वर्षा की और सरकार के समर्थन में नारे लगाए। इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय सांसद मनोज तिवारी, विधायक अजय महावार और राजकुमार भाटिया, मेयर राजा इक़बाल सिंह, नगर निगम में नेता सदन प्रवेश वाही सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार महिलाओं के हितों को प्राथमिकता देती है और कामकाजी महिलाओं के उत्थान के लिए विभिन्न योजनाएं लागू कर रही है। उन्होंने चौपाल संस्था के सामाजिक कार्यों की सराहना की और बताया कि यह संस्था कामकाजी महिलाओं को ब्याज मुक्त ऋण प्रदान करती है, जिससे वे अपने व्यवसाय को और मजबूत बना सकें।

वीरेन्द्र सचदेवा के नेतृत्व में भाजपा द्वारा कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में 140 विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली भाजपा द्वारा सभी 14 संगठनात्मक जिलों में आज कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में140 विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें प्रमुख रुप से तिरंगा यात्रा, विजय यात्रा, शिक्षण संस्थानों में कारगिल विजय पर व्याख्यान, शहीद स्मारकों में श्रद्धांजलि कार्यक्रम और शहीदों के परिवारों को सम्मानित करने जैसी कई अन्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय सांसद, विधायक सहित प्रदेश के पदाधिकारी भी शामिल हुए। जिला कार्यक्रमों का संयोजन अशोक ठाकुर ने किया।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कारगिल विजय दिवस के अवसर पर आज इंडिया गेट स्थित नेशनल वॉर मेमोरियल जाकर वीर जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस मौके पर प्रदेश संगठन महामंत्री पवन राणा, प्रदेश महामंत्री एवं सांसद योगेन्द्र चंदोलिया एवं कमलजीत सहरावत, प्रदेश महामंत्री विष्णुमित्तल और प्रदेश भाजपा मीडिया रिलेशन प्रमुख विक्रम मित्तल भी उपस्थित थे जिन्होंने वॉर मेमोरियल में वीर जवानों के सर्वोच्च बलिदान और साहस की लिखी हुई गाथाओं को देखा।

इस मौके पर वीरेन्द्र सचदेवा ने दिल्ली और देश की जनता को कारगिल विजय दिवस की बधाई देते हुए कहा कि आज का दिन हमारी सेना के सौर्य, गौरव और विजय का दिन है जिसपर हर भारतीय को गर्व है। उन्होंने कहा कि कारगिल की लड़ाई जो हमारे तत्कालिन प्रधानमंत्री स्व अटल बिहारी वाजपेयी के शासन में लड़ी गई थी, उसमें भारतीय सेना ने पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद को कूचलने का काम किया था।

सचदेवा ने कहा कि भारतीय सेना की जीत को आज सेलिब्रेट करने का दिन है। यह एक दिवस नहीं है बल्कि हर भारतीय को गौरवान्वित होने का दिन है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से ऑपरेशन सिंदूर हो या फिर सर्जिकल स्ट्राइक के माध्यम से हमने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आतंकवाद को जड़ से समाप्त करने का संकल्प लिया है, उसके प्रति हर भारतीय संकल्पित है।

ब्यूटी पार्लर व केक मेकिंग प्रशिक्षण से महिलाएं आत्मनिर्भर बन सकती हैं: सुधा शर्मा

सपने हो रहे साकार, वोकेशनल ट्रेनिंग से महिलाओं को मिल रही नई पहचान

रोटेरियन सुधा शर्मा एक हजार से ज़्यादा महिलाओं को दे चुकी निशुल्क प्रशिक्षण

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। महिला सशक्तिकरण सहायता फाउंडेशन सुधा प्रवाह ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से गवर्नमेंट स्कूल लिमतरी में वोकेशनल ट्रेनिंग के तहत चार दिवसीय ब्यूटी पार्लर एवं केक मेकिंग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध ब्यूटी पार्लर संचालिका रोटेरियन सुधा शर्मा ने कहा कि आज के दौर में हुनरमंद बनना ही सच्चा सशक्तिकरण है। ब्यूटी पार्लर और केक मेकिंग जैसे प्रशिक्षण महिलाओं के लिए स्वरोजगार के नये द्वार खोलते हैं। सुधा शर्मा ने कहा कि इन क्षेत्रों में कम लागत में व्यवसाय शुरू किया जा सकता है जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकती हैं।

प्रशिक्षण शिविर में संपूर्ण दुल्हन तैयार करके स्वयं को सजाने की ट्रेनिंग दी गई। शिविर में छात्राओं ने एक दूसरे को सजाकर प्रायोगिक जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षिका सुधा शर्मा ने प्रसाधन सामग्री के लाभ एवं उनसे होने वाली हानि से अवगत कराया। केक मेकिंग प्रशिक्षण के तहत आवश्यक उपकरण सामग्री व केक पर आइसिंग आदि करने की जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में रोटेरियन सुधा शर्मा ने आधुनिक ब्यूटी पार्लर सेवाओं, त्वचा देखभाल, मेकअप तकनीक, हेयर स्टाइलिंग इत्यादि की जानकारी दी। वहीं केक मेकिंग सत्र में विभिन्न फ्लेवर, डिजाइन और बेकिंग की बारीकियों को समझाया । प्रतिभागियों को व्यावहारिक अभ्यास के साथ-साथ मार्केटिंग व सेल्स से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां भी दी गईं। शिविर में शामिल प्रतिभागियों ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि इस प्रशिक्षण से उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने की नई प्रेरणा मिली है। कई महिलाओं ने भविष्य में स्वयं का व्यवसाय शुरू करने की इच्छा भी जताई।

उच्च जीवन प्रशिक्षण संस्थान रुड़की (उत्तराखंड) से जुड़ी अनिता सैनी ने विधार्थियों को आज का महत्व बताते हुए उन्हें जीवन में बेहतर इंसान बनने के टिप्स दिए जिसे अपनाकर विद्यार्थी जीवन में आगे बढ़ सकें। इस अवसर पर उपस्थित सभी 30 प्रतिभागियों ने रैंप वॉक का प्रदर्शन कर सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सिरगिट्टी थाना की सब इंस्पेक्टर संतोषी अग्रवाल ने सभी प्रतिभागियों का मनोबल बढ़ाते हुए प्रमाण पत्र वितरित किए। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम की संचालिका सुधा शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

वी.एस. अच्युतानंदन : समझौताहीन संघर्ष की कम्युनिस्ट परंपरा के प्रतीक

(आलेख : पिनराई विजयन, अनुवाद : संजय पराते)

कॉमरेड वी.एस. अच्युतानंदन का जीवन, जिनका सोमवार (21 जुलाई, 2025) को 101 वर्ष की आयु में निधन हो गया, सामान्यत: केरल के इतिहास और विशेष रूप से, यहाँ के क्रांतिकारी आंदोलन का एक उल्लेखनीय अध्याय है।

वी.एस. अच्युतानंदन संघर्षों की एक शानदार परंपरा, असाधारण दृढ़ संकल्प और अडिग संघर्षशीलता के प्रतीक थे। उनका एक शताब्दी लंबा जीवन केरल के आधुनिक इतिहास से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है, जिन्होंने जनता की समस्याओं को उठाया और जनता के साथ खड़े रहे। वी.एस., जिन्होंने केरल के इतिहास के विभिन्न चरणों में केरल सरकार, भाकपा, वाम लोकतांत्रिक मोर्चा और विपक्ष का नेतृत्व किया, का योगदान अद्वितीय है। इतिहास यह दर्ज करेगा कि वे केरल की राजनीतिक विरासत का हिस्सा हैं। वी.एस. का निधन एक युग का अंत है। इससे भाकपा, क्रांतिकारी आंदोलन और संपूर्ण लोकतांत्रिक-प्रगतिशील आंदोलन को भारी क्षति हुई है। पार्टी इस क्षति की भरपाई सामूहिक नेतृत्व के माध्यम से ही कर सकती है। यह वह समय है, जब लंबे समय तक साथ काम करने की कई यादें ताज़ा हो जाती हैं।

वी.एस. का जीवन असाधारण ऊर्जा और क्रांतिकारी आंदोलन की ताकत से भरा एक घटनापूर्ण जीवन था। उनका जीवन केरल और कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास का एक संघर्षपूर्ण अध्याय है। वी. एस. का राजनैतिक जीवन प्रबल सामंतवाद और जातिवाद के अंधकारमय दौर को बदलने के लिए किए गए संघर्षों के माध्यम से उभरा, जब उन्होंने मज़दूरों और किसानों के विद्रोहों को संगठित करके आंदोलन को विकसित किया। एक साधारण पृष्ठभूमि से, कम्युनिस्ट आंदोलन के विकास के विभिन्न चरणों से गुज़रते हुए, वे केरल के मुख्यमंत्री के पद तक पहुँचे।

1964 में जब कम्युनिस्ट पार्टी का विभाजन हुआ, तो राष्ट्रीय परिषद छोड़ने वाले 32 लोगों में वे भी शामिल थे।वी.एस. के निधन के साथ ही यह आखिरी बची कड़ी भी टूट गई। इसके साथ ही, एक मूल्यवान राजनीतिक उपस्थिति भी लुप्त हो गई, जिसने राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम और समकालीन राजनीति के बीच तालमेल बिठाए रखा था।

एक कम्युनिस्ट नेता, विधान सभा के सदस्य, विपक्ष के नेता और मुख्यमंत्री के रूप में, वी.एस. के अनेक योगदान हैं। वे पुन्नप्रा-वायलार संघर्ष के पर्याय बन गए थे, जिन्होंने कष्ट और सहनशीलता के साथ जीवनयापन किया।

वी.एस. बहुत तेज़ी से एक मज़दूर से मज़दूर वर्ग के आंदोलन के एक सशक्त नेता बन गए। कम्युनिस्ट पार्टी ने वी.एस. को विकसित किया और वी.एस. ने पार्टी का विकास किया। 1940 में, 17 साल की उम्र में वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गए और 85 साल की लंबी अवधि तक पार्टी के सदस्य रहे। वी.एस. कुट्टनाड गए और वहां उन्होंने खेतिहर मज़दूरों की उजरती गुलामी और जातिगत गुलामी को खत्म करने के लिए संघर्ष का नेतृत्व किया। उन्होंने कुट्टनाड के गाँवों में घूम-घूम कर खेतिहर मज़दूरों की बैठकें आयोजित कीं और उन्हें एक संगठित शक्ति के रूप में विकसित किया। उन्होंने यह काम ज़मींदारों और पुलिस को चुनौती देकर किया।

वी.एस. ने 'त्रावणकोर खेत मज़दूर यूनियन' के गठन में और बाद में केरल के सबसे बड़े मज़दूर आंदोलनों में से एक, 'केरल राज्य खेत मज़दूर यूनियन' के रूप में इसके विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वी.एस. के नेतृत्व में अनगिनत संघर्षों ने कुट्टनाड के सामाजिक इतिहास को बदल दिया। वे बेहतर मज़दूरी, वय्पा प्रथा के उन्मूलन, टिकाऊ रोज़गार और अतिरिक्त भूमि की जब्ती के संघर्षों में सबसे आगे थे। खेतों की मेड़ों पर कई किलोमीटर पैदल चलकर और उनकी झोपड़ियों में जाकर उन्होंने खेत मज़दूरों में आत्मविश्वास और टीम भावना जगाने का प्रयास किया, जिसके चलते खेत मज़दूर बड़े पैमाने पर आंदोलन की ओर आकर्षित हुए।

1948 में कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबंध लगने के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 1952 में, उन्हें पार्टी का अलप्पुझा संभाग सचिव चुना गया। इस दौरान, वे एकीकृत केरल के लिए कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा चलाए जा रहे आंदोलनों में सक्रिय रहे। 1957 में जब कम्युनिस्ट पार्टी सत्ता में आई, तो वे पार्टी के अलप्पुझा जिला सचिव और राज्य सचिवालय के सदस्य बने। 1959 में, वे पार्टी की राष्ट्रीय परिषद के सदस्य बने। वी.एस. ने अधिशेष भूमि संघर्ष सहित कई साहसी संघर्षों का नेतृत्व किया।

वे कुल मिलाकर, साढ़े पाँच साल से अधिक समय तक जेल में रहे। वे 1964 से सीपीआई (एम) केंद्रीय समिति के सदस्य थे। वे 1985 में पोलिट ब्यूरो के सदस्य बने। उन्होंने 1980 से 1992 तक सीपीआई (एम) के राज्य सचिव और 1996 से 2000 तक एलडीएफ संयोजक के रूप में कार्य किया। उन्होंने 2015 में कोलकाता में आयोजित 21वीं पार्टी कांग्रेस में वृद्धावस्था के कारण केंद्रीय समिति से इस्तीफा दे दिया। बाद में, वे केंद्रीय समिति के विशेष आमंत्रित सदस्य बनाए गए। वह 2001 से 2006 तक विपक्ष के नेता रहे। वह 2006 से 2011 तक मुख्यमंत्री रहे। वे 2011 से 2016 तक फिर से विपक्ष के नेता के रूप में कार्य करते रहे। वह एक ऐसे नेता हैं, जिन्होंने अपने सभी पदों पर अपनी अलग छाप छोड़ी है। खेतिहर मज़दूरों और नारियल के रेशे बनाने वाले मज़दूरों की कठिनाइयों को व्यक्तिगत रूप से अनुभव करने के बाद, वी.एस. ने अपने अनुभवों को अपनी शक्ति में बदल दिया। वे शोषितों की मुक्ति के पक्षधर थे और उन्होंने पूरे साहस के साथ खेत मज़दूरों के आंदोलन और कम्युनिस्ट आंदोलन को आगे बढ़ाया। पार्टी में विभाजन के बाद के दौर में उन्होंने संशोधनवाद और बाद में संकीर्णतावाद के विरुद्ध संघर्ष किया और पार्टी को सही रास्ते पर मज़बूती से टिकाए रखने में अहम भूमिका निभाई।

राजनीति की सीमाओं को लांघकर, वीएस ने पर्यावरण, मानवाधिकार और महिला समानता जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भी काम किया। इसी प्रक्रिया में, पार्टी नेता रहते हुए भी वी.एस. को जनता की स्वीकृति मिली। वी.एस. ने सामाजिक महत्व के अन्य मुद्दों को मुख्यधारा के राजनीतिक मुद्दों से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विधान सभा के सदस्य के रूप में भी वी.एस. ने अद्वितीय योगदान दिया है। वे 1967 और 1970 में अम्बालापुझा से और 1991 में मारारिकुलम से विधान सभा के सदस्य बने। वे 2001 से 2021 तक पलक्कड़ जिले के मलमपुझा निर्वाचन क्षेत्र से विधायक रहे। उन्होंने 2016 से 2021 तक केरल प्रशासनिक सुधार आयोग के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने पार्टी और वाम लोकतांत्रिक मोर्चे द्वारा बनाई गई नीतियों को लागू करके केरल के विकास को आगे बढ़ाया। उन्होंने संकटों में भी बिना किसी हिचकिचाहट के सरकार का नेतृत्व किया। विपक्ष के नेता के रूप में, उन्होंने सदन में कई लोकप्रिय मुद्दे उठाए। उन्होंने विधायी मामलों में भी अपना योगदान दिया। वी.एस. एक ऐसे नेता हैं, जिन्होंने केरल के राजनीतिक इतिहास पर एक अनूठी छाप छोड़ी है। कॉमरेड वी.एस. अच्युतानंदन के निधन से पार्टी और देश को अपूरणीय क्षति हुई है।

(लेखक भाकपा के पोलिट ब्यूरो सदस्य और केरल के मुख्यमंत्री हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज के सामने स्थित इस मंदिर में धर्मशाला भी है, जो लोगों की सेवा करता है- सौरभ भारद्वाज

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज के सामने स्थित दलित समाज के प्राचीन हैदर दास मंदिर को तोड़ने के लिए जारी नोटिस का कड़ा विरोध किया है। ''आप'' के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने कहा कि कुछ दिनों पहले शालीमार बाग में जैन समाज के मंदिर पर बुलडोजर चलवाया गया और अब दलित समाज के स्वामी हैदर दास मंदिर को ग़ैरक़ानूनी घोषित कर दिया गया है। मंदिर को नोटिस देकर कहा गया है कि 7 दिनों के अंदर ख़ुद ही तोड़ लो। उन्होंने कहा कि यह मंदिर 1930 में बने इरविन अस्पताल के पहले से स्थापित है और यहां कई दलित महापुरुषों की समाधियां हैं। यहां धर्मशाला भी है, जो लोगों की सेवा करता है। ऐसे प्राचीन मंदिर को अवैध बताने दलित समाज बहुत आहत है। इस दौरान विधायक विशेष रवि और संजीव झा भी मौजूद रहे।

आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने शनिवार को पार्टी मुख्यालय पर विधायक विशेष रवि और संजीव झा के साथ संयुक्त प्रेसवार्ता कर कहा कि दिल्ली में भाजपा की सरकार बनने के बाद गरीब आदमी की शामत तो आई ही थी, अब भगवान को भी बख्शा जा रहा है। दो-तीन दिन पहले शालीमार बाग में जैन मंदिर पर भाजपा सरकार ने बुलडोजर चला दिया। कुछ साल पहले भाजपा की केंद्र सरकार की एजेंसी डीडीए ने तुगलकाबाद इलाके में वर्षों पुराने रविदास मंदिर पर बुलडोजर चलाया था। कालकाजी के मुख्य मार्ग को रविदास मार्ग कहते हैं। एक तरफ कालकाजी और दूसरी तरफ गोविंदपुरी का इलाका है। इसके अलावा इससे सटा तुगलकाबाद और संगम विहार है। दलित समाज के भारी विरोध के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आश्वासन दिया था कि सरकार अपने पैसे से रविदास मंदिर को बनवाएगी। लेकिन आज तक रविदास मंदिर नहीं बनवाया गया।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि प्राचीन स्वामी हैदर दास के मंदिर में दिल्ली के अंदर दलित समाज के सभी संत महापुरुषों की समाधियां हैं। स्वामी हैदर दास मंदिर आजादी के पहले का है। यह बहुत बड़ा मंदिर है, जो लगभग एक हजार वर्ग गज में फैला हुआ है। यह स्थापित मंदिर है। इसके अंदर एक आश्रम चलता है। यह मंदिर मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज के सामने है। आज भी मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज में आने वाले मरीजों के परिजनों को अगर रूकने की कहीं जगह नहीं मिलती है तो वह इसी मंदिर में बने धर्मशाला में जाकर ठहरता है।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि यह बहुत शर्म की बात है कि कुछ दिन पहले दिल्ली की मुख्यमंत्री मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज में गईं और उन्होंने आदेश दिए कि आसपास की सारी जमीन एलएनजेपी और मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज की है। इसलिए सारे अतिक्रमण हटाए जाएंगे। मंदिर को अतिक्रमण कहना ही गलत है। सरकार द्वारा मंदिर को अवैध बताते हुए नोटिस दिया गया है। भाजपा सरकार का यह कदम बहुत ही घटिया और दलित समाज को आहत करने वाला है।

इस दौरान करोलबाग से ''आप'' विधायक विशेष रवि ने कहा कि इस मंदिर में दलित समाज के महात्माओं की समाधि है। दलित समाज के लोग इस मंदिर में जाकर रोज माथा टेकते हैं और अच्छे काम करने की उनसे प्रेरणा और उर्जा लेते हैं। आजादी से पहले से यह मंदिर बना हुआ है। इस मंदिर में दलित समाज की तरफ से बहुत भव्य कार्यक्रम भी कराए जाते हैं। ऐसे स्थान को भाजपा सरकार द्वारा गैर कानूनी बताकर उसको तोड़ने की बात करना गलत है। भाजपा दलित समाज से पता नहीं कौन सी दुश्मनी निकाल रही है। अगस्त 2019 में तुगलकाबाद में गुरु रविदास जी का मंदिर तोड़ा गया। अब एक बार फिर अगस्त महीने में ही भाजपा सरकार स्वामी हैदर दास मंदिर तोड़ने जा रही है। रविदास मंदिर करीब 600 साल पुराना था। जब तुगलक दिल्ली का शासक था। उस दौरान तुगलक ने संत रविदास जी को जमीन दी थी। दलित समाज ने रविदास मंदिर तोड़ने का विरोध किया तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कई बार इस मंदिर को बनवाने का वादा किया लेकिन मंदिर नहीं बना है।

गोवा फोटोग्राफी वर्कशॉप में मध्यप्रदेश के युवा फोटोग्राफर संजय कुमार प्रजापत को उत्कृष्ट प्रदर्शन पर मिला सम्मान

धर्मेन्द्र शर्मा और सृष्टि ईजी द्वारा किया गया सम्मानित

मध्यप्रदेश के युवा फोटोग्राफर संजय कुमार प्रजापत ने अपनी फोटोग्राफी प्रतिभा से राष्ट्रीय मंच पर शानदार छाप छोड़ी है। हाल ही में गोवा में आयोजित राष्ट्रीय फोटोग्राफी वर्कशॉप में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उन्हें प्रसिद्ध फोटोग्राफर धर्मेन्द्र शर्मा और सृष्टि ईजी और क्रिएटिव टीम द्वारा सम्मानित किया गया। यह वर्कशॉप 18 से 21 जुलाई तक गोवा में आयोजित हुई, जिसमें देशभर से 105 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। संजय कुमार का चयन मध्यप्रदेश से हुआ था। कार्यक्रम में भारत के अग्रणी फोटोग्राफी मेंटर्स — साजन मदान, नीरज विश्वकर्मा और रमेश छाबड़िया द्वारा ड्रोन फोटोग्राफी, सिनेमैटोग्राफी और एआई एडिटिंग जैसे आधुनिक विषयों पर विशेष प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला के दौरान संजय ने अपनी रचनात्मकता और तकनीकी कौशल से सबको प्रभावित किया। उनके बेहतरीन योगदान पर उन्हें शील्ड और प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। संजय कुमार इससे पहले थाईलैंड, नेपाल, नैनीताल, मनाली और रायपुर जैसे राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके हैं और कई बार सम्मानित हो चुके हैं। अपने अनुभव साझा करते हुए संजय ने बताया, ₹गोवा में आयोजित इस वर्कशॉप ने न सिर्फ मुझे फोटोग्राफी के नए आयाम सिखाए, बल्कि देशभर के फोटोग्राफरों के साथ संवाद का अनमोल अवसर भी प्रदान किया। यह अनुभव मेरे करियर के लिए बेहद प्रेरणादायक रहा।"

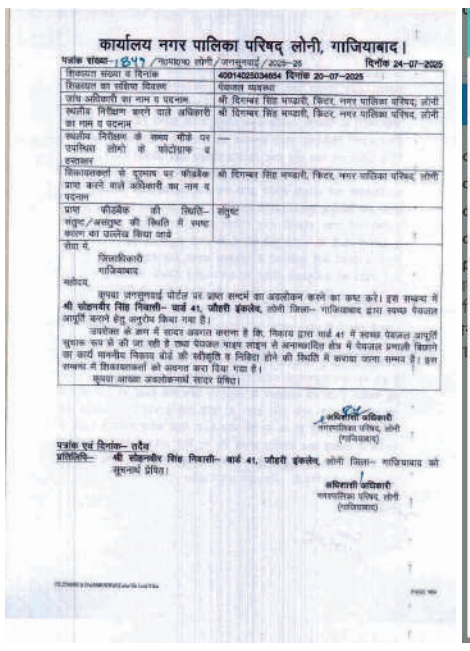

संजय की इस उपलब्धि पर उनके परिवार, मित्रों और फोटोग्राफी जगत से जुड़े लोगों ने उन्हें शुभकामनाएँ दी हैं।

नगर पलिका परिषद लोनी के अधिकारीगण का भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार

Application details

माननीयमुख्य मंत्री जी हम बार बार जनसुनवाई पोर्टल पर शिकायत दर्ज करवाई लेकिन आज तक कोई कार्रवाई नही हुई केवल गलत-सलत और बिलकुल झुट निस्तारण दिखाकर शिकायत बन्द कर दी जौहरी इनकलेव कालोनी वार्ड नंबर 41लोनी नगर पलिका परिषद के अन्तर्गत आता है हमारी कालोनी मे पानी की लाइन कुछ गलियो मे आधी अधुरी डालकर छोड दी है मैन रास्तो मे लाइन नही डाली गई है शिकायत नम्बर 40014025009034 दिनांक 6 मार्च 2025 को जनसुनवाई पोर्टल पर दर्ज करवाई जिसके निस्तारण मे पेयजल लाइन का कोई जिक्र नही सडक निर्माण और सीवर लाइन का निस्तारण दिखाकर शिकायत बन्द कर दी शिकायत नम्बर 400140250 22383 दिनांक 25 मई 2025 को दर्ज करवाई शिकायत नम्बर 40014025023299 दिनांक 29मई को लेकिन कोई कार्रवाई नही हुई हम बार बार आधी अधुरी डाली गई पेयजल की लाइन की जांच की मांग कर रहे है शिकायत कर्ता से सम्पर्क नही करते निस्तारण मे झुट लिखते है हम बार बार जनसुनवाई पोर्टल पर दर्ज शिकायत मे मांग कर रहे हैं की डाली गई पेयजल लाइन की प्लास्टिक के पाइप की जांच और टेन्डर की जांच की मांग कर रहे है की ऐसे आधे अधुरे टेन्डर भी छोडे जाते है क्या यहा की जांच नगर पलिका परिषद लोनी से ना करवाई जाए जांच मेरठ मंडल कमीश्नर सहाब की देखरेख मे करवाई जाए सोमवार बाजार रोड पर शिव मंदिर के कोने पर पानी की टंकी लगाकर फोटो भी खिंचकर ले गए जब मैन लाइन है नही पानी कहा से आएगा

परिवहन विशेष न्यूज

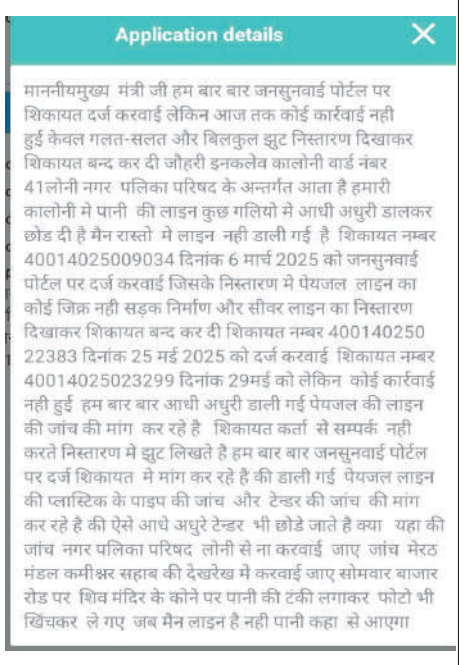

गाजियाबाद। भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार नगर पलिका परिषद लोनी के अधिकारीगण उतर प्रदेश सरकार को बदनाम कर रहे है कार्य कर नही हे है झुटे निस्तारण दिखाकर शिकायत बन्द कर रहे है शिकायत कर्ता से सम्पर्क करते नही है शिकायत का फीडबैक भी अपने आप ही कर लेते है और फीडबैक मे शिकायत कर्ता सन्तुष्ट है दिखाकर निस्तारण कर रहे है शिकायत और निस्तारण देखो हम क्या मांग कर रहे है और निस्तारण क्या दिखाया है हमसे संपर्क किया नही और हम निस्तारण से सन्तुष्ट है दिखा दिया यह हाल उतर प्रदेश मे चल रहा है अधिकारीगण माननीय मुख्य मंत्री जी की सरकार की छवि खराब करने मे लगे है सभी जनसुनवाई पोर्टल पर दर्ज शिकायत का निस्तारण बिलकुल गलत और झूठ दिखाया जा रहा है लोनी नगर पालिका परिषद के अधिकारीगण माननीय जिलाधिकारी जी गाजियाबाद के आदेश का खुलकर उल्लंघन कर रहे है ज़मीनी हकीकत कुछ और है लेकिन अधिकारीगण भ्रष्टाचार के कारण पेपर्स कार्रवाई मे सभी कार्य कर रहे है जनता-जनार्दन को सरकार के खिलाफ करने मे कोई कसर नही छोड रहे है।

(त्यौहार विशेष): हरियाली तीज: परंपरा की जड़ें और आधुनिकता की डालियाँ

हरियाली तीज केवल श्रृंगार, झूला और व्रत का पर्व नहीं, बल्कि भारतीय स्त्री के आत्मबल, प्रेम और प्रकृति से जुड़ाव का प्रतीक है। आधुनिकता की दौड़ में यह त्योहार भले ही प्रदर्शन का माध्यम बनता जा रहा हो, पर इसकी आत्मा अब भी स्त्री के मन, पर्यावरण और लोकसंस्कृति में जीवित है। यह पर्व रिश्तों में स्थायित्व, समाज में समरसता और जीवन में हरियाली लाने का संदेश देता है। आवश्यकता है इसे सादगी, सामूहिकता और संवेदना के साथ फिर से जीने की, ताकि परंपरा आधुनिकता के संग आगे बढ़े।

प्रियंका सौरभ

हरियाली तीज का नाम लेते ही आँखों के सामने एक चित्र उभरता है—हरा चूनर ओढ़े खेत, बारिश की बूंदों से भीगी धरती, झूलती बालाएं, मेंहदी रचे हाथ और लोकगीतों की सुमधुर गूंज। पर यह चित्र अब केवल स्मृति में रह गया है, क्योंकि आधुनिकता की तेज़ रफ्तार ने परंपराओं के रंगों को हल्का कर दिया है। फिर भी हरियाली तीज आज भी भारतीय स्त्रियों के मन में गहरे तक रची-बसी है। यह पर्व आज केवल धार्मिक या पारंपरिक नहीं, बल्कि सामाजिक, मानसिक और सांस्कृतिक संदर्भों में भी विशेष महत्व रखता है।

हरियाली तीज वर्षा ऋतु में मनाया जाने वाला एक प्रमुख पर्व है, जो शिव-पार्वती के पुनर्मिलन की स्मृति में विवाहित महिलाओं द्वारा मनाया जाता है। यह श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया को आता है, जब आसमान बादलों से भर जाता है और धरती पर हरियाली बिछ जाती है। हरियाली तीज का मूल भाव प्रेम, समर्पण, सौंदर्य और प्रकृति के साथ तादात्म्य का है। पहले जहां इस पर्व को गाँवों और कस्बों में सामूहिक रूप से खुले वातावरण में मनाया जाता था, वहीं आज शहरी अपार्टमेंटों, वातानुकूलित हॉलों और सोशल मीडिया की चमक में इसकी आत्मा कहीं खोती जा रही है।

प्रश्न यह नहीं है कि पर्व मनाया जा रहा है या नहीं, प्रश्न यह है कि हम किस भाव से उसे निभा रहे हैं। पहले यह त्योहार स्त्रियों को सालभर की व्यस्तता और परिश्रम से थोड़ी राहत देने वाला, उनके भावनात्मक संसार को सहेजने वाला एक सहज अवसर होता था। स्त्रियाँ बिना किसी दिखावे के, प्राकृतिक परिवेश में एक-दूसरे से मिलती थीं, अपने सुख-दुख साझा करती थीं, लोकगीतों में अपने अनुभवों को पिरोती थीं। लेकिन अब यह पर्व कहीं-कहीं 'सर्वश्रेष्ठ श्रृंगार प्रतियोगिता', 'तीज क्वीन' और 'सेल्फी विद स्विंग' जैसे आयोजनों में तब्दील हो गया है, जहाँ संवेदना की जगह प्रतियोगिता ने ले ली है।

हरियाली तीज स्त्री मन के उस पक्ष को उजागर करता है जो प्रेम, प्रतीक्षा और पारिवारिक समर्पण से जुड़ा होता है। आज के दौर में जब रिश्ते त्वरित संवाद और क्षणिक भावनाओं में बदलते जा रहे हैं, तब यह पर्व स्थायित्व, आस्था और धैर्य का संदेश देता है। यह पर्व यह भी सिखाता है कि संबंधों को केवल अधिकार से नहीं, कर्तव्य और भावना से निभाया जाता है। पति की दीर्घायु के लिए व्रत रखना हो या शिव-पार्वती जैसे दांपत्य संबंधों की कल्पना, इन सबमें एक ऐसा भाव छिपा है जो स्त्री को त्याग का नहीं, बल्कि आत्मबल का प्रतीक बनाता है।

आधुनिक संदर्भ में देखें तो यह पर्व कई नए अर्थों को जन्म देता है। जहां पहले तीज केवल विवाहित स्त्रियों तक सीमित थी, अब कई स्थानों पर इसे अविवाहित लड़कियाँ भी आत्मिक अनुभूति और सामूहिक संस्कृति के रूप में मनाने लगी हैं। कार्यरत महिलाओं के लिए यह पर्व अपने अस्तित्व और सांस्कृतिक पहचान से जुड़ने का एक माध्यम बनता जा रहा है। वही महिलाएं, जो दिनभर कार्यालयों में कंप्यूटर की स्क्रीन के सामने बैठी रहती हैं, तीज के अवसर पर झूला झूलते हुए कुछ पल के लिए प्रकृति के साथ जुड़ जाती हैं। यह जुड़ाव आज की मानसिक थकान और तनाव के दौर में एक भावनात्मक उपचार जैसा है।

परंतु आधुनिकता की यह यात्रा केवल सकारात्मक बदलाव नहीं लाती। तीज अब एक 'सोशल मीडिया इवेंट' बन गया है, जहाँ हर महिला को यह सोचकर श्रृंगार करना पड़ता है कि उसकी फोटो सबसे सुंदर दिखे। फेसबुक और इंस्टाग्राम पर #TeejLook, #GreenDressChallenge और #TeejVibes जैसे ट्रेंड त्योहार को ग्लैमर से तो भरते हैं, पर उसकी आत्मा को खोखला भी करते हैं। त्योहार अब मन की खुशी से ज़्यादा दिखावे की होड़ में शामिल हो गया है। यही कारण है कि त्योहार बीतने के बाद भी मन संतुष्ट नहीं होता, क्योंकि वह जुड़ाव, वह सामूहिकता, वह आत्मीयता अब केवल तस्वीरों में सीमित रह जाती है।

हरियाली तीज की सबसे सुंदर बात यह थी कि यह पर्व हमें प्रकृति के करीब ले जाता था। खेतों में लगे झूले, पेड़ों पर टंगे कागज़ के फूल, मिट्टी से बने शिव-पार्वती के स्वरूप — ये सब हमें याद दिलाते थे कि हम प्रकृति के ही अंश हैं। आज जब हम जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वॉर्मिंग, पेड़ों की कटाई और प्रदूषण जैसे संकटों से जूझ रहे हैं, तब तीज जैसे पर्व हमें पर्यावरण संरक्षण की चेतना दे सकते हैं। अगर हर तीज पर एक पेड़ लगाने की परंपरा शुरू की जाए, अगर बच्चों को झूला झुलाने के साथ-साथ पेड़ से प्रेम करना सिखाया जाए, तो यह पर्व केवल धार्मिक नहीं, पर्यावरणीय आंदोलन बन सकता है।

तीज में महिलाएं लोकगीत गाती थीं, जिनमें नारी की पीड़ा, उसकी उम्मीदें, उसकी हंसी, और उसका समाज से संवाद छुपा होता था। आज वह लोकगीत मोबाइल की रिंगटोन बन चुके हैं या यूट्यूब के व्यूज तक सिमट गए हैं। हमें इन गीतों को फिर से जीवन में लाना होगा। नारी की आवाज़ को उसकी भाषा, उसकी धुन, और उसके लोकसंगीत में फिर से पिरोना होगा। यदि हम सच में महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं तो इन सांस्कृतिक मंचों को पुनर्जीवित करना जरूरी है, क्योंकि यही स्त्रियों को आत्म-अभिव्यक्ति की सबसे स्वाभाविक ज़मीन देते हैं।

आज जब महिलाएं शिक्षा, सेवा, राजनीति और विज्ञान के हर क्षेत्र में भागीदारी निभा रही हैं, तब यह आवश्यक है कि त्योहारों को भी उनके नए रूपों में स्वीकार किया जाए। तीज को केवल पारंपरिक श्रृंगार और व्रत तक सीमित न कर, उसे आत्मचिंतन, सांस्कृतिक संवाद और सामाजिक चेतना से जोड़ना होगा। तीज केवल घर की चारदीवारी में मनाया जाने वाला त्योहार नहीं होना चाहिए, बल्कि यह महिला जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, लोकसंस्कृति संरक्षण और सामाजिक संवाद का अवसर बन सकता है। अगर एक महिला तीज के दिन वृक्षारोपण करे, कुपोषित बच्चों के लिए भोजन बांटे, घरेलू हिंसा के खिलाफ एक संवाद करे, तो वह इस पर्व को नई चेतना दे सकती है।

शहरीकरण और उपभोक्तावाद ने हमारे त्योहारों को उपहारों, महंगे लहंगे और इंस्टाग्राम-योग्य सजावटों में बदल दिया है। तीज अब रेडीमेड परिधानों, ब्यूटी पार्लरों और 'फैशन शो विद झूला थीम' का केंद्र बन गई है। हम भूलते जा रहे हैं कि इस पर्व का सौंदर्य उसकी सादगी में था—माँ के हाथों से बुना गया हरा दुपट्टा, बहन द्वारा सजाया गया झूला, पड़ोसी की दी हुई मेंहदी। यही सादगी त्योहार को उत्सव बनाती थी, यही आत्मीयता इसे जीवंत बनाती थी। अगर आधुनिकता को अपनाते हुए हम सादगी और आत्मीयता को न छोड़ें तो यह पर्व और अधिक समृद्ध बन सकता है।

हरियाली तीज स्त्री मन की वो कविता है, जिसे वह हर वर्ष प्रकृति के पन्नों पर लिखती है। यह पर्व बताता है कि स्त्री केवल त्याग की प्रतिमूर्ति नहीं, बल्कि सृजन की शक्ति है। जब वह झूला झूलती है, तो वह केवल आनंद नहीं लेती, वह समय से संवाद करती है—बीते हुए पलों से, आने वाले कल से। जब वह शिव-पार्वती की पूजा करती है, तो वह केवल धार्मिक कर्म नहीं करती, वह अपने भीतर की ऊर्जा, समर्पण और शक्ति को पहचानती है। और जब वह हरे वस्त्र पहनती है, तो वह केवल श्रृंगार नहीं करती, वह जीवन की हरियाली को अपनाती है।

इसलिए ज़रूरत है कि हम हरियाली तीज को फिर से उसकी आत्मा के साथ जोड़ें। परंपरा और आधुनिकता को विरोधी ध्रुव नहीं, सहयात्री बनाएं। परंपराओं को संजोते हुए नई पीढ़ी को यह समझाएं कि त्योहार केवल कपड़े पहनने और फोटो खिंचवाने का अवसर नहीं, बल्कि जीवन के मूल मूल्यों को जीने का नाम है। अगर हम तीज के इस भाव को समझें, तो यह पर्व हमारे समाज को और भी सुंदर, समावेशी और संवेदनशील बना सकता है।

कानपुर में अगर सुबह 8:00 सड़क पर हुई गंदगी तो फिर कौन करेगा सफाई : नवीन पंडित

– भाजपा पार्षद दल के नेता नवीन पंडित ने की सफाई के लिए सुबह 5:00 से 7 बजे के समय वाले आदेश को वापस लेने की नगर निगम से मांग

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां नगर निगम द्वारा हाल में ही सफाई कर्मचारियों को लेकर एक ऐसा फरमान जारी किया है, जो ना केवल गंदगी कायम रहे के संकल्प को पूरा करने वाला है ,बल्कि सफाई कर्मियों को उनकी जान लेने की हद तक प्रताड़ित करने वाला भी है। यहां तक कि इसकी शुरुआत भी संविदा पर नियुक्त एक सफाई पर्यवेक्षक लगभग 45 साल के संदीप कुमार की असमय मौत से हो चुकी है ,क्योंकि जारी किए गए इसी फरमान के आधार पर सुबह 5:00 बजे सफाई करने वाले समय को लेकर नगर निगम के एक वरिष्ठ अधिकारी ने उसे नौकरी से हटा देने की धमकी भी दी थी। जिसकी वजह से बहुत तनाव में तनाव में था। इसी के बाद अचानक उसकी हालत बिगड़ गई। जानकारी होने पर पार्षद दल के नेता नवीन पंडित ने उसे तत्काल ही हालत अस्पताल में भर्ती कराया ,जहां इलाज के दौरान उसकी मृत्यु हो गई। जिसकी वजह हार्ट अटैक बताई गई है।

जहां तक सफाई पर्यवेक्षक संदीप कुमार की असमय मौत का कथित रूप से कारण बनने वाले आदेश का सवाल है। इस फरमान के मुताबिक जो भी सफाई कर्मी सुबह 5:00 बजे संबंधित वार्ड में सफाई करने नहीं जाएगा। उसे वापस कर दिया जाएगा।

अब यहीं पर सवाल उठता है कि अगर अधिकांश सफाई कर्मचारी सुबह पांच बजे नहीं पहुंचने पर वापस कर दिए गए तो इसका परिणाम क्या होगा ? इसका उत्तर है - संबंधित वार्डों में सफाई भी कदापि नहीं की जा सकेगी। जिसकी वजह से आम जनता के गुस्से का शिकार ना केवल संबंधित वार्डों के सभासदों को होना पड़ेगा बल्कि इससे भाजपा का वोट बैंक भी बुरी तरह से प्रभावित होगा। यही वजह

है कि पार्षद दल के नेता नवीन पंडित ने इस फरमान को तत्काल वापस दिए जाने की मांग भी की है। पार्षद दल के नेता नवीन पंडित पंडित यह भी सवाल उठाते हैं कि जारी आदेश निर्देश के मुताबिक प्रातः 5:00 बजे से 7:00 बजे तक मुख्य मार्गो की साफ-सफाई, कूड़ा उठान का कार्य पूरा किए जाने के बाद भी अगर सुबह 7:30 या 8:00 बजे आवारा कुत्तों और गायों आदि ने जगह-जगह फिर गंदगी कर दी तो फिर उसे साफ करने कौन आएगा ?

समस्याओं के खिलाफ अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत से ही सफल जुझारू तेवरों वाले पार्षद दल के नेता नवीन पंडित ने कहा कि यही वजह है कि जारी किया गया फरमान किसी भी दृष्टिकोण से आम जनता के हित में नहीं है। साथ ही यह फरमान सफाई कर्मियों की कार्य क्षमता को भी प्रभावित करते हुए उनके मनोबल को भी गिरने वाला है।

पीड़ितों की तत्काल सहायता के लिए भी चर्चित वरिष्ठ भाजपा नेता नवीन पंडित ने बताया कि इस फरमान को तत्काल वापस लिया जाना चाहिए ताकि सफाई कर्मचारी तनाव मुक्त होकर पूरे उत्साह के साथ शहर को स्वच्छ बनाने के सरकार के संकल्प को पूरा कर सके।

लोकतंत्र या "लोकतंतर" - एक त्रुटि मात्र या गंभीर असावधानी ?

संसद परिसर में आयोजित लोकतंत्र बचाओ आंदोलन के बैनर पर स्पेलिंग मिस्टेक ने राजनीतिक सामाजिक भाषाई क्षेत्रों में नई बहस छिड़ी
जब कोई शब्द संविधान राजनीति आध्यात्मिकता या जनता की चेतना से जुड़ा हो तब उसमें एक मामूली सी त्रुटि भी व्यापक बहस का विषय बन जाती है–**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं की गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ में भारत ही एक ऐसा अकेला देश है,जहां हजारों की संख्या में भाषाएँ, बोलियां है जो भारत की बेहद खूबसूरत पहचान है,फिर भी उसमें से 22 भाषाओं को संवैधानिक दर्जा प्राप्त है,यानें सूची में दर्ज है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूँ कि फिर भी हर भाषा बोली का सम्मान भारत में है, यानें अगर किसी भी बोली भाषा में उसका सम्मान,आध्यात्मिकता जातिवाचक या उस समाज की चेतना से जुड़ा कोई शब्द हो व उसे त्रुटि पूर्ण रूप से लिखा या बोला जाए तो, द्वेष बढ़ने की संभावना होगी, जिसमें दंगा दुश्मनी विवाद तक हो सकता है इसलिए सार्वजनिक आंदोलन स्थान बैनरों प्रचार माध्यमों में शब्दों का चयन सोच समझ कर करना चाहिए।मुझे इसका प्रेक्टिकल अनुभव है,मैं एक धार्मिक वर्सीमहोत्सव में बैठा था, वहां देखा कि गायनकर्ता व आयोजनकर्ता अलग-अलग भाषी थे,वहां गायनकर्ता ने एक ऐसा शब्द बोला और उसपर प्रेशर देकर बोल रहा था, जो आयोजनकर्ता समाज की भाषा में गाली थी सब हक्के- बक्के रह गए तो किसी ने गायककर्ता के कान में जाकर इस शब्द का अर्थ बताया तो गायनकर्ता ने अपनी गलती सुधार ली। आज हम शब्दों की सतर्कता की बात इसलिए कर रहे हैं क्योंकि 24 जुलाई 2025 को मैंने टीवी चैनल पर देखा कि संसदभवन परिसर में कांग्रेस सहित अनेको पार्टियों के बड़े-बड़े फ्रंटलाइन लीडर नेता लोकतंत्रबचाओ आंदोलन कर रहे थे, तो मेरा ध्यान उनके बैनर पर गया जहां लिखा था एसआईआर ₹लोकतंतर₹ पर वार मैं हका- बक्का रह गया, फिर सोशल मीडिया खोला तो वहां इस घटना पर धूममची हुई थी, इसीलिए मैंने इस विषय को आर्टिकल के लिए चुना। हालांकि 25 जुलाई 2025 को फिर संसद भवन में आंदोलन देखा तो यह त्रुटि ठीक कर बैनर पर ₹लोकतंत्र₹ लिखा था, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, लोकतंत्र या "लोकतंतर" एक त्रुटि मात्र या गंभीर असावधानी ?

साथियों बात अगर हम संसद भवन परिसर में हुए लोकतंत्र बचाओ आंदोलन में लोकतंत्र की जगह लिखने का प्रभाव और उसके परिणाम की करें तो भारतीय लोकतंत्र की आत्मा ही उसकी जनता में निहित है। जब भी इसकी गरिमा पर आंच आती है, तो देश के जनप्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता और नागरिक आवाज़ उठाते हैं। लेकिन जब इसी लोकतंत्र को बचाने के नाम पर आयोजित आंदोलन में उसके नाम की ही वर्तनी गलत हो जाए-"लोकतंत्र" के स्थान पर "लोकतंतर" लिखा जाए-तो सवाल केवल भाषा या व्याकरण का नहीं रह जाता, बल्कि यह चूक प्रतीक बन जाती है गंभीर असावधानी और खोखले नारों की।हाल ही में संसद परिसर में "सांसद परिवार" द्वारा आयोजित ₹लोकतंत्र बचाओ आंदोलन₹ के बैनर पर हुई ऐसी ही गलती ने राजनीतिक, सामाजिक और भाषाई हलकों में नई बहस छेड़ दी है। राजनीतिक संदेश और उसकी धार कुंदराजनीतिक आंदोलनों में प्रतीक और भाषा ही सबसे बड़े हथियार होते हैं।₹लोकतंत्र बचाओ₹का नारा सत्ता के विरुद्ध एक गंभीर प्रश्नचिन्ह होता है। लेकिन अगर यही नारा टाइपो की वजह से₹लोकतंतर बचाओ₹ बन जाए, तो विरोध की धार कमजोर हो जाती है। राजनीतिक विरोध का प्रभाव इस बात पर भी निर्भर करता है कि वह कितना व्यवस्थित, संजीदा

और संगठित दिखता है। बैनर पर ऐसी गलती इस गंभीर आंदोलन को हास्यास्पद बना देती है।

साथियों बात अगर हम लोकतंत्र बनाम लोकतंत्र या "लोकतंतर" यह भूल या लापरवाही की करें तो,लोकतंतर' बनाम 'लोकतंत्र' -एक भाषाई विश्लेषणहिंदी में "तंत्र" शब्द का अर्थ होता है-व्यवस्था याप्रणाली। "लोक" और "तंत्र" मिलकर बना "लोकतंत्र" अर्थात जनता की शासन व्यवस्था लेकिन "तंतर" शब्द का कोई स्वतंत्र या प्रचलित अर्थ नहीं है ।ऐसे में "लोकतंतर"न केवल गलत है, बल्कि भाषा की दृष्टि से एक निरर्थक शब्द है। यह भूल किसी आम कार्यक्रम में होती, तो शायद चर्चा तक नहीं होती। पर यह आंदोलन लोकतंत्र की रक्षा के नाम पर आयोजित किया गया था। और इसी का नाम ही विकृत हो जाए, तो यह विडंबना नहीं तो और क्या है ?, भूल या बेपरवाही ?ज़ब देश की सबसे बड़ी संवैधानिक संस्था-संसद के सामने कोई राजनीतिक प्रदर्शन होता है, तो उससे जुड़े हर प्रतीक, हर शब्द और हर भाव का विशेष महत्व होता है। ऐसे में "लोकतंत्र" जैसा भारी-भरकम शब्द अगर "लोकतंतर" बन जाए, तो यह सामान्य टाइपो नहीं मानी जा सकती। यह या तो तैयार करने वालों की अज्ञानता दर्शाता है या फिर गंभीर लापरवाही।

साथियों बात अगर हम सोशल मीडिया पर आलोचना व्यंग्य सहित तीखी प्रतिक्रिया की करें तो,इस घटना के बाद सोशल मीडिया पर तीखी प्रतिक्रियाएं आईं। ट्विटर, इंस्टाग्राम और फेसबुक पर लोगों ने "लोकतंतर" को लेकर मीम्स बनाए, वीडियो बनाए और व्यंग्यात्मक टिप्पणियों से इस आंदोलन की गंभीरता पर सवाल उठाए। विपक्षियों को भी बैठे-बिठाए एक मुद्दा मिल गया, "जो लोग लोकतंत्र की रक्षा की बात कर रहे हैं, उन्हें उसकी सही स्पेलिंग तक नहीं आती।"इस गलती ने सीधे-सीधे कांग्रेस पार्टी और उससे जुड़े सांसद परिवार की छवि पर चोट पहुंचाई है। आंदोलन जितना महत्वपूर्ण था, उतनी ही जरूरी थी उसकी पेशकश की परिपक्वता। देश के जागरूक वर्ग ने यह सवाल भी उठाया कि क्या आज के राजनेताओं की भाषा, ज्ञान और प्रस्तुतिकरण पर इतना कम ध्यान रह गया है कि वे देश के मूल विचारों के साथ भी ऐसी असावधानी बरतते हैं ?

साथियों बात अगर हम क्या यह अज्ञानता की निशानी है ? और भविष्य के लिए सबक सीखने की करें तो, यह सवाल अहम है,क्या यह गलती मात्र एक टाइपिंग एरर थी या फिर यह दर्शाता है कि आज का राजनीतिक नेतृत्व भाषा, विचार और संवैधानिक शब्दावली के प्रति कितना सजग या लापरवाह हो गया है ? जब नेताओं से भाषण, बैनर और संवाद की अपेक्षा की जाती है, तब यह जरूरी है कि वे न्यूनतम भाषाई योग्यता और सजगता प्रदर्शित करें। इस गलती से यह संदेश गया कि आज के जनप्रतिनिधि न तो आत्मनिरीक्षण कर रहे हैं और न ही तैयारी ।भविष्य के लिए सबक, यह घटना सभी राजनीतिक दलों के लिए एक चेतावनी है कि वे केवल नारेबाज़ी से नहीं, बल्कि पूरी तैयारी,ज्ञान औरजागरूकता के साथ सामने आएं। (1) प्रस्तुति की गुणवत्ता पर ध्यान देना चाहिए। (2) भाषाई शुद्धता को प्राथमिकता दी जाए। (3) प्रत्येक आंदोलन या विरोध की विश्वसनीयता उसमें दिखने वाली गंभीरता से तय होती है लोकतंत्र₹ की रक्षा केवल भाषणों, विरोध और आंदोलनों से नहीं होती, बल्कि उस सोच, भाषा और व्यवहार से होती है जिसमें वह व्यक्त होता है। "लोकतंतर" जैसा गलत शब्द केवल एक टाइपिंग मिस्टेक नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक सोच में आई चूक का प्रतीक बन गया है। इसे केवल व्याकरण की भूल समझकर टालना नहीं चाहिए, बल्कि इसे आत्ममंथन का अवसर बनाना चाहिए कि क्या हम वाकई उस मूल भावना की रक्षा कर रहे हैं जिसे हम बचाना कहते हैं ?

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि लोकतंत्र या "लोकतंतर" एक त्रुटि मात्र या गंभीर सावधानी ?संसद परिसर में आयोजित लोकतंत्र बचाओ आंदोलन के बैनर पर स्पेलिंग मिस्टेक ने राजनीतिक सामाजिक भाषाई क्षेत्रों में नई बहस छिड़ी,ज़ब कोई शब्द संविधान राजनीति आध्यात्मिकता या जनता की चेतना से जुड़ा हो तब उसमें एक मामूली सी त्रुटि भी व्यापक बहस का विषय बन जाती है।

नए रंगरूप में पेश हुई 2026 कावासाकी Versys 650, अपग्रेडेड फीचर्स समेत पावरफुल इंजन से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

कावासाकी ने यूरोपीय बाजार में 2026 Kawasaki Versys 650 पेश की है जो लंबी दूरी के सफर के लिए आरामदायक है। इस बाइक के मैकेनिक्स में कोई बदलाव नहीं किया गया है लेकिन कलर ऑप्शंस और टेक्नोलॉजी को नया रूप दिया गया है। इसमें 649cc का इंजन है जो 66bhp की पावर देता है। 4.3 इंच की TFT डिस्प्ले ब्लूटूथ कनेक्टिविटी और KTRC जैसे फीचर्स भी हैं।

नई दिल्ली। कावासाकी ने अपनी मिडलवेट स्पोर्ट-टूरर बाइक 2026 Kawasaki Versys 650 को योरिपयन बाजार में पेश किया है। यह बाइक उन राइडर्स के लिए खास है जो लंबी दूरी के सफर में आराम तो चाहते हैं, लेकिन परफॉर्मेंस और एगिलिटी से समझौता नहीं करना चाहते। इस बार कंपनी ने बाइक के मैकेनिकल्स को हाथ नहीं लगाया है, लेकिन कलर ऑप्शंस और टेक्नोलॉजी में जरूर ताजगी लाने की कोशिश की गई है।

नया लुक और रिफ्रेश्ड डिजाइन

2026 Kawasaki Versys 650 अब तीन नए और फ्रेश कलर ऑप्शन ब्लू, रेड और ब्रांड का सिग्नेचर ग्रीन में मिलेगी। बाइक का ओवरऑल डिजाइन वही शार्प स्टाइलिंग लिए हुए है जो Versys 1100 से इंस्पायर्ड है। इसमें ट्विन LED हेडलाइट्स, एग्रेसिव फ्रंट बीक, मस्क्युलर फ्यूल टैंक और कॉम्पैक्ट रियर सेक्शन जैसी सुविधाएं दी गई है। चेसिस में स्टील फ्रेम के साथ फ्रंट में USD फोर्क और रियर में मोनोशॉक सस्पेंशन दिया गया है, जिससे राइड क्वालिटी बेहतर और कंट्रोल्ड रहती है।

इंजन और परफॉर्मेंस

2026 Kawasaki Versys 650 में वही 649cc, लिक्विड-कूल्ड, ट्विन-सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 66bhp की पावर और 61Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह इंजन Euro-5 एमिशन नॉर्म्स के अनुरूप है और 6-स्पीड गियरबॉक्स से लैस है। इसका मिड-रेंज परफॉर्मेंस शानदार है, जो हाईवे क्रूजिंग और सिटी राइडिंग दोनों में बैलेंस्ड अनुभव देता है।

फीचर्स और राइडर एड्स

2026 Kawasaki Versys 650 में 4.3-इंच की फुल-कलर TFT डिस्प्ले दिया गया है, जो राइडर को क्लियर विजिबिलिटी देती है। इसमें Rideology ऐप से ब्लूटूथ कनेक्टिविटी भी सपोर्ट करती है और वॉयस कमांड फीचर भी इसमें दिया गया है। इसके अलावा, ऑल-LED लाइटिंग और Kawasaki Traction Control (KTRC) जैसे सेफ्टी फीचर्स अब स्टैंडर्ड मिलते हैं।

टूरिंग के लिए शानदार बाइक

2026 Kawasaki Versys 650 को खासतौर पर टूरिंग के लिए डिजाइन किया गया है। इसमें अपराइट राइडिंग पोजिशन, आरामदायक सीट और एडजस्टेबल विंडस्क्रीन दी गई है जो लॉन्ग राइड के दौरान हवा का असर कम करती है और थकान से राहत देती है। कंपनी इसके साथ कई फैक्ट्री-फिटेड एक्सेसरीज़ भी देती है जैसे पैनियर, टॉप बॉक्स और वन-की सिस्टम। बाइक को तीन ट्रिम्स में भी पेश किया जाएगा—Tourer, Tourer Plus और Grand Tourer—जिनमें एडिशनल इक्विपमेंट्स होंगे।

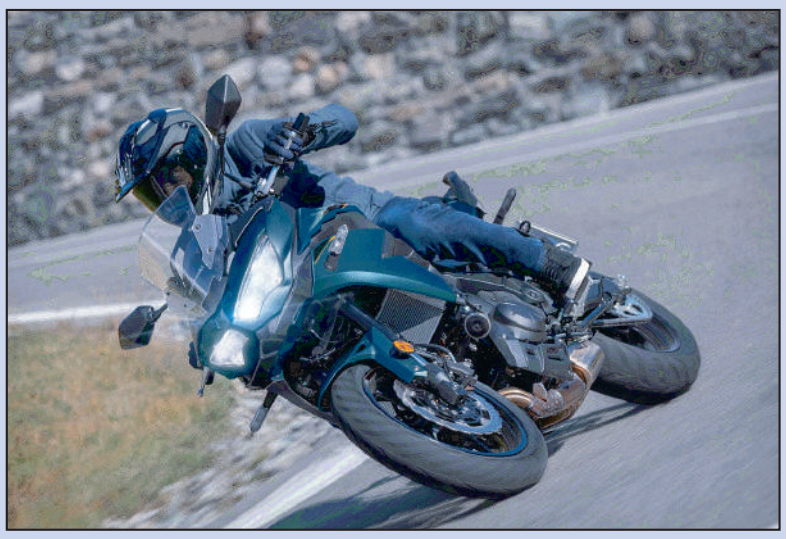

ग्रीव्स ने लॉन्च किया इलेक्ट्रिक ऑटो रिक्शा, 170km रेंज समेत कई बेहतरीन फीचर्स से है लैस

ग्रीव्स इलेक्ट्रिक ने भारत में अपनी नई इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर ऑटो रिक्शा Eltra City XTRA को लॉन्च किया है। यह लंबी दूरी की ड्राइविंग रेंज के साथ आता है और एक चार्ज में 170km तक चल सकता है। इसमें 10.75 kWh की बैटरी है और यह 9.5 kW की पावर जनरेट करता है। सुरक्षा के लिए इसमें रेइन्फोर्स्ड साइड पैनल्स और रियर विजुअल बैरियर जैसे फीचर्स हैं।

नईदिल्ली। Greaves इलेक्ट्रिक ने भारत में अपनी नई इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर ऑटोरिक्शा Eltra City XTRA को लॉन्च किया है। इसे कई बेहतरीन फीचर्स के साथ भारत में लॉन्च किया गया है। इसमें लंबी दूरी की ड्राइविंग रेंज के साथ लेकर आया गया है। हाल ही में इसने एक चार्ज में बेंगलुरु से रणिपेट तक 324km की दूरी तय करके India Book of Records में भी अपना नाम दर्ज करवाया है।

डिजाइन और सुरक्षा

Greaves Eltra City XTRA को पुराने तीन पहिए वाले ऑटो की पारंपरिक डाइमेंशन के साथ लेकर आया गया है, लेकिन इसमें कई एडवांस और सेफ्टी से जुड़े फीचर्स दिए गए हैं। इसमें दुर्घटना की स्थिति में ज्यादा सेफ्टी के लिए रेइन्फोर्स्ड साइड पैनल्स, सवारी की प्राइवेसी और सेफ्टी के लिए रियर विजुअल बैरियर, बेहतर स्टेबिलिटी, बड़ी ग्राउंड क्लीयरेंस और लेटेस्ट लुक के लिए 12-इंच रेडियल ट्यूबलेस टायर के साथ ही 180mm बड़े ब्रेक ड्रम्स दिए गए हैं।

फीचर्स और तकनीक

Greaves Eltra City XTRA में 6.2-इंच PMVA डिजिटल क्लस्टर दिया गया है, जो Distance-to-Empty (DTE), नैविगेशन असिस्ट जैसे रियल-टाइम डेटा जैसी जानकारी देता है। इसमें सवारी व ड्राइवर के लिए स्मार्ट ऑप्शन और सेफ्टी के लिए स्मार्ट कनेक्टेड फीचर्स के साथ ही ड्राइवर फ्रेंडली डैशबोर्ड डिजाइन दिया गया है।

बैटरी पैक और ड्राइविंग रेंज

Greaves Eltra City XTRA में 10.75 kWh IP67-रेटेड LFP बैटरी दी गई है। यह बैटरी फुल चार्ज होने के बाद 170km (ड्राइवर + 3 सवारी) की दूरी तक का सफर किया जा सकता है। इसमें लगा हुआ इलेक्ट्रिक मोटर 9.5 kW की पावर जनरेट करता है। इसे फुल चार्ज होने में 4-5 घंटे का समय लगता है। इसकी टॉप स्पीड 60km/h है।

कितनी है कीमत?

Greaves Eltra City XTRA को 3.57 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। कंपनी इसे खरीदने वाले ग्राहकों को बैटरी पर 5 साल/1.2 लाख किमी की वारंटी और 3 साल/80,000 किमी की व्हीकल वारंटी ऑफर किया जा रहा है। यह व्हीकल खास तौर पर फ्लीट और कमर्शियल ऑपरेटर्स को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है

येजदी रोडस्टर को मिलेगा नया डिजाइन और इंजन ट्वीक, 12 अगस्त को होगी लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

Yezdi मोटरसाइकिल्स 12 अगस्त को भारत में अपनी लोकप्रिय क्रूजर बाइक Yezdi Roadster का अपडेटेड वर्जन लॉन्च करने जा रही है। बाइक के लुक और परफॉर्मेंस दोनों में सुधार किए गए हैं। डिजाइन में बदलाव और नए फीचर्स शामिल किए जा सकते हैं। इंजन को रीट्यून किया जा सकता है जिससे परफॉर्मेंस बेहतर होगी। उम्मीद है कि अपडेटेड Yezdi Roadster की कीमत मौजूदा मॉडल से थोड़ी ज्यादा हो सकती है।

नई दिल्ली। Yezdi Motorcycles भारत में 12 अगस्त को अपनी पॉपुलर क्रूजर बाइक Yezdi Roadster का अपडेटेड वर्जन को लॉन्च करने जा रही है। इस बार कंपनी ने बाइक के लुक और परफॉर्मेंस दोनों में कई सुधार किए हैं। जैसा हाल ही ही में लॉन्च हुई Yezdi Adventure के अपडेटेड मॉडल में देखने के लिए मिला था। कुछ वैसा ही अपडेट Roadster में भी देखने के लिए मिल सकता है।

डिजाइन और स्टाइलिंग में होगा बदलाव

लॉन्च से पहले ही नई Yezdi Roadster के टेस्टिंग मॉडल को कई बार भारत की सड़कों पर देखा जा चुका है, जिसमें इसका डिजाइन बदला हुआ दिखाई दिया है। बाइक में रिफ्रेश्ड टर्न इंडिकेटर्स और नया टेल सेक्शन में भी बदला हुआ देखने के लिए मिल सकता है। इसके पिछले हिस्से में शॉर्ट फेंडर्स देखने के लिए मिल सकता है, जिससे यह बाइक अब पहले से ज़्यादा क्रूजर जैसी दिखाई देगी।

इसके साथ ही नया पिलियन सीट पहले की तुलना में छोटा देखने के लिए मिल सकता है, जो इसकी क्रूजर अपील और भी ज्यादा बेहतर कर देगा। बाइक की डुअल एग्जॉस्ट सेटअप को बरकरार रखा जा सकता है, जो इसकी क्लासिक पहचान को बनाए रख सकता है। इसके साथ ही इसे नए कलर ऑप्शन भी दिए जा सकते हैं।

इंजन और परफॉर्मेंस

फिलहाल Yezdi Roadster में 334cc का सिंगल-सिलेंडर, लिक्विड-कूल्ड इंजन दिया गया है, जो 29 hp की पावर और 29.4 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इस इंजन के साथ 6-स्पीड गियरबॉक्स मिलता है। नई अपडेटेड बाइक में इंजन को रीट्यून किया जा सकता है, जिससे इसकी परफॉर्मेंस और स्मूथ हो सकती है।

सस्पेंशन और ब्रेकिंग

सस्पेंशन सेटअप की बात करें तो इसमें सामने टेलीस्कोपिक फोर्क्स और पीछे ट्विन शॉक एब्जॉर्बर्स मिलते हैं। ब्रेकिंग के लिए फ्रंट में 320mm और रियर में 240mm का डिस्क ब्रेक दिया गया है, जो फ्लोटिंग कैलिपर के साथ आता है।

कितनी होगी कीमत?

नए अपडेट को देखते हुए उम्मीद है कि Yezdi Roadster की कीमत पहले के मुकाबले ज्यादा हो सकती है। फिलहाल इसकी शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 2.10 लाख रुपये है।

टाटा हैरिआर ईवी की बढ़ी बहुत ज्यादा डिमांड, करना होगा 6 महीने से ज्यादा का इंतजार

टाटा मोटर्स ने नई इलेक्ट्रिक Tata Harrier EV को लॉन्च किया जिसे 24 घंटे में 10000 बुकिंग मिली। इस इलेक्ट्रिक SUV का वेटिंग पीरियड 30 हफ्तों तक पहुंच गया है। यह दो बैटरी ऑप्शन के साथ आती है जो 627 किमी तक की रेंज देती है। इसकी कीमत 21.49 लाख रुपये से शुरू होती है। यह BYD Atto 3 और Mahindra XEV 9e को टक्कर देगी।

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स ने हाल ही में नई इलेक्ट्रिक SUV Harrier EV को भारतीय बाजार में लॉन्च किया है। इस कार के लॉन्च होने के बाद ही महज 24 घंटे के भी भीतर करीब 10,000 बुकिंग मिली थी, जो इस सेगमेंट में एक नया रिकॉर्ड है। इसे पावरफुल परफॉर्मेंस, दमदार फीचर्स और शानदार रेंज के साथ लेकर आया गया है। इसमें मिलने वाले फीचर्स की वजह से इसकी डिमांड लगातार बढ़ती जा रही है। अब इस इलेक्ट्रिक SUV का वेटिंग पीरियड 12 हफ्तों से लेकर 30 हफ्तों तक पहुंच गया है।

वैरिएंट के हिसाब से वेटिंग पीरियड

Tata Harrier EV को तीन में ट्रिम में पेश किया जाता है, जो Adventure, Fearless+, और Empowered है।

वेरिएंट कैटेगरी	वेरिएंट नाम अनुमानित डिलीवरी समय (EDD)
Empowered 75 kWh ACFC	Harrier EV Empowered 75 ACFC 12-15 हफ्ते
Harrier EV Empowered ST 75ACFC	12-15 हफ्ते
Harrier EV Empowered AWD 75ACFC	12-15 हफ्ते
Harrier EV Empowered AWD ST 75FC	12-15 हफ्ते
Empowered 75 kWh	Harrier EV Empowered 75 12-15 हफ्ते
Harrier EV Empowered ST 75	12-15 हफ्ते
Harrier EV Empowered AWD 75	12-15 हफ्ते
Harrier EV Empowered AWD ST 75	12-15 हफ्ते
Adventure 65 kWh	Harrier EV Adventure 65 28-30 हफ्ते
Harrier EV Adventure 65 ACFC	28-30 हफ्ते
Harrier EV Adventure S 65	18-21 हफ्ते
Harrier EV Adventure S 65 ACFC	18-21 हफ्ते
Fearless+ 75 और 65 kWh	Harrier EV Fearless+ 65 18-21 हफ्ते
Harrier EV Fearless+ 65 ACFC	18-21 हफ्ते
Harrier EV Fearless+ 75	18-21 हफ्ते
Harrier EV Fearless+ 75 ACFC	18-21 हफ्ते

परफॉर्मेंस और बैटरी

Tata Harrier EV दो बैटरी ऑप्शन 65 kWh और 75 kWh बैटरी पैक के साथ ऑफर की जाती है। इसकी 65 kWh बैटरी 538 किमी और 75 kWh की बैटरी 627 किमी तक की ड्राइविंग रेंज देती है। इन बैटरियों को IP67 रेटिंग और लिक्विड कूलिंग सिस्टम से लैस किया गया है। कंपनी इन पर लाइफटाइम वारंटी और अनलिमिटेड किमी की गारंटी दे रही है।

इसे दो ड्राइविंग वेरिएंट RWD और AWD में ऑफर किया जाता है। इसका RWD वेरिएंट 238 PS की पावर और 315 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसक AWD वेरिएंट डुअल मोटर सिस्टम के साथ 504 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। AWD में Boost Mode मिलता है, जिससे SUV सिर्फ 6.3 सेकंड में 0-100 km/h की स्पीड पकड़ लेती है।

इसमें कई ड्राइविंग मोड्स और ऑफ-रोडिंग कैपेबिलिटी मिलती है। इसके RWD में Eco, City और Sport मोड दिया जाता है और AWD में Extra Boost Mode मिलता है। Fearless+ और Base वेरिएंट्स में Normal, Wet, और Rough टेरेन मोड दिया जाता है। Empowered RWD में Custom Mode और Empowered AWD में 6 टेरेन मोड Normal, Snow/Grass, Mud-Ruts, Sand, Rock Crawl, और Custom दिया जाता है।

कितनी है कीमत?

Tata Harrier EV को 21.49 लाख रुपये से लेकर 30.23 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है। भारत में BYD Atto 3 और Mahindra XEV 9e जैसी इलेक्ट्रिक कार से देखने के लिए मिल रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत शुरू की गई नई संरचना वर्ग संरचना को वर्गीकृत करती है

विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ने देश भर में शिक्षा की समग्र गुणवत्ता में सुधार करने के उद्देश्य से सीखने के परिणामों और कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा क्षेत्र में कई बदलाव किए। 3 साल की उम्र में स्कूल शुरू करने से लेकर लचीले कॉलेज की डिग्री, अनिवार्य शिक्षक योग्यता और भारतीय ज्ञान में निहित नए युग के पाठ्यक्रम, एनईपी 2020 भविष्य के लिए तैयार शिक्षा ढांचे का वादा करता है।

यहां हर छात्र, माता-पिता और शिक्षक को 6 बड़े बदलाव बताए गए हैं:

1.। मल्टीपल एंट्री और एग्जिट ऑप्शन के साथ 4 साल का अंडरग्रेजुएट प्रोग्राम एनईपी 2020 ने कई प्रवेश और निकास विकल्पों के साथ नए 3 और 4 वर्षीय स्नातक (यूजी) कार्यक्रम पेश किए। कार्यक्रम में एक वर्ष के बाद छोड़ने का विकल्प चुनने वाले छात्रों को एक प्रमाण पत्र, 2 साल बाद डिप्लोमा, या 3 या 4 साल के कार्यक्रम के बाद स्नातक की डिग्री से सम्मानित किया जाएगा।

2.। कक्षाएं आयु 3 से शुरू होती हैं पहले की 10 + 2 संरचना में 10 साल की प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा और दो साल की उच्च माध्यमिक शिक्षा शामिल थी। एनईपी 2020 के तहत शुरू की गई नई संरचना वर्ग संरचना को चार श्रेणियों में वर्गीकृत करती है - फाउंडेशनल, तैयारी, मध्य और माध्यमिक।

फाउंडेशनल स्टेज (उम्र 3-8): प्री-स्कूल के 3 साल (उम्र 3-5) और कक्षा 1-2 (उम्र 6-7) शामिल हैं प्रारंभिक चरण (आयु 8-11): कक्षा 3-5 मध्य चरण (आयु 11-14): कक्षा 6-8 माध्यमिक चरण (आयु 14-18): कक्षा 9-12 यह नई संरचना एक बच्चे की विकासात्मक जरूरतों के साथ सीखने को संरेखित करने के लिए डिज़ाइन की गई है। 3। परख सर्वेक्षण एनईपी 2020 ने परख सर्वेक्षण पेश किया, जिसका उद्देश्य छात्र मूल्यांकन के माध्यम से शिक्षा की समग्र गुणवत्ता में सुधार करना है। उदाहरण के लिए, सर्वेक्षण यह आकलन करता है कि कक्षा 3 के छात्र कितने प्रतिशत पढ़ और लिख सकते हैं, और कितने 100 रुपये का उपयोग करके एक साधारण लेनदेन कर सकते हैं। यह सर्वेक्षण दिसंबर 2024 में आयोजित किया गया था और परिणाम जुलाई 2025 में जारी किए गए थे, जिसमें कक्षा 3, 6 और 9 में महत्वपूर्ण सीखने की कमी दिखाई गई थी। परख, जो एक राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र है, परीक्षा से संबंधित सुधारों को विकसित करने के लिए स्कूली शिक्षा के बोर्डों के साथ सीधे काम करता है और स्कूलों को छात्रों और शिक्षा के समग्र विकास का समर्थन करने के लिए आवश्यक परिवर्तन करने में मदद करता है।

4। व्यावसायिक शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा में किसी विशेष नौकरी के लिए आवश्यक व्यावहारिक कौशल और ज्ञान पढ़ाना शामिल है। 12 वीं पंचवर्षीय योजना में अनुमान लगाया गया था कि 19-24 वर्ष की आयु के केवल 5 प्रतिशत भारतीय छात्रों की व्यावसायिक शिक्षा तक पहुंच थी, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में, संख्या क्रमशः 52, 75 और 96 प्रतिशत थी। एनईपी 2020 का उद्देश्य मध्यम और माध्यमिक स्कूलों में 2025 तक कम से कम 50 प्रतिशत छात्रों के लिए मुख्यधारा की शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों को एकीकृत करना है।

5.। भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर नए पाठ्यक्रम एनईपी 2020 ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली पर एक वैकल्पिक पाठ्यक्रम पेश किया। इस पाठ्यक्रम में प्राचीन भारत से ज्ञान और आधुनिक भारत में इसके योगदान शामिल हैं। इस नए पाठ्यक्रम को गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषाविज्ञान, साहित्य, खेल, खेल, साथ ही शासन, राजनीति और संरक्षण जैसे विभिन्न विषयों के साथ एकीकृत किया जाएगा।

6। आवश्यक शिक्षण के लिए न्यूनतम 4 साल की डिग्री उम्मीदवारों को अनिवार्य रूप से चार साल के एकीकृत बी.एड. शिक्षक की भूमिका के लिए योग्य बनने का कार्यक्रम। यह चार साल का कार्यक्रम एक दोहरी-प्रमुख होगा, जिसमें स्नातक की शिक्षा और एक विशेष विषय जैसे भाषा, इतिहास, संगीत, गणित, कंप्यूटर विज्ञान, रसायन विज्ञान, अर्थशास्त्र, कला, शारीरिक शिक्षा आदि शामिल होंगे। यह कार्यक्रम 2030 तक शिक्षक की भूमिका के लिए आवश्यक न्यूनतम योग्यता बन जाएगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

घुटनों का ज्वाइंट पेन सायटिका दर्द जोड़ो का दर्द ठीक होता है

सिंहनाथ गुग्गुल और योगराज गुग्गुल 2,2 गोली पुनर्नवा मंडूर दो दो गोली देनी होती है !

सुबह शाम भोजन के तीस मिनिट बाद यह बनाकर रखे समस्त वात रोगों के लिए ...

बबूल की फली,40 ग्राम,
पुनर्नवा,20 ग्राम,
सोंठ,10 ग्राम,
अजवाइन,10 ग्राम,
मेथी,10 ग्राम,
गिलोय,10 ग्राम,
हढ़जोड़,10 ग्राम,
गोदंती भस्म,5 ग्राम,
शंख भस्म,5 ग्राम,
स्वर्णमाक्षिक भस्म,2.5 ग्राम,
शुद्ध कुचला,7.5ग्राम स
भी का पाउडर करके मिक्स करके घुटाई करके डिब्बे में भरकर रखे ओर दो दो ग्राम सुबह शाम भोजन के तीस मिनिट बाद पानी से देवे यह नुस्ख़ा काफ़ी सालों से मैं आजमा जा रहा है बहुत अछे रिज़ल्ट मिले है

परहेज़...

कॉफ़ी अचार खट्टी तली भुनी होई मसालेदार चीजे नहीं खाए

पेट साफ करने के लिय पंचस्कार चूर्ण 100, ग्राम में लवण 20 ग्राम मिलाकर मिक्स करके एक चमच रात को सोते समय एक कप गरम पानी में तीन चमच एरंड तेल डालकर सेवन कराए ।

इससे पेट खुलकर साफ होगा वायु जो शरीर में फंसी हुई हे बाहर निकलेगी रोजाना सेवन कराए 7 दिनो तक फिर 2 दिन गैप करके वापस देवे..

▪आयुर्वेद अपनाएं स्वस्थ जीवन पाएं..

5 हजार सरकारी स्कूल बंद करके, विश्व गुरु बनेगा भारत?

भारत भूषण अड़जरिया

संयुक्त राष्ट्र द्वारा कोविड-19 के बाद की शिक्षा की स्थिति का आकलन करने के लिए वैश्विक शिक्षा से संबंधित एक विशेष बैठक आयोजित करने के बाद जारी एक बयान के अनुसार, कोविड महामारी ने पिछले 20 वर्षों में पूरी दुनिया में शिक्षा के क्षेत्र में हासिल की गई उपलब्धियों को मिटा दिया है।

उत्तर प्रदेश में 5000 सरकारी स्कूलों को बंद करने के खिलाफ हाल ही में सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दाखिल की गई है। याचिका में कहा गया कि सरकार के इस कदम से राज्य में तीन लाख पचास हजार से ज्यादा छात्रों को निजी स्कूलों में दाखिला लेने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की नींव होती है। एक मजबूत शिक्षा प्रणाली एक कुशल कार्यबल, नवाचार और आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है।

चूँकि इस देश में प्राथमिक शिक्षा को राजनीतिक एजेंडे में कोई प्राथमिकता नहीं दी जाती, इसलिए दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी वाला यह देश अभी भी निरक्षरता और खराब शिक्षा से जूझ रहा है। हाल ही में प्रकाशित आठवीं इंडिया स्किल रिपोर्ट के अनुसार, ऐसे देश में, जहाँ धर्म और धार्मिक पहचान जनता और सरकार दोनों के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं, 50 प्रतिशत से ज़्यादा स्नातकों का रोज़गार के योग्य न होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

इस साल फरवरी में केंद्र सरकार ने बताया था कि पिछले 10 साल में यूनेस्को में 89 हजार सरकारी स्कूल बंद हो गए हैं। इनमें से अधिकांश 25 हज़ार स्कूल अकेले उत्तर प्रदेश से थे। 5 हजार स्कूल और बंद हमारे दिल पर मोर लोड ना आए इसलिए योगी सरकार ने स्कूल बंद करने की इस स्कॉच को नाम दिया है पेअरिंग स्कॉच। वर्ष 2015-16 में उत्तर प्रदेश में करीब 1 लाख 62 हजार प्राथमिक विद्यालय थे। जो साल 2021-22 में 1 लाख 40 हजार ही रह गए। यानी 2015-16 के मुकाबले में ये संख्या कम हो गई। सरकार का तर्क है कि जिन स्कूलों में बच्चों की संख्या 50 से कम है, उन्हें बंद कर देना ही बेहतर है। लेकिन सवाल ये है कि आखिर ये स्कॉटिश बच्चे क्यों नहीं हैं? क्या बच्चों की संख्या आपके-आप कम हो गई, या इसके पीछे सरकार की नीतियां जिम्मेदार हैं? ईटीवी-भारत न्यूज़ वेबसाइट के अनुसार यू-डीआईएसई पोर्टल के आधार पर जो आंकड़े सामने आए हैं, वो देखने वाले हैं। आंकड़ों के मुताबिक, प्रदेश में करीब 30,000 प्राथमिक और उच्चप्राथमिक विद्यालय ऐसे हैं, जो जर्जर स्थिति में हैं। जहां 742 स्कूल पूरी तरह से खराब खंडहर हैं। इसके बाद 690-690 में जंगल और जंगल में 674, ग़रीब में 643, 641 में ग़रीब में और 633 में बलिया में कब्ज़ा की स्थिति बेहद खस्ता है। इन स्कूलों में बच्चों के लिए न तो अधूरा निर्माण है, न शौचालय, न पीने का पानी और न ही चारदीवारी। कभी मिड-डे मील का सामान नहीं आता, तो कभी छत टपकती है। स्थानीय बिजली नहीं। कभी-कभी स्कूल में ही जूते डूब जाते हैं। तो ऐसे रसोई में किसी ने भी अपने बच्चों को क्यों भेजेगा? जब स्कूल में टीचर ही नहीं होंगे तो पढ़ाई कैसे होगी? जिन शिक्षकों में शिक्षक तैनात हैं, वहां उनकी ड्यूटी चुनाव, सर्वेक्षण,

योजना या धार्मिक आयोजनों में लगाई जाती है। स्कूल सिर्फ रिकॉर्ड में है। क्लासरूम बंद होता है, परिसर सूना रहता है। फिर जब बच्चों की पढ़ाई नहीं होती, तो परिवार वाले अपने बच्चों को या तो प्राइवेट स्कूलों में दाल देते हैं या फिर पढ़ाई ही छुड़वा देते हैं। यानी धीरे-धीरे सरकारी स्कूल के बच्चे आना ही बंद कर देते हैं। फिर एक दिन शासन की रिपोर्ट आती है ₹छात्र संख्या कम है, स्कूल बंद कर दिया जाएगा।₹

बाकी जो स्कूल चल रहे हैं उनमें भी बार-बार सुरक्षा के नाम पर छुट्टियाँ घोषित कर दी जाती है। उत्तर प्रदेश में कांवड़ यात्रा अब बस एक धार्मिक परंपरा नहीं रही, ये एक सरकारी आयोजन संस्था बन चुकी है। हर साल जैसे ही सावन आता है, प्रदेश का पूरा सरकारी तंत्र एक ही दिशा में दौड़ता है- तीर्थयात्रियों की सेवा। स्वास्थ्य विभाग से लेकर जिला प्रशासन तक, स्वास्थ्य विभाग से लेकर नगर निगम तक, हर विभाग को आदेश दिया जाता है कि ₹कांवड़ियों की सुविधा में कोई कमी नहीं होनी चाहिए।₹ जगह-जगह कैंप, मेडिकल कैंप, मोबाइल स्टेडियम, मिस्ट फैन, नमक-पानी तक डाला जाता है। और ये सब फंडिंग आती है सरकारी खज़ाने से।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा कोविड-19 के बाद की शिक्षा की स्थिति का आकलन करने के लिए वैश्विक शिक्षा से संबंधित एक विशेष बैठक आयोजित करने के बाद जारी एक बयान के अनुसार, कोविड महामारी ने पिछले 20 वर्षों में पूरी दुनिया में शिक्षा के क्षेत्र में हासिल की गई उपलब्धियों को मिटा दिया है। दुनिया भर में 10 करोड़ से अधिक अतिरिक्त बच्चे पढ़ने-लिखने के न्यूनतम स्तर से वंचित हो गए हैं। रिपोर्ट इस तथ्य को भी सामने लाती है कि इस वैश्विक स्थिति की पृष्ठभूमि में, यह समझना मुश्किल नहीं है कि कोविड के समय में भारत में कितने कम छात्र इंटरनेट के माध्यम से पढ़ाई कर पाए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, देश के ग्रामीण इलाकों में केवल 18 प्रतिशत के पास इंटरनेट की सुविधा थी, लेकिन उनमें से कितने वास्तव में इसका उपयोग कर पाए, यह भी संदिग्ध है क्योंकि डेटा पैक खरीदने के लिए पैसे, मोबाइल चार्ज करने के लिए बिजली आदि जैसे कई सवाल इससे जुड़े हैं। रिपोर्ट बताती है कि 42 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में इंटरनेट की सुविधा है, लेकिन शहरी गरीब बस्तियों में रहने वाले कितने छात्र इसका लाभ उठा पाए, यह भी एक सवाल है। इसके अलावा, रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि निजी स्कूलों में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर 62 प्रतिशत से ज़्यादा शिक्षक पूरी तरह योग्य नहीं हैं। ऐसे में, अगर शिक्षक अपनी पूरी क्षमता से काम करने की कोशिश भी करें, तो वे इसमें कितने सफल होंगे, यह तो आने वाला समय ही बताएगा। रिपोर्ट में अंत में दस सुझाव भी दिए गए हैं जिनके ज़रिए देश में सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई जा सकती है। इनमें सबसे अहम है पूर्वोत्तर और ग्रामीण इलाकों के स्कूलों में शिक्षकों की संख्या बढ़ाना और उनके उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।

कुल मिलाकर, स्कूलों में पर्याप्त संख्या में शिक्षकों की व्यवस्था करना, सरकारी क्षेत्र में ज़्यादा से ज़्यादा स्कूल खोलना ताकि गरीब और ग्रामीण बच्चे फीस आदि के कारण शिक्षा से वंचित न रहें और शिक्षक-छात्र अनुपात को कम करना यानी शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाने के लिए स्कूलों की संख्या बढ़ाना, सतत विकास लक्ष्य 2030 को प्राप्त करने की दिशा में कुछ अहम कदम हो सकते हैं। हालाँकि, बड़ा सवाल यह है कि क्या हमारे देश की सरकार यह सब करने के लिए तैयार है। दरअसल, सभी संकेत यही बताते हैं कि सत्ताधारियों के बीच सभी स्तरों पर सार्वजनिक शिक्षा को कमज़ोर करने की एक सोची-समझी योजना चल रही है। हमें एक संगठन के रूप में इसे रोकने के लिए कमर कसनी होगी।

- भारत भूषण अड़जरिया
मीडिया अध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ
(इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

शतरंज की बिसात पर उगा भारत का नया सूरज: दिव्या देशमुख

[फिडे वर्ल्ड कप में भारतीय स्त्री शक्ति की हुंकार]

भारतीय शतरंज के आकाश में एक नया सूरज उगा है, जिसका नाम है दिव्या देशमुख। मात्र 19 वर्ष की उम्र में, इस युवा ग्रैंडमास्टर ने जॉर्जिया के बटुमी में चल रहे फिडे (अंतर्राष्ट्रीय शतरंज महासंघ) महिला विश्व कप 2025 के फाइनल में पहुंचकर इतिहास के पन्नों पर अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित कर दिया। वे इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला बन गई हैं, जिन्होंने न केवल देश का गौरव बढ़ाया, बल्कि विश्व शतरंज को एक नई प्रेरणा दी। लगातार तीन ग्रैंडमास्टरों को धूल चटाकर, दिव्या ने साबित कर दिया कि सपनों के पीछे अगर जुनून और मेहनत हो, तो कोई भी मंजिल असंभव नहीं। उनकी यह यात्रा केवल एक जीत की कहानी नहीं, बल्कि भारतीय शतरंज की नई पीढ़ी का एक ऐसा गान है, जो हर भारतीय के दिल को गर्व से भर देता है।

दिव्या देशमुख की यह उपलब्धि भारतीय शतरंज के लिए एक मील का पत्थर है। फिडे महिला विश्व कप विश्व चैंपियनशिप चक्र का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, जहां शीर्ष तीन खिलाड़ी 2026 के फिडे महिला विश्व कप टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई करते हैं। फाइनल तक का उनका सफर न केवल उनकी तकनीकी कुशलता का परिचय देता है, बल्कि उनकी मानसिक दृढ़ता और दबाव में संयम को भी रेखांकित करता है। इस प्रक्रिया में, उन्होंने अपना पहला ग्रैंडमास्टर नॉर्म हासिल किया और कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में अपनी जगह पक्की की, जो विश्व चैंपियनशिप की दौड़ में एक बड़ा कदम है।

सेमीफाइनल में उनका सामना था पूर्व विश्व चैंपियन और विश्व रैंकिंग में चौथे स्थान पर काबिज तान झोंग्यी से। यह मुकाबला किसी भी मायने में आसान नहीं था। झोंग्यी का शास्त्रीय शतरंज में दिव्या के खिलाफ 3-1 का रिकॉर्ड और उनकी अनुभवी रणनीतियां उन्हें एक मजबूत प्रतिद्वंद्वी बनाती थीं। लेकिन दिव्या ने इस चुनौती को न केवल स्वीकार किया, बल्कि अपनी बुद्धिमत्ता और साहस से उसे परास्त कर दिखाया। पहले गेम में, काले मोहरों के साथ, उन्होंने क्वीन्स गैम्बिट डिक्लाइन्ड ओपनिंग के

जवाब में संतुलित रणनीति अपनाई। मोहरों की तेज अदला-बदली के बाद, दोनों खिलाड़ियों के पास एक-एक रूक, एक-एक बिशप और तीन-तीन प्यादे बचे, जिसके चलते खेल ड्रॉ पर समाप्त हुआ। यह ड्रॉ अपने आप में एक जीत थी, क्योंकि यह दर्शाता है कि दिव्या ने अनुभवी झोंग्यी के खिलाफ दबाव को बखूबी संभाला।

दूसरे गेम में, सफेद मोहरों के साथ, दिव्या ने अपनी आक्रामकता और रणनीतिक कौशल का ऐसा प्रदर्शन किया, जिसने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने अलापिन सिसिलियन डिफेंस का सहारा लिया, जो उनकी सामान्य ओपन सिसिलियन रणनीति से हटकर था। यह अप्रत्याशित चाल झोंग्यी के लिए एक झटका साबित हुई। खेल के मध्य में, दिव्या ने लगातार दबाव बनाए रखा और झोंग्यी को गलतियां करने पर मजबूर किया। एक समय ऐसा लगा कि झोंग्यी वापसी कर सकती हैं, खासकर 32वीं चाल में, जब उनके पास एक रणनीतिक अवसर था। लेकिन समय की कमी और दबाव में, झोंग्यी ने गलत चाल खेली, जिसने दिव्या को दो प्यादों की बढ़त दिलाई। 101 चालों तक चले इस कठिन मुकाबले में, दिव्या ने धैर्य, समय प्रबंधन और रणनीति का शानदार नमूना पेश किया और अंततः जीत हासिल की।

दिव्या की यह जीत केवल सेमीफाइनल तक सीमित नहीं है। उनकी टूर्नामेंट यात्रा एक प्रेरणादायक गाथा है। राउंड 4 में, उन्होंने विश्व नंबर 6 और दूसरी वरीयता प्राप्त झू जिनर को हराकर अपने इरादे जाहिर किए। इसके बाद क्वार्टर फाइनल में, उन्होंने अपनी हमवतन और अनुभवी ग्रैंडमास्टर हरिका द्रोणवल्ली को रैपिड टाइब्रेक में 2-0 से मात दी। यह ऑल-इंडियन मुकाबला इसलिए भी खास था, क्योंकि यह अनुभव और युवा जोश का टकराव था, जिसमें दिव्या ने अपनी रणनीति और आत्मविश्वास से बाजी मारी। इन जीतों ने न केवल उनके तकनीकी कौशल को प्रदर्शित किया, बल्कि यह भी दिखाया कि वे बड़े मंच पर दबाव को संभालने में माहिर हैं।

19 साल की उम्र में, दिव्या देशमुख ने साबित कर दिया कि वे भारतीय शतरंज की नई धड़कन हैं। उनकी यह उपलब्धि विश्व चैंपियनशिप की दौड़ में उन्हें एक मजबूत दावेदार बनाती है। उनकी जीत के बाद एक साक्षात्कार में, उन्होंने अपनी विनम्रता और आत्म-विश्लेषण की क्षमता दिखाई। उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि मैं और बेहतर खेल सकती थी। एक समय मैं जीत रही थी, लेकिन फिर यह जटिल हो गया। मुझे थोड़ा भाग्य मिला।" यह विनम्रता और सीखने की ललक उन्हें एक असाधारण खिलाड़ी बनाती है।

इस टूर्नामेंट में चार भारतीय खिलाड़ियों—कोनेरू हम्पी, हरिका द्रोणवल्ली, आर वैशाली और दिव्या देशमुख—का क्वार्टर फाइनल तक पहुंचना अपने आप में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। फिडे के सीईओ एमिल सुतोव्स्की ने इसे भारतीय शतरंज की गहराई और प्रतिभा का प्रतीक बताया। अब फाइनल में, दिव्या का मुकाबला कोनेरू हम्पी या चीन की टिंगजी लेई से होगा। अगर हम्पी फाइनल में पहुंचती हैं, तो यह पहली बार होगा जब फिडे महिला विश्व कप का फाइनल दो भारतीय खिलाड़ियों के बीच होगा, जो भारतीय शतरंज के लिए एक गौरवमयी क्षण होगा।

दिव्या देशमुख की यह जीत भारतीय खेल इतिहास में एक चमकदार नक्षत्र की तरह है, जो न केवल शतरंज के आकाश को रोशन कर रही है, बल्कि लाखों युवा सपनों को भी प्रज्वलित कर रही है। उन्होंने अपने अटूट जुनून और अथक मेहनत से यह साबित किया है कि उम्र और अनुभव की सीमाएं सच्ची प्रतिभा के सामने बौनी हैं। उनकी कहानी हर उस युवा लड़की के लिए एक प्रेरणा है, जो अपने सपनों को सच करने का साहस रखती है। यह जीत सिर्फ एक ट्रॉफी नहीं, बल्कि एक संदेश है—जो दृढ़ संकल्प और मेहनत से लैस हो, वह किसी भी बाधा को पार कर सकता है। फाइनल का परिणाम चाहे जो हो, दिव्या ने विश्व शतरंज के क्षितिज पर एक नए सूर्य के रूप में अपनी जगह बना ली है, जिसकी किरणें अब और दूर तक फैलेंगी, हर दिल को प्रेरित करती हुई।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

विचार का क्षरण

विजय गर्ग

हम अनंत कनेक्टिविटी के युग में रहते हैं - फिर भी हम सबसे मौलिक मानव संकायों से तेजी से डिस्कनेक्ट हो रहे हैं: स्पष्ट रूप से सोचना, सार्थक रूप से मुखर करना, और खुद को गहराई से व्यक्त करना। स्क्रॉल करने, स्वाइप करने और प्रतिक्रिया करने की भीड़ में, एक चिंताजनक प्रवृत्ति उभर रही है: आज की पीढ़ी धीरे-धीरे है लेकिन निश्चित रूप से गंभीर रूप से सोचने, सुसंगत रूप से लिखने और स्पष्टता के साथ बोलने की क्षमता खो रही है।

यह गिरावट कक्षाओं, कॉलेज के निबंध, नौकरी के साक्षात्कार और यहां तक कि रोजमर्रा की बातचीत में भी दिखाई देती है। छात्रों, एक बार भाषा की बारीकियों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया, अब एआई सहायता या अति प्रयोग किए गए वाक्यांशों के बिना एक पैराग्राफ लिखने के लिए संघर्ष करें। शब्दावली हैशटैग के आकार में सिकुड़ गई है। वाक्य खंडित हैं। जब पेशकश की जाती है, तो राय अक्सर उथली या उधार ली जाती है। सवाल यह नहीं है कि ऐसा क्यों हो रहा है, बल्कि इस प्रक्रिया में हम क्या खो रहे हैं।

इसे आंशिक रूप से हमारे काटने के आकार की डिजिटल संस्कृति पर दोष दें, जहां ध्यान सेकंड तक कम हो जाता है और विचार डोपामाइन-संचालित विकर्षण द्वारा बाधित होता है। जब स्वतः पूर्ण आपके वाक्य को समाप्त कर सकता है तो एक विचार बनाने के साथ कुश्ती क्यों करें? इमोजी पर्याप्त होने पर शब्दावली की खेती क्यों करें? रास्ते में कहीं, हमने स्पष्टता के लिए गति और गहराई के लिए सुविधा को गलत करना शुरू कर दिया।

लिखने की क्षमता - सही मायने में लिखना - आत्मनिरीक्षण, धैर्य और किसी के विचारों का सामना करने का साहस की मांग करता है। इसी तरह, दृढ़ विश्वास के साथ बोलने के लिए मन की स्पष्टता और भाषा के प्रति सम्मान की आवश्यकता होती है। ये जन्मजात क्षमताएं नहीं हैं; उन्हें पढ़ने, प्रतिबिंब, चर्चा और संघर्ष के माध्यम से समय के साथ खेती की जाती है। लेकिन एक बार इस विकास का समर्थन करने वाले मचान - किताबें, बहस, जर्नलिंग, मेंटरशिप - को ध्वस्त किया जा रहा है।

परिणाम गंभीर हैं। जब एक पीढ़ी मुखर करने की क्षमता खो देती है, तो यह तर्क करने की शक्ति खो देती है, राजी करने के लिए, असंतोष करने के लिए, और अंततः, नेतृत्व करने के लिए। शब्दों के बिना, विचार फंस जाते हैं, भावनाएं गलत होती हैं, और गलतफहमी कई गुना बढ़ जाती है। एक समाज जो खुद को व्यक्त नहीं कर सकता है वह वास्तव में प्रगति नहीं कर सकता है।

और स्पष्ट हो: यह पुरानी यादों का विलाप नहीं है। न ही यह तकनीक पर हमला है। बल्कि, यह संतुलन के लिए एक कॉल है। एक अनुस्मारक जो भाषा केवल संचार के लिए एक उपकरण नहीं है, बल्कि विचार का बहुत कपड़ा है। हमें अपने युवा को केवल कैप्शन से अधिक पढ़ने, पाठ सीमा से परे लिखने, सक्रिय रूप से सुनने और ईमानदारी से बोलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। हमें रिक्त स्थान - घरों, स्कूलों और समुदायों में निवेश करना चाहिए - जो अपने सभी रूपों में अभिव्यक्ति का पोषण करते हैं।

क्योंकि अगर हम इस क्षरण को जारी रखने की अनुमति देते हैं, तो हम उपकरणों में एक पीढ़ी को धाराप्रवाह बढ़ाने का जोखिम उठाते हैं, लेकिन अपने दिमाग से अलग हो जाते हैं।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

क्या है भगवान शिव को सर्वाधिक प्रिय

अखण्ड बिल्वपत्र भगवान शिव को अत्यन्त प्रिय है। जो श्रध्दापूर्वक नमः शिवाय मंत्र जाप करते हुए शिवलिंग पर बेलपत्र अर्पित करता है वह सभी पापों से मुक्त हो शिव के परमधाम में स्थान पाता है। यहाँ तक कि बिल्वपत्र के दर्शन, स्पर्श व वंदना से ही दिन-रात के किये पापों से छुटकारा मिल जाता है।

इसके अलावा भगवन-भोलेनाथ को आक-धतूरा विजया भांग आदि भी अति प्रिय हैं।

पत्र, पुष्प, फल अथवा स्वच्छ जल तथा कनेर से भी भगवान-शिव की पूजा करके मनुष्य उन्हीं के समान हो जाता है। आक (मदार) का फूल कनेर से दसगुना श्रेष्ठ माना गया है।

आक के फूल से भी दस गुना श्रेष्ठ है धतूरे आदि का फल। नील कमल एक हजार कह्लार (कचनार) से भी श्रेष्ठ माना गया है।

शिवरात्रि पर शिवोपासना से मनुष्य के त्रिविध तापों का शमन हो जाता है, संकट व कष्ट के बादल छंट जाते हैं, कर्मज व्याधियों व ग्रह बाधाओं से मुक्ति मिल जाती है। इससे अकाल मृत्यु को टाला जा सकता है, मोक्ष प्राप्ति होती है। इस पर्व पर मनुष्य जिस मनोकामना से जिस रूप में शिव की आराधना करता है वह पूरी होती है और भोले शंकर उसी रूप में प्रसन्न होकर फल भी प्रदान करते हैं। जो व्यक्ति रोग ग्रस्त होकर बिस्तर पर पड़ा है, वह भी महामृत्युंजय के जाप से अपने को स्वस्थ अनुभव करने लगता है।

घर में कलह, व्यापार में मंदी, कुसंतान, रोग, भाग्य में रूकावट, भाइयों में मतभेद आदि हो तब भी मनुष्य को शिवरात्रि के दिन कालसर्प शांति अवश्य करवा लेनी चाहिए। इस प्रकार की बाधाओं से मुक्ति के लिए शिवरात्रि से बढ़कर दूसरा उत्तम मुहूर्त नहीं।

जिन व्यक्तियों को 'शनि की साढे साती' प्रतिकूलता का संकेत दे रही हो, उसका शमन शिव आराधना के द्वारा बड़ी सरलता से किया जा सकता है, उसके अलावा और कोई दूसरी आराधना उसे सरलता से शांत नहीं कर सकती। शिव गृहस्थ जीवन के आदर्श है जो अनासक्त रहते हुए भी पूर्ण गृहस्थ स्वरूप हैं। इनकी आराधना से मनुष्य के गृहस्थ जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती है और वह सुखमय गृहस्थी का स्वामी बनता है।

भगवान शिव सौभाग्यदायक हैं। अतः इस रात्रि में कुंवारी कन्या द्वारा इनकी आराधना करने से उसे मनोवांछित वर की प्राप्ति होती है।

जो स्त्री संतान सुख की कामना से शिवरात्रि पर शिव की पूजा अर्चना करती है उसे शिव कृपा से संतान की भी प्राप्ति होती है, क्योंकि शिव पुत्र प्रदान करने वाले देवता हैं।

भगवान शिव परमपिता परमात्मा के सम्पूर्ण स्वरूप है इसलिए इनकी आराधना जीवन पर्यन्त की जाती है और विशेषकर शिवरात्रि पर इनकी आराधना से व्यक्ति अपने इष्ट के दर्शन पाकर धन्य हो जाता है एवं उसके समस्त मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।

शिवानन्द मिश्रा

हरियाली तीजः आस्था, पर्यावरण और नारी-सम्मान की त्रिवेणी

सावन की रिमझिम फुहारों में जब धरती हरियाली का चादर ओढ़ लेती है, तब हरियाली तीज का पर्व भारतीय संस्कृति के रंगों को और गहरा कर देता है। यह पर्व केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि प्रेम, भक्ति, नारी-शक्ति और प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव का उत्सव है। 27 जुलाई को, जब सावन मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि पर हरियाली तीज मनाई जाएगी, यह दिन भारत के कोने-कोने में उमंग, श्रृंगार और सामूहिक आनंद का प्रतीक बनेगा। यह वह अवसर है जब महिलाएँ हरे वस्त्रों में सजकर, मेंहदी से रंगे हाथों और गीतों की मधुर तान के साथ जीवन की रस-रंगत को जीवंत करती हैं। हरियाली तीज न केवल परंपराओं का पुनरावलोकन है, बल्कि यह एक जीवन-दर्शन है जो हमें प्रेम, समर्पण और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता की सीख देता है।

पौराणिक कथाओं में हरियाली तीज का विशेष महत्व है। मान्यता है कि माता पार्वती ने कठिन तपस्या और अटूट भक्ति के बल पर सावन मास की तृतीया तिथि को भगवान शिव को अपने पति के रूप में प्राप्त किया था। यह कथा नारी की शक्ति, विश्वास और समर्पण को रेखांकित करती है। यही कारण है कि यह पर्व विवाहित महिलाओं के लिए अपने पति की लंबी उम्र और सुखी वैवाहिक जीवन की कामना का प्रतीक है, जबकि अविवाहित युवतियाँ शिव-पार्वती की पूजा कर आदर्श वर की प्रार्थना करती हैं। स्कंद पुराण और शिव पुराण जैसे ग्रंथ इस तिथि को धार्मिक दृष्टिकोण से और भी पवित्रता प्रदान करते हैं। यह पर्व न केवल धार्मिक अनुष्ठानों का अवसर है, बल्कि यह समाज में नारी के सम्मान और उनकी भावनात्मक गहराई को भी उजागर करता है।

सावन का महीना जब धरती को हरियाली से सजाता है, तब हरियाली तीज प्रकृति के इस यौवन का उत्सव बनकर उभरती है। खेत-खलिहानों में लहलहाती फसलें, पेड़ों की हरी-भरी शाखाएँ और नदियों का कल-कल बहता जल इस पर्व की पृष्ठभूमि को और सुंदर बनाता है। यह पर्व हमें प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और उसके संरक्षण का संदेश देता है। आधुनिक समय में, जब पर्यावरणीय चुनौतियाँ जैसे ग्लोबल वॉर्मिंग और वनों की कटाई गंभीर मुद्दे बने हुए हैं, हरियाली तीज का महत्व और बढ़ जाता है।

हरियाली तीज केवल उत्सव नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ सामंजस्य का प्रतीक भी है।

हरियाली तीज की सबसे मनमोहक परंपराओं में से एक है झूला झूलने की रस्म। गाँवों में पीपल, नीम या आम के पेड़ों पर रंग-बिरंगे रस्सियों के झूले बाँधे जाते हैं, जिन पर महिलाएँ और युवतियाँ समूह में झूलती हैं। "सावन में झूले पड़े, नीम की डाली पर..." जैसे लोकगीत हवा में गूँजते हैं, जो न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि सामाजिक एकता और भावनात्मक अभिव्यक्ति का भी माध्यम हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार, उत्तर भारत के 75% ग्रामीण क्षेत्रों में तीज के दौरान झूला झूलना और लोकगीत गाना प्रमुख परंपराएँ हैं। शहरी क्षेत्रों में, जहाँ प्राकृतिक वृक्षों की कमी है, वहाँ सामुदायिक केंद्रों, पार्कों और मंदिरों में झूले सजाए जाते हैं। यह परंपरा सामूहिकता को बढ़ावा देती है और महिलाओं को अपनी खुशियों को साझा करने का मंच प्रदान करती है।

इस पर्व का स्वाद भी उतना ही अनूठा है जितना इसका सांस्कृतिक महत्व। हरियाली तीज पर घरों में घेवर, मालपुआ, पूड़ी, खीर और हलवा जैसे पारंपरिक व्यंजन बनाए जाते हैं। घेवर, जो राजस्थान की शान है, इस पर्व का सबसे लोकप्रिय पकवान है। सावन के महीने में घेवर की माँग 40% तक बढ़ जाती है, जो स्थानीय मिठाई उद्योग को भी गति देता है। इसके अलावा, ससुराल से बहू को 'सिंजारा' भेजने की परंपरा रिश्तों में मधुरता लाती है। इसमें हरे वस्त्र, गहने, मिठाई और श्रृंगार सामग्री शामिल होती है। यह परंपरा न केवल उपहारों का आदान-प्रदान है, बल्कि पारिवारिक स्नेह और सामाजिक बंधनों को मजबूत करने का एक सुंदर तरीका है।

हरियाली तीज का श्रृंगार अपने आप में एक कला है। हरे रंग की साड़ियाँ, लहंगे, चूड़ियाँ और मेंहदी इस दिन की शोभा बढ़ाते हैं। हरा रंग समृद्धि, उर्वरता और सौभाग्य का प्रतीक है। मेंहदी, जो तीज की पहचान है, न केवल सौंदर्य को निखारती है, बल्कि प्रेम और वैवाहिक जीवन की गहराई को भी व्यक्त करती है। 2024 के आँकड़ों के अनुसार, सावन मास में मेंहदी और श्रृंगार सामग्री की बिक्री में 30% की वृद्धि दर्ज की गई, जो इस पर्व की लोकप्रियता और आर्थिक प्रभाव को दर्शाता है। महिलाओं का यह श्रृंगार केवल बाहरी सौंदर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनकी आंतरिक शक्ति, आत्मविश्वास और आस्था का प्रतीक है।

सामाजिक दृष्टिकोण से, हरियाली तीज महिलाओं के लिए एक मंच है जहाँ वे अपनी कला, भावनाएँ और एकता को व्यक्त करती हैं। जयपुर, लखनऊ और दिल्ली जैसे शहरों में तीज के अवसर पर मेले और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें भजन-कीर्तन, नृत्य, मेंहदी प्रतियोगिताएँ और पारंपरिक वेशभूषा की प्रदर्शनियाँ शामिल होती हैं। ये मेले हर साल लाखों लोगों को आकर्षित करते हैं और स्थानीय हस्तशिल्प, वस्त्र और गहनों की बिक्री को बढ़ावा देते हैं। ये आयोजन न केवल सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखते हैं, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान करते हैं।

आज के युग में, जब तकनीक और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ जीवन का केंद्र बन रही हैं, हरियाली तीज जैसे पर्व हमें अपनी जड़ों से जोड़ते हैं। यह पर्व हमें सिखाता है कि सच्चा आनंद सामूहिकता, प्रकृति के प्रति प्रेम और परंपराओं के संरक्षण में है। यह नारी-शक्ति का उत्सव है, जो हमें याद दिलाता है कि नारी केवल घर की नींव नहीं, बल्कि समाज की संस्कृति और मूल्यों की वाहक भी है। यह पर्व पर्यावरणीय चेतना को भी प्रोत्साहित करता है, जो आधुनिक समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

27 जुलाई को जब हरियाली तीज का उत्सव मनाया जाएगा, यह केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं रहेगा। यह प्रेम, समर्पण, सामाजिक एकता और पर्यावरण संरक्षण का प्रतीक बनेगा। जब महिलाएँ मेंहदी रचाएँगी, हरे वस्त्रों में सजेंगी और झूलों पर गीत गाएँगी, तब यह केवल परंपरा का निर्वाह नहीं होगा, बल्कि जीवन की जीवंतता और आनंद का उत्सव होगा। हरियाली तीज हमें सिखाती है कि सच्ची खुशी रिश्तों को सहेजने, प्रकृति को संजोने और अपनी संस्कृति को जीवित रखने में है। यह पर्व एक ऐसी कड़ी है जो हमें अतीत से जोड़ती है, वर्तमान को समृद्ध करती है और भविष्य को प्रेरणा देती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

"पेपर का एनालिसिस नहीं, सोच का सेंसरशिप है ये"

"एनालिसिस पर बैनः आयोग का डर या व्यवस्था की विफलता?"
""शब्दों पर ताले और छात्रों पर शकः ये कैसा परीक्षा तंत्र?"

हरियाणा स्टाफ सिलेक्शन कमीशन द्वारा परीक्षा समाप्त होने से पहले प्रश्नपत्रों के एनालिसिस पर रोक लगाने और कार्रवाई की चेतावनी देने का आदेश छात्रों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और डिजिटल शिक्षा प्रणाली के खिलाफ है। यह न केवल असंवैधानिक है बल्कि परीक्षा पारदर्शिता और शिक्षकों की स्वतंत्रता पर भी हमला करता है। यदि आयोग चाहता है कि पेपर पर चर्चा न हो तो उसे पहले पेपर बाहर ले जाने से रोकना चाहिए था। छात्रों को डराना नहीं, विश्वास देना ज़रूरी है।

डॉ सत्यवान सौरभ

हरियाणा स्टाफ सिलेक्शन कमीशन (HSSC) के चेयरमैन हिम्मत सिंह का हालिया बयान कि "चारों शिफ्ट के एग्जाम पूरे न होने तक कोई भी प्रश्न पत्रों का एनालिसिस न करे, वरना कार्रवाई की जाएगी", अपने आप में एक ऐसे आदेश का प्रतीक है जो न केवल छात्रों के अधिकारों पर कुठाराघात करता है, बल्कि लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति की आत्मा को भी ठेस पहुंचाता है। क्या यह एक प्रशासनिक आदेश है या फिर संविधान की भावना के विरुद्ध सृजित सेंसरशिप का नया रूप?

सोचिए, यदि एनालिसिस ही प्रतिबंधित करना था, तो छात्रों को पेपर घर ले जाने देने की क्या जरूरत थी? क्यों उन्हें परीक्षा के बाद प्रश्न पत्र दिए गए? क्या आयोग खुद इस बात को मान रहा है कि उसके प्रश्नपत्र लीक होने की संभावना है या फिर यह उसकी असमर्थता का अप्रत्यक्ष स्वीकार है कि वह समान स्तर की परीक्षा आयोजित नहीं कर पा रहा?

शिक्षा कोई गुप्त साजिश नहीं होती जिसे पर्दे में रखा जाए। परीक्षा एक सार्वजनिक प्रक्रिया है, और प्रश्नपत्र उस प्रक्रिया का हिस्सा हैं। जब पेपर छात्रों को दे दिया गया है, तो उस पर चर्चा, विश्लेषण या शंका समाधान करना अभ्यर्थियों का मौलिक अधिकार है। भारत के संविधान का अनुच्छेद 19(1)(a) हर नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देता है। ऐसे में किसी विषय पर बोलने, लिखने, विश्लेषण करने पर कार्रवाई की धमकी देना लोकतंत्र को अपमानित करने जैसा है।

आश्चर्यजनक यह है कि जिस आयोग की परीक्षा व्यवस्था बार-बार विवादों में रही है — पेपर लीक, टालमटोल, नियुक्तियों में देरी — वही आयोग अब छात्रों को नैतिकता और गोपनीयता का पाठ पढ़ा रहा है। यह वैसा ही है जैसे खुद भ्रष्टाचार में लिप्त कोई व्यक्ति दूसरों को ईमानदारी की नसीहत दे।

यह आदेश न केवल विद्यार्थियों को चुप कराता है, बल्कि कोचिंग संस्थानों, यूट्यूब चैनल्स, शिक्षकों, और परीक्षा विशेषज्ञों की स्वतंत्रता को भी बाधित करता है। कोचिंग संस्थान कोई अवैध संस्था नहीं हैं। वे वही करते हैं जो सरकार खुद नहीं कर पा रही — तैयारी को आसान बनाना, विश्लेषण देना, कमज़ोर छात्रों की मदद करना। अगर कोई शिक्षक पहले शिफ्ट के प्रश्नों को लेकर समाधान दे रहा है, तो वह नकल नहीं फैला रहा, बल्कि छात्रों के मन की शंका दूर कर रहा है।

क्या आयोग मानता है कि उसके पास सभी शिफ्टों के लिए अलग-अलग प्रश्नपत्र तैयार करने की क्षमता नहीं है? या फिर वह मान चुका है कि छात्रों के बीच आपस में जानकारी साझा करने से उसकी परीक्षा प्रणाली हिल जाती है? अगर ऐसा है, तो ज़िम्मेदारी छात्रों की नहीं बल्कि आयोग की है।

एक ओर आयोग पारदर्शिता की बात करता है, और दूसरी ओर वह पेपर चर्चा पर रोक लगाता है। यह दोहरापन है। यदि आप व्यवस्था में विश्वास चाहते हैं, तो पहले आपको पारदर्शी बनना होगा। वरना आदेशों की धमकी से केवल डर पैदा होगा, भरोसा नहीं।

एक महत्वपूर्ण बिंदु यह भी है कि क्या कोई सरकारी संस्था विद्यार्थियों के ज्ञान और समझ पर प्रतिबंध लगाने का हक रखती है? सवाल केवल एनालिसिस का नहीं है, सवाल अभिव्यक्ति का है। अगर आयोग छात्रों को यह आदेश दे रहा है कि वह न तो पेपर पर चर्चा करें, न यूट्यूब पर सवालों का हल देखें, न सोशल मीडिया पर टिप्पणी करें, तो यह ज्ञान पर अंकुश लगाने जैसा है।

यह आदेश डिजिटल स्वतंत्रता पर भी सवाल खड़े करता है। आज का युवा ऑनलाइन तैयारी करता है। यूट्यूब, टेलीग्राम, वेबसाइट्स और टेस्ट प्लेटफॉर्म उसके लिए क्लासरूम बन चुके हैं। जब आयोग इन प्लेटफार्मों पर चर्चा रोकता है, तो वह एक पूरे डिजिटल एजुकेशन इकोसिस्टम को सेंसर करने की कोशिश कर रहा है।

यहाँ यह बात भी गौर करने लायक है कि यह कार्रवाई का डर किस कानून के तहत है? क्या आयोग के पास ऐसा कोई कानूनी आधार है जिससे वह किसी विश्लेषणकर्ता, शिक्षक या छात्र पर मुकदमा चला सके? या यह सिर्फ मनमानी चेतावनी है? अगर यह आदेश किसी कानूनी व्यवस्था का हिस्सा नहीं है, तो यह पूरी तरह से असंवैधानिक और न्यायिक हस्तक्षेप योग्य है।

हम यह भी नहीं भूल सकते कि यही आयोग अपने पेपर लीक और गलतियों के लिए कुख्यात रहा है। चाहे वो क्लर्क भर्ती हो, ग्रुप डी का मामला हो या CET की विसंगतियां, आयोग की खुद की जवाबदेही सवालों के घेरे में रही है। ऐसे में जब आयोग खुद जवाबदेह नहीं बन पा रहा, तब वह दूसरों की स्वतंत्रता को नियंत्रित करने की शक्ति कैसे पा सकता है?

छात्रों की मानसिक स्थिति समझना जरूरी है। परीक्षा के बाद एक छात्र अपने दिए गए पेपर को लेकर जानना चाहता है कि उसके उत्तर सही थे या नहीं। अगर उसे बताया जाएगा कि एनालिसिस पर पाबंदी है, तो वह बेचैनी में रहेगा। मानसिक तनाव में रहेगा। यह किसी भी तरह से शैक्षणिक विकास का समर्थन नहीं करता।

काश ! हमारे यहां भी हो फीनलैंड जैसी शिक्षा प्रणाली व इंफ्रास्ट्रक्चर !

हाल ही में राजस्थान के झालावाड़ के पिपलोदी गांव में एक सरकारी स्कूल(विद्यालय) की इमारत का एक हिस्सा गिरने से सात मासूम बच्चों की मौत हो गई, यह बहुत ही दुखद और हृदयविदारक घटना है। वास्तव में झालावाड़ में हुई यह घटना हमारे देश के सरकारी स्कूलों की बदहाली के साथ ही साथ हमारे एजुकेशनल सिस्टम पर गंभीर सवाल भी खड़े करती है।सच तो यह है कि इस हादसे के बाद स्कूल और प्रशासन की भूमिका पर लगातार सवाल उठ रहे हैं। हादसे के बाद जब बच्चों की मौत हो गई तब शिक्षा मंत्री मदन दिलावर कह रहे हैं कि 2000 स्कूलों को ठीक किया जा रहा है और हादसे के दोषी वे खुद हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या मात्र स्वयं को दोषी ठहराने से इस हृदयविदारक हादसे की भरपाई संभव हो सकती है ? ऐसा भी नहीं है कि जर्जर व खराब हालात वाले स्कूल भवनों के बारे में किसी को जानकारी या सूचनाएं नहीं होती है, लेकिन दुखद यह है कि जानकारी होने के बावजूद भी समय रहते एक्शन नहीं लिया जाता और हादसे हो जाते हैं। हादसे होने के बाद प्रशासन, अधिकारियों, के हाथ-पांव फूलने लगते हैं, लेकिन यदि समय रहते एक्शन ले लिया जाए तो ऐसे हादसों की नौबत ही नहीं आए।पाठक जानते हैं कि बच्चों के लिए स्कूल (विद्यालय) एक प्रकार से दूसरा घर ही होता है, जैसा कि यह सब विद्यालय (विद्या + आलय= विद्या मतलब ज्ञान,इल्म तथा आलय मतलब घर, मकान, जगह, स्थान) के नाम से ही बखूबी स्पष्ट होता है। बच्चे शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से 'ज्ञान के इस आलय में' आते हैं, ताकि वे अपने भविष्य को उज्ज्वल और सुरक्षित बना सकें, लेकिन दुखद है कि सात बच्चे हमारे सिस्टम की लापरवाही व बदहाली की भेंट चढ़ गए। आज राजस्थान ही नहीं हमारे देश में हजारों स्कूल ऐसे हैं, जहां स्कूल बिल्डिंग्स को लेकर डर का साया है और बहुत से स्कूल आज भी मरम्मत, रख-रखाव के इंतजार में हैं। अनेक स्कूलों की चहारदीवारी, भवन, टायलेट्स जर्जर हैं। कहीं पर स्कूलों के फर्श उखड़े पड़ें हैं तो कहीं छतें तो कहीं पर पानी की टंकियां तक ठीक हालात में नहीं हैं। अकेले राजस्थान की ही यदि हम यहां पर बात करें तो, मीडिया में आईं खबरों से यह पता चलता है कि यहां आठ हजार स्कूल ऐसे हैं, जहां बारिश के दिनों में छतें टपकतीं हैं और दीवारें जर्जर हालात में हैं तथा प्लास्टर उखड़ रहा है। ऐसे में यह सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि देश के अन्य राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में सरकारी स्कूलों के क्या हालात होंगे ? हाल फिलहाल, झालावाड़ के सरकारी स्कूल में हुई घटना के बारे में पता चला है कि सुबह करीब 8.30 बजे, जब एक मंजिला इमारत की छत गिरी, तब शिक्षकों और कर्मचारियों के अलावा करीब 60 बच्चे स्कूल परिसर(कैंपस) में मौजूद थे। यहां सबसे बड़ा यक्ष प्रश्न यह उठता है कि जब स्कूल की इमारत जर्जर हालत में थी, तो वहां स्कूल किसके आदेश से चलाया जा रहा था ? सवाल यह भी उठता है कि जब गांव वालों और शिक्षकों ने इस संदर्भ में पहले शिकायत की थी तो अधिकारियों ने समय रहते स्कूल की इमारत(बिल्डिंग) को सुधारने, इसके रख-रखाव(मेंटीनेंस) के लिए कदम क्यों नहीं उठाए ? ऐसे में इसे एक अपराध ही करार दिया जा सकता है। वास्तव में सच तो यह है कि ऐसी आपराधिक लापरवाही अक्षम्य है। स्कूलों का रख-रखाव वास्तव में अधिकारियों की जिम्मेदारी और कर्तव्य है। यदि कोई कमियां हैं तो उन्हें दूर किया जाना आवश्यक है। रख-रखाव में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों के लिए वास्तव में तंत्र में कोई जगह नहीं होनी चाहिए। झालावाड़ के जिस सरकारी स्कूल में यह हादसा हुआ है, कहा जा रहा है कि इस स्कूल की इमारत पहले से ही जर्जर अवस्था में थी और लगातार बारिश होने के कारण इसकी हालत और भी खराब हो गई थी। उपलब्ध जानकारी के अनुसार स्कूल शिक्षा विभाग को यह निर्देश भी दिए गए थे कि जर्जर भवनों वाले स्कूलों में छुट्टी कर दी जाए, लेकिन हैरत की बात यह है कि यह है कि झालावाड़ का यह सरकारी स्कूल जर्जर भवनों की सूची में था ही नहीं, और इसीलिए यहां के बच्चों की छुट्टी भी नहीं की गई थी। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह स्थानीय प्रशासन की गंभीर लापरवाही और उसकी जवाबदेही की कमी को ही दर्शाती है। यहां बात सिर्फ झालावाड़ की ही नहीं है, कमोबेश पूरे देश में सरकारी स्कूलों का यही आलम है। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की इमारतें जर्जर हैं, शिक्षकों की कमी है और स्वच्छ पेयजल, शौचालय और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाओं तक का अभाव है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि हमारे देश की नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में स्कूलों के बुनियादी ढांचे (इंफ्रास्ट्रक्चर) को बेहतर बनाने पर जोर दिया गया है। इसमें सभी स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त सुविधाएं और संसाधन उपलब्ध कराने की बात कही गई है। एनईपी 2020 के अनुसार, स्कूलों में स्वच्छ पेयजल और शौचालय, छात्र-छात्राओं के लिए

सुरक्षित और आरामदायक कक्षाएं,खेल का मैदान, पुस्तकालय, प्रयोगशाला और अन्य आवश्यक सुविधाएं,डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए, स्कूलों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और कंप्यूटर,विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए, स्कूलों में विशेष सुविधाएं और संसाधन, शिक्षकों और छात्रों का उचित अनुपात जैसी बुनियादी सुविधाएं होनी चाहिए, लेकिन आज नई शिक्षा नीति के अनुसार स्कूलों में इंफ्रास्ट्रक्चर मौजूद नहीं है। इस संदर्भ में हमें फीनलैंड से प्रेरणा लेने की जरूरत है। पाठकों को बताता चलूं कि दुनिया में सर्वश्रेष्ठ स्कूली शिक्षा प्रणाली फिनलैंड की मानी जाती है। दरअसल, फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली में बुनियादी ढांचा (इंफ्रास्ट्रक्चर) आधुनिक, सुसज्जित और छात्रों की जरूरतों के अनुसार बनाया गया है। इसमें आधुनिक

क्लासरूम, खेल के मैदान, पुस्तकालय, और तकनीकी उपकरण जैसे कि कंप्यूटर, टैबलेट आदि, आधुनिक लैब, विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए सुविधाएं आदि शामिल हैं। फिनलैंड में शिक्षा प्रणाली में बुनियादी ढांचे के लिए सरकार और स्थानीय प्राधिकरण दोनों मिलकर काम करते हैं, और शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए लगातार निवेश करते हैं। कुल मिलाकर यह बात कही जा सकती है कि फीनलैंड में यह सुनिश्चित किया जाता है कि सभी स्कूलों में छात्रों को सीखने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा उपलब्ध हो। कहना ग़लत नहीं होगा कि जब स्कूलों में बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध होता है तो छात्र सक्रिय, रचनात्मक और आत्मविश्वास से सीखने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। बहरहाल, यहां यह भी उल्लेखनीय है कि फिनलैंड के अलावा, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर, स्विट्जरलैंड, और कनाडा जैसे देशों की शिक्षा प्रणालियों को भी दुनिया में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि दुनिया बदलने के लिए शिक्षा ही सबसे ताकतवर हथियार है और अच्छी शिक्षा प्रणाली वाले देश अपने छात्रों को उस जरूरी ज्ञान और कौशल से लैस करते हैं, जिनके जरिए वे ना सिर्फ समाज में योगदान दे पाएं, बल्कि आर्थिक तरक्की भी कर पाएं। बहरहाल, हमारा देश एक विकासशील देश है और हम हमारे देश को वर्ष 2047 तक विकसित बनाने का सपना देख रहे हैं और यह तभी संभव है जब हम हमारे यहां अपनी शिक्षा प्रणाली को और बेहतर बनाने की ओर कदम उठायेंगे। इसके लिए हमें जमीनी स्तर पर उतर कर पूरी ईमानदारी, इच्छाशक्ति व संकल्प के साथ काम करना होगा। आज जरूरत इस बात की है कि हम हमारे देश के स्कूलों के इंफ्रास्ट्रक्चर पर अपना ध्यान केंद्रित करें। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि सभी स्कूलों की इमारतों की नियमित व पारदर्शी जांच हो और इसके लिए स्वतंत्र विशेषज्ञों की एक समिति गठित हो जो स्कूल भवनों के स्ट्रक्चर और सिक्योरटी का समय-समय पर आकलन करती रहे। वैसे भी हाल फिलहाल पूरे देश में मानसून का समय चल रहा है, ऐसे समय में हमारे अधिकारियों और प्रशासन को यह चाहिए कि वे देश के तमाम स्कूली और जर्जर सरकारी इमारतों का हाल जानें कि वे किस हालात में हैं और यदि वे ठीक हालात में नहीं हैं तो उनके रख-रखाव के लिए कार्रवाई को समय रहते जवाबदेही के साथ अंजाम दिया जाना चाहिए। इतना ही नहीं, इसके लिए स्थानीय प्रशासन और शिक्षा विभाग के अधिकारियों की जवाबदेही भी तय होनी चाहिए और अगर कोई स्कूल असुरक्षित स्थिति में पाया जाता है, तो संबंधित अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई भी होनी चाहिए। एसएमसी या स्कूल मैनेजमेंट कमेटी एक ऐसी समिति है जो स्कूल के प्रबंधन और विकास में मदद करती है, जिसमें माता-पिता, शिक्षक, और समुदाय के सदस्य शामिल होते हैं। वास्तव में,इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना और छात्रों की शिक्षा में समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करना है।यह समिति विद्यालय के विभिन्न भौतिक संसाधनों जैसे कि विद्यालय के भवन, मैदान, खेल के मैदान, और पानी की व्यवस्था जैसी भौतिक सुविधाओं के रख-रखाव ,सुधार और प्रबंधन में मदद करती है।एसएमसी विद्यालय को मिलने वाले अनुदानों का सही उपयोग सुनिश्चित करती है और विद्यालय के वित्तीय मामलों का प्रबंधन करती है और विद्यालय के विकास के लिए योजनाएं बनाती है और उन्हें लागू करने में मदद करती है। इतना ही नहीं,यह समिति छात्रों और अभिभावकों की शिकायतों का समाधान करने, तथा माता-पिता और समुदाय के सदस्यों के साथ नियमित बैठकों का आयोजन करने में भी मदद करती है। बहरहाल, झालावाड़ के सरकारी स्कूल में जो हादसा हुआ, उसे महज एक और दुर्घटना मानकर खारिज नहीं किया जा सकता है बल्कि यह पूरी व्यवस्था की विफलता का प्रतीक है। वास्तव में सरकार के साथ साथ ही हमारे प्रशासन और समाज विशेषकर 'एसएमसी'(स्कूल मैनेजमेंट कमेटी) को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे बच्चों का भविष्य सुरक्षित व अच्छा हो। सच तो यह है कि यह हम सभी की एक नैतिक जिम्मेदारी व परम्दायित्व तो है ही, एक मजबूत व उज्जवल भारत की पूर्व शर्त भी है।यह बहुत अफसोस और निंदा की बात है कि अधिकारी बहाना बनाकर जिम्मेदारी से बचने का प्रयास करते नज़र आते हैं। वास्तव में झालावाड़ हादसे के मामले में शिक्षकों, प्रधानाध्यापक की भी कहीं न कहीं कमी रही है। हाल फिलहाल, राज्य सरकार को पूरी कड़ाई के साथ हादसे के कारणों की जांच पड़ताल करनी चाहिए और यह देखना चाहिए कि इस हादसे के लिए कौन लोग जिम्मेदार हैं? ध्यान रहे, स्कूल की इमारत से जुड़ा यह कोई पहला हादसा नहीं है। पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में जुलाई माह 2025 में ही केरल के कोल्लम जिले में एक बॉयज स्कूल में 13 साल के आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले एक छात्र की करंट लगने से मौत हो गई। दरअसल, स्कूल के ऊपर से जा रहे तारों के नीचे टिन की चादरों से बना एक साइकिल शेड खतरे की घंटी था। जानकारी के अनुसार हादसा तब हुआ जब बच्चा स्कूल में दोस्तों के साथ खेल रहा था। खेल के दौरान उसका जूता एक टिन शेड पर चला गया। वह उसे लेने के लिए जैसे ही ऊपर चढ़ा, वहां लगे बिजली के तार की चपेट में आ गया। इतना ही नहीं, पिछले साल दिसंबर माह में केरल के एर्नाकुलम जिले में उदयमपेरूर के पास कंदनाड में जूनियर बेसिक स्कूल परिसर में आंगनवाड़ी भवन की टाइल वाली छत गुरुवार (19 दिसंबर, 2024) सुबह के समय गिर गई थी। हालांकि, यह बात अलग है कि इस घटना में कोई भी हताहत नहीं हुआ।इसी प्रकार से पिछले साल बारिश के दिनों में ही उत्तर प्रदेश के बाराबंकी में एक स्कूल की पहली मंजिल की बालकनी का एक हिस्सा गिरने से कम से कम 40 बच्चे घायल हो गए थे। बहरहाल, आंकड़ों से यह पता चलता है कि भारत में सरकारी स्कूलों में बुनियादी ढांचे की कमी आज भी एक गंभीर व बड़ी समस्या है। आज देश में कुछ सरकारी स्कूल तो ऐसे भी हैं जिनके पास खुद की जमीन तक नहीं है। प्रायः यह भी देखा गया है कि अपना भवन नहीं होने के कारण एक ही स्कूल परिसर में एक से अधिक स्कूलों का संचालन हो रहा है। बच्चे आज भी टीन शैड, कच्चे भवनों और पेड़ों के नीचे पढ़ते हैं। गौरतलब है कि साल 2021 में राज्यसभा में एक सवाल के जवाब में सरकार ने बताया था कि देश में 27,099 सरकारी स्कूलों के पास उचित भवन नहीं हैं। काश कि हमारे देश में भी हम फीनलैंड की शिक्षा प्रणाली को अपनाते हुए हमारे स्कूलों के इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत और बना पाएं। हमें यह कतई नहीं भूलना चाहिए कि शिक्षा से ज्ञान, कौशल, और समझ का विकास होता है, जो जीवन के हर पहलू में सफलता की कुंजी है। शिक्षा ही हमें बेहतर इंसान बनाती है, सामाजिक जिम्मेदारी का अहसास कराती है, और एक बेहतर समाज और देश के निर्माण में मदद करती है। शिक्षा में किसी भी प्रकार की खामी हमारे लिए हर प्रकार से नुकसानदायक है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर,

"हरियाली तीजः झूले मन के, साज ऋतु के"

-डॉ सत्यवान सौरभ

झूले डोलें पीपल डाली,
हरियाली ने चुनर संभाली।
मेंहदी रचें हथेली प्यारी,
सावन आई सखियों वाली।

गीतों में मधुरिम तानें,
बोलें दिल की अनकही बातें।
नयनों में प्रिय की छाया,
मन बोले– अब तो वो आए।

श्रृंगार नहीं केवल बाहरी,
मन का प्रेम बसे हर साज में।
शिव–पार्वती की उस गाथा में,
नारी बसी है हर आवाज़ में।

बदले हैं रीत–रिवाज़ बहुत,
पर तीज की बात पुरानी है।
आधुनिक छांव हो या धूप,
हरियाली तीज सुहानी है।

सजते अब इंस्टा स्टोरी में,
पर भाव वही हैं छोरी में।
झूले हो चाहे पर्दे पर,
मन अब भी झूम डाले पर।

झारखंड लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष समेत दो को भ्रष्टाचार के लिए दो वर्ष की सजा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। झारखंड लोकसेवा आयोग अपनी संदिग्ध गतिविधियों एवं उपज के कारण समुचा प्रादेशिक नौकरशाही का माहौल का अपना एक काला इतिहास झारखंड हाईकोर्ट से सुप्रीम कोर्ट तक अटा पड़ा है । जिसको लेकर दुसरे प्रदेशों में भी नौकरशाही में चर्चा -ए- बाजार गर्म रहता है । इसी क्रम में सीबीआई की विशेष अदालत ने आज झारखंड पब्लिक सर्विस कमीशन के पूर्व अध्यक्ष दिलीप प्रसाद को भ्रष्टाचार के मामले में 2 साल की सजा एवं 50 हजार का जुर्माना लगाया है। दिलीप प्रसाद के साथ-साथ आरोपी सुरेंद्र कुमार जैन एवं सुधीर जैन को भी 2-2 साल की सजा और 50 हजार रुपये का जुर्माना लगाया है। दिलीप प्रसाद को अपील में जाने के लिए अदालत ने जमानत दे दी है। दिलीप प्रसाद और जैन बंधुओं पर धोखाधड़ी एवं षडयंत्र कर लगभग 29 लाख रुपये की सरकार को राजस्व क्षति पहुचाने का आरोप था। 2004 में हुए इस घोटाले को लेकर वर्ष 2013 में उनके विरोध प्राथमिकी दर्ज किया गया था। दिलीप प्रसाद पर जेपीएससी में नियुक्तियों में रिश्वत लेने का भी आरोप था। इनके साथ 2 और लोगों को सजा सुनाई गयी है। यह मामला सीबीआई के केस नंबर आर सी 6/2013 के अंतर्गत दर्ज किया गया था और भर्ती घोटाले से जुड़े दर्जनों मामलों में से यह पहला मामला है, जिसमें अंतिम निर्णय आया है। कोर्ट ने इससे पहले अंतिम बहस के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया था, जिसे अब सार्वजनिक कर दिया गया है। कोर्ट के फैसले के अनुसार, सभी दोषियों को सज़ा सुनाई गई है।

तेज बारिश से जनजीवन प्रभावित, सतर्कता हेतु अधिकारी जलमग्न इलाके में दिखे

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

सरायकेला , जिले में लगातार हो रही भारी वर्षा तथा मौसम विभाग द्वारा जारी चेतावनी के आलोक में स्वर्णरेखा एवं खरकई नदियों सहित जिले के विभिन्न जलाशयों का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर पहुंच गया है। संभावित आपदा की आशंका को देखते हुए जिला प्रशासन को सतर्कता अवलंबन करते देखा गया । उपायुक्त नितिश कुमार सिंह तथा पुलिस अधीक्षक श्री मुकेश लूणायत द्वारा आज आदित्यपुर, गम्हरिया, आरआईटी एवं गंजिया बराज सहित विभिन्न तटीय एवं डूब क्षेत्रों का स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उपायुक्त द्वारा संबंधित पदाधिकारियों को जनसुरक्षा, त्वरित आपदा प्रतिक्रिया एवं राहत व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक निर्देश दिया।

सभी अनुमंडल पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी, विशेष रूप से तटीय एवं डूब क्षेत्र वाले क्षेत्रों में जलाशयों से जल छोड़े जाने की संभावित स्थिति को देखते हुए निरंतर निगरानी एवं सतर्कता बनाए रखें इसी क्रम में सरायकेला नगर पंचायत अधिकारी शेखर सुमन जब की जिला परिवहन अधिकारी गिरिजा महतो ने विभिन्न जगह पर जाकर सुरक्षा का जायजा लेते देखे गये । भारी वर्षा के वाबजूद खरसावां क्षेत्र से एक बड़ी दुर्घटना की खबर आई है जिसमे चार किशोर बाढ़ में नदी नहाते हुए बुरी तरह घायल हो गये तथा उनकी मृत्यु हो गयी है।

निरीक्षण क्रम में उपायुक्त के साथ अपर नगर आयुक्त, आदित्यपुर रवि प्रकाश, उप नगर आयुक्त, आदित्यपुर श्रीमती पारुल सिंह, प्रखंड विकास पदाधिकारी गम्हरिया अभय द्विवेदी, अंचल अधिकारी गम्हरिया अरविन्द वेदीया एवं अन्य सम्बंधित पदाधिकारी उपस्थित रहे।

कैबिनेट में फेरबदल जल्द, सीएम ने मंत्रियों से मांगा रिपोर्ट कार्ड

मनोरंजन सासमल , वरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : पिछले एक साल में आपने कितनी कुशलता से काम किया है? आपके विभाग की सफलता दर का प्रतिशत क्या है? आपने कितने ज़िलों का दौरा किया और लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए व्यक्तिगत प्रयास किए? आपके मंत्री सोशल मीडिया - फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स - पर कितने सक्रिय हैं? आपने प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के सोशल मीडिया पोस्ट को कितने बार शेयर किया है?मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने अपने सहयोगी मंत्रियों से ऐसी रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा है। मंत्री निर्धारित प्रारूप में अपनी कार्य-निष्पादन रिपोर्ट देंगे। विभाग इससे संबंधित रिपोर्ट तैयार करेंगे। विभागीय मंत्री यह रिपोर्ट कार्ड मुख्यमंत्री के समक्ष प्रस्तुत करेंगे।

सत्ता के गलियारे में चर्चा है कि मुख्यमंत्री का ऐसा रुख मंत्रिमंडल फेरबदल की पूर्वसूचना है। यह भी चर्चा है कि कुछ अक्षम मंत्री मंत्रिमंडल विस्तार में बाधा बनेंगे। जुलाई के दूसरे सप्ताह में मुख्यमंत्री के नई दिल्ली दौरे से लौटने के बाद मुख्य सचिव ने विभागों को रिपोर्ट तैयार करने के निर्देश दिए हैं।

जानकारी के अनुसार, मंत्रिमंडल फेरबदल से पहले मंत्रियों के कार्यकलापों और कार्य-निष्पादन की स्पष्ट जानकारी प्राप्त करने के लिए मुख्यमंत्री ने यह कदम उठाया है। सभी विभाग वित्तीय वर्ष 2024-25 और वित्तीय वर्ष 2025-26 के पहले दो महीनों (अप्रैल-मई) में अपनी उपलब्धियों, चुनौतियों और भविष्य की योजनाओं से संबंधित पूरी रिपोर्ट देंगे। मंत्री विभागों में कितनी बजट राशि खर्च हुई है, इसकी भी जानकारी दी जाएगी। विभाग विभागीय निर्णयों के पर्यवेक्षण के साथ-साथ योजना के क्रियान्वयन को भी स्पष्ट रूप से दर्शाएंगे।

मई 2025 तक, मंत्रीगण अपने-अपने स्थानों और जिन परियोजनाओं का पर्यवेक्षण किया है, उनके स्थान, तिथि और प्रगति का लेखा-जोखा प्रस्तुत करेंगे। मोहन यह भी जाँचेंगे कि मंत्री ने जन शिकायतों के समाधान के प्रति कितनी गंभीरता दिखाई है। मंत्रीगण इस बारे में विस्तृत जानकारी देंगे कि विभाग को कितनी शिकायतें प्राप्त हुईं, कितनों का समाधान हुआ और कितनी लंबित हैं। मुख्यमंत्री शिकायत प्रकोष्ठ में मंत्री की उपस्थिति की गणना नहीं की जाएगी। मंत्रीगण फेसबुक, एक्स, इंस्टाग्राम पर औसतन प्रति माह कितने पोस्ट करते हैं। उसमें से वे यह भी बताएँगे कि कितने पोस्ट उनके विभाग, राज्य और राष्ट्रीय हितों से संबंधित हैं।

मंत्रीगण चालू वित्तीय वर्ष के लिए विभाग के कार्यों का रोडमैप प्रस्तुत करेंगे। विभाग द्वारा कौन-कौन से नवीन कार्यक्रम या योजनाएँ शुरू की जाएँगी, बजट राशि का सुनिश्चित व्यय और जनभागीदारी की स्पष्ट जानकारी होगी। चर्चा है कि दिल्ली में प्रधानमंत्री और वरिष्ठ भाजपा नेताओं से मुलाकात के बाद मुख्यमंत्री ने मंत्रिमंडल विस्तार के लिए रिपोर्ट कार्ड मांगा है। यह रिपोर्ट कार्ड ही मंत्रियों का भविष्य तय करेगा। पार्टी कार्यालय से लेकर लोक सेवा भवन तक चर्चा शुरू हो गई है कि जो सक्षम हैं, वे बने रहेंगे, जो अयोग्य हैं, उनकी छुट्टी होगी।

इस बीच, मुख्यमंत्री ने आईएएस स्तर पर भी बड़ा फेरबदल किया है, जैसे टास फेंटिला। मुख्यमंत्री और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मनमोहन सामल ने भी पहले मंत्रिमंडल विस्तार की जानकारी दी थी। मोहन के मंत्रिमंडल में छह मंत्री पद खाली हैं। दिल्ली के सूत्रों का कहना है कि हाल ही में नए अध्यक्ष के चुनाव के बाद, मुख्यमंत्री ने दिल्ली में आलाकमान से मंत्रिमंडल फेरबदल पर चर्चा की है। भाजपा ने जहां संगठन और सरकार के साथ कदम मिलाकर चलने का फैसला किया है, वहीं मंत्रियों की नियुक्ति में मुख्यमंत्री की पसंद और समर्थन भी बड़ी भूमिका निभाएगा। राजनीतिक प्रतिष्ठान यह मान रहा है कि मोहन मंत्री की कार्यकुशलता पर रिपोर्ट मांगेंगे।

सिंहभूम में मिला पुनः एक नया यूरेनियम भंडार: एस ०के० सतपथी, सीएमडी

15,598 टन का इस भंडार 50 वर्ष तक बढ़ायेगा खदान का जीवन काल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

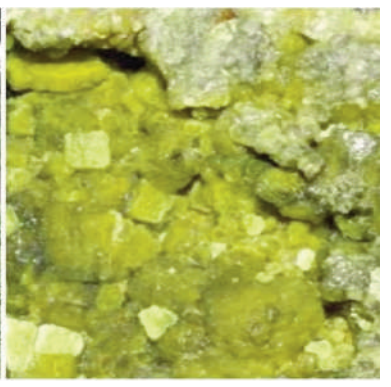

हल्दिपोखर (पूर्वी सिंहभूम), धातु , रत्न , उर्जा , अयस्क , गर्भा सिंहभूम की धरती के पूर्वी सिंहभूम जिले स्थित जादूगोड़ा खनन क्षेत्र में यूरेनियम का एक नया और समृद्ध भंडार मिलने की पुष्टि हुई है। भारत सरकार के परमाणु खनिज निदेशालय (एएमडी) और यूरेनियम कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड (यूसीआईएल) द्वारा साझा किए गए आंकड़ों और दस्तावेज़ों से यह बात स्पष्ट हुई है।

यह भंडार बंगला साईं मेचुआ क्षेत्र में है ।युसीआई एल के सीएमडी संतोष कुमार सतपथी ने इसकी ख़ोज की है, उसने कहां किया सबसे बड़ी उपलब्धि है युसीआई एल का । यह क्षेत्र लोगों के लिए रोजगार आर्थिक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण अवसर साबित हो रहा है ।यूरेनियम का यह भंडार लगभग 15,598 टन है। यह भंडार पहले से चालू जादूगोड़ा माइंस के विस्तार क्षेत्र में स्थित है। इससे खदान का जीवनकाल लगभग 50 वर्ष बढ़ने की उम्मीद है। 2020 से 2024 के बीच देश के चार राज्यों आंध्र प्रदेश, झारखंड, राजस्थान और तेलंगाना में कुल 93,700 टन नए यूरेनियम ऑक्साइड संसाधनों की खोज की गई है ।इसमें अकेले झारखंड में इसकी उपलब्धता 27,156 टन और आंध्र प्रदेश में 60,659 टन है। वर्तमान में भारत में कुल यूरेनियम संसाधन 4.25 लाख टन से अधिक हैं। इसे देश की दीर्घकालिक परमाणु ऊर्जा नीति को मजबूत करने के साथ-साथ ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है।

भारत और ब्रिटेन के बीच हुए फ्री ट्रेड एग्रीमेंट से महत्वपूर्ण दूरगामी वैश्विक प्रभाव पड़ेंगे

कमलेश पांडेय

हाल ही में भारत और ब्रिटेन के बीच हुआ मुक्त व्यापार समझौता (फ्री ट्रेड एग्रीमेंट) केंद्र में सत्तारूढ़ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार की एक बड़ी उपलब्धि है। इसके अंतरराष्ट्रीय मायने बेहद अहम हैं क्योंकि इसका फायदा दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं को मिलेगा। इस प्रकार भारत और ब्रिटेन के बीच हुए फ्री ट्रेड एग्रीमेंट से आने वाले वर्षों में दूरगामी वैश्विक असर भी देखने को मिलेंगे।

यह कहना गलत नहीं होगा कि अमेरिका प्रेरित भूमंडलीकरण और निजीकरण की नीतियों पर आधारित मुक्त वैश्विक अर्थव्यवस्था के दौरान पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह से कारोबारी संरक्षणवाद बढ़ा है, उसमें ऐसे व्यापार समझौतों की भूमिका और भी अहम हो जाती है।

देखा जाए तो भाजपा नीत एनडीए सरकार ने 2014 में केंद्रीय सत्ता में आने के बाद भारत ने मॉरिशस, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), ऑस्ट्रेलिया और ईएफटीए के साथ फ्री ट्रेड एग्रीमेंट किया है।

लिहाजा, भारत-ब्रिटेन में बीच हुआ एफटीए उसी की एक अगली कड़ी है जबकि यूरोप से हमारी बातचीत जारी है जिसे जल्द से जल्द अंजाम तक पहुंचाया जाना चाहिए। ऐसा इसलिए कि अर्थव्यवस्था (इकॉनमी) के मोर्चे पर आने वाली संभावित चुनौतियों से निपटने में ऐसी ही द्विपक्षीय व्यापारिक डील सहायक होती हैं।

आंकड़े बताते हैं कि भारत और ब्रिटेन के बीच पुराने व्यापारिक रिश्तों के बावजूद 2023-24 में केवल 31.34 बिलियन डॉलर का व्यापार हुआ था जो दोनों देशों के अर्थव्यवस्था के आकार को देखते हुए यह आंकड़ा बहुत कम है। लिहाजा माना जा रहा है कि ट्रेड डील से सालाना व्यापार 34 बिलियन डॉलर तक बढ़ जाएगा जबकि दोनों देश साल 2030 तक इसे 120 बिलियन डॉलर की ऊंचाई पर पहुंचाना चाहते हैं।

इससे साफ है कि अब दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ेगा और कारोबारी संतुलन लाने में भी आशातीत मदद मिलेगी। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आधुनिक भारत के निर्माण में इंग्लैंड का बहुत बड़ा योगदान है क्योंकि 1947 से पहले इंडिया पर उसी का शासन था। कॉमनवेल्थ देशों के सदस्य के नाते उससे भावनात्मक लगाव भी है।

देखा जाए तो इस समझौते को लेकर लंबे समय से भारत-ब्रिटेन के बीच फ्री ट्रेड डील की बातचीत चल रही थी। इसकी वजह से ही अमेरिका की टैरिफ सम्बन्धी बातचीत भी चल रही थी और हाल में ही इसमें भी तेजी आई है। इसके पीछे एक नीति है। क्योंकि डॉनल्ड ट्रंप की ट्रेड पॉलिसी ने पूरी दुनिया में आर्थिक व सैन्य अनिश्चितता बढ़ा दी है। ऐसे में इस तरह के द्विपक्षीय समझौते से दोनों देशों को इस अनिश्चितता को घटाने और व्यापार बढ़ाने में मदद मिलेगी।

भारत के मेक इन इंडिया के लिहाज से भी यह डील बेहद अहम है। इससे करीब 99 प्रतिशत निर्यात यानी यहां से ब्रिटेन जाने वाली चीजें पर टैरिफ से राहत मिलेगी। इससे वहां पर हमारा व्यापार बढ़ेगा। इसी तरह ब्रिटेन से आनी वाली चीजें भारत में सस्ती मिल सकेगी। लिहाजा इस डील से भारत के टेक्सटाइल्स, लेदर और इलेक्ट्रॉनिक्स को एक बड़ा फायदा होगा। इनसे हमारे मैन्युफैक्चरिंग उद्योग को भी बढ़ावा मिलेगा।

इस बीच, अगर भारत की अमेरिका के साथ अच्छी व्यापार डील हो जाती है तो उससे भी विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने की ओर हमारे कदम आगे बढ़ेंगे हालांकि, भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति, पिछले एक दशक के आशातीत आर्थिक विकास आदि से अमेरिका चिढ़ा हुआ है। उसकी नीति रही है कि अमेरिकी कम्पनियां चीन में सस्ता माल बनाएंगी और उसे भारत में खपायेंगी लेकिन मनमोहन सरकार की इस राष्ट्रविरोधी नीति को नरेंद्र मोदी सरकार ने पलट दिया है और मेक इन इंडिया, मेक फ्रॉर द वर्ल्ड जैसी ठोस राष्ट्रवादी नीतियों को बढ़ावा दिया है।

भारत से अमेरिका की चिढ़ की एक मौलिक वजह यह भी है कि वह भारत को रूस से दूर करके चीन से लड़ाना चाहता है, भारत के पड़ोसी देशों को चीन-पाकिस्तान की मदद से इंडिया से उलझाना चाहता है ताकि अरब देशों की तरह भारतीय उपमहाद्वीप के देशों में भी उसका दबदबा बढ़े और हथियार खपे लेकिन वसुधैव कुटुम्बकम का भाव रखने वाले भारत के साथ अमेरिका की एक नहीं चली। इसलिए वह आतंकवादी उत्पादन करने की फैक्ट्री बन चुके पाकिस्तान की शरण में फिर चला गया जहां चीन से उसे कड़ी टक्कर मिल रही है।

चूंकि अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर अमेरिका-चीन के बीच आर्थिक व सैन्य होड़ मची हुई है, इसलिए भारत की कोशिश है कि इस पचड़े में न पड़ते हुए अपना बहुमुखी विकास किया जाए। चूंकि इस दिशा में भारत के पुराने व भरोसेमंद देश रूस की भरपूर तकनीकी मदद भारत को मिल रही है। इसलिए अमेरिका-यूरोप भारत पर दबाव बढ़ा रहे हैं कि वह रूस से अपने रिश्ते कम करे और पश्चिमी देशों से सहयोग बढ़ाए, जो आजतक किसी के हुए ही नहीं और प्रथम-द्वितीय विश्वयुद्ध की वजह बने।

आज जिस तरह से अमेरिका-यूरोपीय देश रूस के पड़ोसी यूक्रेन की मदद कर रहे हैं, इससे उनकी गलत मंशा को समझा जा सकता है। इजरायल को अरब देशों के साथ भिड़ाए रखना, पाकिस्तान को भारत से भिड़ाए रखना, चीन को ताइवान से भिड़ाए रखना जैसी उनकी कई क्षुद्र नीतियां हैं जिससे अंतरराष्ट्रीय मानवता भी कभी-कभार संकट में आ जाती है।

यही वजह है कि रूस का मित्र देश चीन अपनी "वन बेल्ट, वन रूट" जैसी अग्रगामी व्यापारिक नीतियों के माध्यम से अमेरिका को एशिया व यूरोप से बाहर धकेलना चाहता है जबकि अमेरिका अपने सदाबहार मित्र यूरोपीय देशों के सहयोग से भारत को चीन के खिलाफ आगे बढ़ाना चाहता है लेकिन भारत-रूस की आपसी सूझबूझ से अमेरिकी दाल यहां पर नहीं गल पा रही है। यह ठीक है कि चीन, भारत के साथ दोगली चालें चलते रहता है लेकिन भारत अपने दोस्त रूस के हितों के दृष्टिगत चीन को ज्यादा क्षति नहीं पहुंचाता बल्कि सिर्फ आत्मरक्षा के उपाय करते रहता है। यही बात अमेरिका व उसके पिछलग्गू देशों को अखड़ती है। अपनी इसी चिढ़ के चलते अमेरिका अब भारत के खिलाफ खुलेआम चाल चलता है, जबकि भारत दुनिया की तीसरी बड़ी सैन्य शक्ति और चौथी बड़ी आर्थिक शक्ति बन चुका है।

उम्मीद है कि शीघ्र ही भारत, जर्मनी को पछाड़ कर दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बन जाएगा और ग्लोबल साउथ के सहयोग से अमेरिका-चीन दोनों की जनविरोधी नीतियों को कड़ी चुनौती देगा।

आपको पता होना चाहिए कि अमेरिका जहां आतंकवादी पैदा करता-करवाता है, वहीं चीन नक्सली पैदा करता-करवाता है, जो इनके वैश्विक एजेंडे की पूर्ति के लिए पूरी दुनिया में उधम मचाते रहते हैं। अरब देश भी इनकी मदद करते हैं पारम्परिक प्रतिस्पर्धा में। भारत इसे बखूबी समझता है और मजबूत पलटवार भी करता रहता है। इसलिए मानवीयता को वैश्विक क्षितिज पर पुनर्स्थापित करने के लिए भी भारत को आर्थिक व सैन्य रूप से काफी मजबूत होना पड़ेगा अन्यथा विकसित देश सबको परस्पर लड़ाकर मार डालेंगे।

कमलेश पांडेय

मिसाइल मैन एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम की पुण्यतिथि 27 जुलाई पर विशेष...

डॉ. कलाम : जनता के राष्ट्रपति,बेमिसाल वैज्ञानिक

सपने वे नहीं होते, जो आपको रात में सोते समय नींद में आए बल्कि सपने वे होते हैं, जो रात में सोने ही न दें।' यह कथन है महान वैज्ञानिक एवं देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का। उन्हें मिसाइल मैन, भारतीय अंतरिक्ष प्रोग्राम का जनक तथा पीपुल्स प्रेसिडेंट भी कहा जाता है। यही नहीं विद्यार्थियों के प्रति विशेष प्रेम को देखते हुए देश और दुनिया में उनके जन्मदिन को 'विद्यार्थी दिवस' के रूप में भी मनाया जाता है। राष्ट्र की सेवा एवं ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए डॉ. अब्दुल कलाम को वर्ष 1981 में पद्म भूषण, वर्ष 1990 में पद्म विभूषण तथा वर्ष 1997 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। डॉ. कलाम ने देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम को गति दी। इसके साथ ही मिसाइल तकनीक में विकास के नए आयाम गढ़े जिससे देश सुरक्षा और अंतरिक्ष के मामले में आत्मनिर्भर होने की राह पर चल पड़ा। भारत के 11वें राष्ट्रपति और वैज्ञानिक रहे एपीजे अब्दुल कलाम का आज पुण्यतिथि है। डॉ. कलाम का 27 जुलाई 2015 को आईआईएम शिलांग में लेक्चर देते समय दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया था।

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम के धनुषकोटि में एक मध्यमवर्ग मुस्लिम अंसार परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम जैनुलाब्दीन और मां का नाम आशियम्मा था। उनका बचपन काफी संघर्षों में बीता और उन्हें आर्थिक परेशानियों को दूर करने के लिए अखबार भी बांटना पड़ा। उनकी बचपन की पढ़ाई रामेश्वर में ही हुई। इसके बाद उन्होंने 1954 में त्रिची के सेंट जोसेफ कॉलेज से साइंस की डिग्री हासिल की। वर्ष 1957 में उन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। डॉ. कलाम ने भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में भी काम किया। वह रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार भी रहे। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के संबंध में प्रचलित मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक डॉ. कलाम बचपन में पायलट बनना चाहते थे लेकिन ऐसा नहीं हो सका लेकिन डॉ. कलाम ने शुद्ध राजनीति के जरिए राष्ट्रपति पद को शोभित किया और इसके बाद आमजन के लिए भी राष्ट्रपति भवन के दरवाजे खुल गए।

अपने जीवन काल में डॉ. कलाम एयरोस्पेस टेक्नोलॉजी में आए, तो इसके पीछे उनके 5वीं कक्षा के अध्यापक सुब्रह्मण्यम अय्यर की प्रेरणा थी। अपने अध्यापक की बातों ने उन्हें जीवन के लिए ना केवल एक मंजिल,बल्कि एक उद्देश्य भी प्रदान किया। अभियांत्रिकी की शिक्षा के लिए उन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में दाखिला लिया। वहां इन्होंने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में अध्ययन किया। और इस प्रकार डॉ. कलाम वैज्ञानिक बने। वर्ष1958 में डॉ. कलाम ने रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) में एक वैज्ञानिक के रूप में अपना करियर शुरू किया। इसके बाद में डॉ.कलाम भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में काम किया। जहां,उन्होंने भारत के पहले उपग्रह प्रक्षेपण यान (एसएलवी-III) के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिससे जुलाई 1982 में रोहिणी उपग्रह सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया था। कलाम ने स्वदेशी लक्ष्य भेदी नियंत्रित प्रक्षेपास्त्र (गाइडेड मिसाइल्स) को डिजाइन किया।

डॉ. कलाम ने अग्नि एवं पृथ्वी जैसे प्रक्षेपास्त्रों को स्वदेशी तकनीक से बनाया था। यही नहीं डॉ. कलाम जुलाई 1992 से दिसम्बर 1999 तक रक्षा मंत्री के विज्ञान सलाहकार तथा सुरक्षा शोध और विकास विभाग के सचिव थे। डॉ. कलाम को भारत के मिसाइल कार्यक्रम के विकास में उनके योगदान के लिए ₹मिसाइल मैन₹ के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने 1998 में पोखरण-द्वितीय परमाणु परीक्षणों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिससे भारत एक परमाणु शक्ति संपन्न देश बना। देश को मिसाइल तकनीक देने तथा विज्ञान के क्षेत्र में भारत को प्रगति के रास्ते पर पहुंचने वाले डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम 18 जुलाई 2002 को कलाम भारत के 11वें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। इन्हें भारतीय जनता पार्टी समर्थित एनडीए घटक दलों ने अपना उम्मीदवार बनाया था जिसका वामदलों के अलावा समस्त दलों ने समर्थन किया था। इसी क्रम में 25 जुलाई 2002 को उन्होंने संसद भवन के अशोक कक्ष में राष्ट्रपति पद की शपथ ली थी। 5 साल तक देश के राष्ट्रपति के पद को सुशोभित करने वाले डॉकलाम का कार्यकाल 25 जुलाई 2007 को उनका कार्यकाल समाप्त हो गया था।

डॉ. कलाम ने वैज्ञानिक रहते हुए जितनी ख्याति हासिल की, उससे कहीं ज्यादा राष्ट्रपति रहते हुए मशहूर हुए। उन्होंने राष्ट्रपति भवन के दरवाजे आम लोगों के लिए खुलवाए। अपने 5 साल के कार्यकाल में डॉ. कलाम ने महज 2 बार ही छुट्टी ली थी। ज्ञान-विज्ञान और पठन- पाठन के प्रति उनका संपूर्ण जीवन समर्पित रहा। यह भी एक सुखद संयोग ही रहा कि अपने निधन के दिन भी वे देश की भावी पीढ़ी को ज्ञान-विज्ञान का संदेश देते हुए इस दुनिया से रुखसत हुए। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का आज ही के दिन 27 जुलाई 2015 को शिलांग के आईआईएम में एक व्याख्यान देने के दौरान गिरने के बाद निधन हो गया। उनकी पुस्तकें इंडिया 2020, विंग्स ऑफ फायर, इग्नाइटेड माइंड, माय जर्नी आदि काफी प्रेरक हैं।

जीवन भर सादगी के ₹प्रतीक₹ ही रहे डॉ. कलाम जब राष्ट्रपति भवन से विदा हुए तो उनके पास सिर्फ सूटकेस था, जिसमें उनके कुल जमा दो जोड़ी कपड़े और कुछ किताबें थी। इस दुनिया से जाने के बाद भी डॉ.कलाम वैज्ञानिकों और युवाओं के लिए प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं। इसके साथ ही उन्होंने राजनीतिक शुचिता की एक ऐसी लकीर खींच दी है जो अन्य राजनेताओं के लिए एक बेमिसाल ₹नजीर₹ है।

प्रदीप कुमार वर्मा

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**